प्रकाशक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया।
मालिक, दिगम्बर जैन पुस्तकालय,
चन्दावाड़ी—सूरत।

मुद्रक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
'जैनविजय' प्रि० प्रेस, खपाटिया चकला,—सूरत।

उपोद्घात ।

इस पुस्तकके लिखनेका उद्यम सेठ वैजनाथ सरावगी मालिक फर्म सेठ जोखीराम मूंगराज नं० १७३ हरिशनरोड कलकत्ताकी प्रेरणासे हुआ है। इसके पहले बंगाल, विहार, उड़ीसा, संयुक्तप्रांत व बम्बई प्रांतके तीन स्मारक प्रगट हो चुके हैं। इस पुस्तकमें मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजपूतानाके जैन स्मारक जो कुछ सर्कारी रिपोर्टसे मालूम हुए हैं उनका संग्रह कियागया है। मध्य-प्रदेशके हरएक जिलेका वर्णन जाननेके लिये पुस्तकोंकी सहायता नागपुर म्यूनियमके नायब क्यूरेटर मि० इ० ए० डिरोबू एफ० झेड० एस० तथा मि० एम० ए० सुबूर एम० एन० एस० क्वा-इन एक्सपर्टने दी जिनके हम अतिशय आभारी हैं। मध्यभारत और राजपूतानाके सम्बन्धमें अनेक पुस्तकोंके देखनेकी सहायता रायबहादुर पंडित गौरीशंकर ओझा क्यूरेटर म्यूजियम अजमेरने दी जिनके भी हम अति आभारी हैं। Imperial Gazetteer इम्पीरियल गजेटियर आदि पुस्तकोंकी सहायता व एपिग्रेफिका आदि पुस्तकोंके देखनेमें मदद इम्पीरियल लाइब्रेरी कलकत्ता तथा बम्बई रायल एसियाटिक सोसायटी लाइब्रेरी बम्बईसे प्राप्त हुई है जिनके भी हम अति कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तकके पढ़नेसे ज्ञात होगा कि जैनियोंके मंदिर व उनमें स्थापित बड़ी २ मूर्तियें उन स्थानोंमें जैनियोंके न रहनेसे अब किस अविनयकी दशामें हैं।

हमें विदित होता है कि इन तीनों जिलोंमें सर्कारद्वारा बहुत कम खोज हुई है। यदि विशेष खोज की जावे तो जैनियोंके और भी स्मारक मिल सक्ते हैं। जो कुछ मिले हैं उनसे यह तो स्पष्ट है कि जैनियोंका प्रभुत्व बहुत अधिक व्यापक था व अनेक राजाओंने जैनधर्मकी भक्तिसे अपने आत्माको पवित्र किया था। जैनियोंका कर्तव्य है कि अपने स्मारकोंको जानकर उनकी रक्षाका उपाय करें। इस पुस्तकके प्रकाश होनेमें द्रव्यकी खास सहायता रायबहादुर साहू जगमंधरदासजी रईस नजीबाबादने दी है इसके लिये हम उनके आभारी हैं।

सजोत
१०–६–२६ } जैनधर्मका प्रेमी–ब्र० सीतलप्रसाद।

भूमिका।

इस पुस्तकमें ब्रह्मचारीजीने मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजपूताना इन तीन प्रान्तोंके जैन स्मारकोंका परिचय दिया है।

मध्यप्रदेश।

मध्यप्रदेश दो भागोंमें बटा हुआ है:—(१) मध्यप्रान्त खास जिसमें १८ जिले हैं और (२) बरार जिसमें चार जिले हैं। मध्यप्रांत खासको गोंडवाना भी कहते हैं कारणकि एक तो यहां गोंडोंकी संख्या बहुत है, दूसरे मुसल्मानी समयके लगभग यहां अनेक गोंड घरानोंका राज्य रहा है। यह प्रान्त संस्कृतिमें बहुत पिछड़ा हुआ गिना जाता है, और लोगोंका ख्याल है कि इस प्रान्तका प्राचीन इतिहास कुछ महत्वपूर्ण नहीं रहा, पर यह लोगोंकी भारी भूल है। यथार्थमें भारतके प्राचीन इतिहासमें इस प्रान्तका बहुत ऊंचा स्थान है। प्राचीन ग्रंथों और शिलालेखोंसे सिद्ध होता है कि यह प्रान्त कोशल देशका दक्षिणी भाग था। इसीसे यह दक्षिणकोशल कहा गया है। इसके ऊपर उत्तरकोशल था। दक्षिणकोशलका विस्तार उत्तरकोशलसे अधिक होनेके कारण उसे महाकोशल भी कहते थे। कलचुरि नरेशोंके शिलालेखोंमें इसका यही नाम पाया जाता है। इस प्रान्तका पौराणिक नाम दण्डकारण्य है जो विन्ध्य और सतपुड़ाके रमणीक वनस्थलोंसे व्याप्त है। रामायण—कथा—पुरुष रामचन्द्रने अपने प्रवासके चौदह वर्ष व्यतीत करनेके लिये इसी भूभागको चुना था। उस समय यहां अनेक ऋषि मुनियोंके आश्रम थे और वानरवंशी राजाओंका राज्य था। वाल्मीकि

रामायणमें इन राजाओंको पुछल्लेबन्दर ही कहा है, पर जैन पुराणानुसार ये राजा बन्दर नहीं थे, किन्तु उनकी ध्वजाओंपर बानरका चिन्ह होनेसे वे बानरवंशी कहलाते थे। उनकी सभ्यता बढ़ी चढ़ी थी और वे राजनीति, युद्धनीति आदिमें कुशल थे। वे जैन धर्मका पालन करते थे। इन्ही राजाओंकी सहायतासे रामचन्द्र रावणको परास्त करनेमें सफलीभूत होसके थे।

कुछ खोजों और अनुमानोंपरसे आजकल कुछ विद्वानोंका यह भी मत है कि रावणका राज्य इसी प्रान्तके अन्तर्गत था। इसका समर्थन इस प्रान्तसे सम्बन्ध रखनेवाली एक पौराणिक कथासे भी होता है। महाभारत और विष्णुपुराणमें यहांके एक बड़े योगी नरेशका उल्लेख है। इनका नाम था कार्तवीर्य व सहस्रार्जुन। इन्होंने अनेक जप, तप और यज्ञ करके अनेक ऋद्धियां सिद्धियां प्राप्त की थीं। इनकी राजधानी नर्मदा नदीके तटपर माहिष्मती (मंडला) थी। एकबार यह राजा अपनी स्त्रियोंके साथ नदीमें जलक्रीड़ा कर रहा था। कल्लोलमें उसने अपनी भुजाओंसे नर्मदा नदीका प्रवाह रोक दिया जिससे नदीकी धारा ठिलकर अन्यत्रसे बह निकली। प्रवाहसे नीचेकी ओर एक स्थानपर रावण शिवपूजन कर रहा था। नदीकी धारा उच्छृंखल होकर बह निकलनेसे रावणकी सब पुजापत्री बह ग । इसपर रावण बहुत क्रोधित हुआ और उसने कार्तवीर्यपर चढ़ाई करदी, पर कार्तवीर्यने उसे परास्तकर कैद कर लिया और बहुत समयतक अपने बंदीगृहमें रक्खा। इसका उल्लेख कालिदास कविने अपने रघुवंश काव्यमें इस प्रकार किया है:—

ज्याबंधनिष्पन्दभुजेन यस्य विनिश्वसद्वक्रपरम्परेण ।
कारागृहे निर्जितवासवेन लंकेश्वरेणोषितमाप्रसादात् ॥

अर्थात् जिस लंकेश्वरने इन्द्रको भी पराजित किया था वही कार्तवीर्यके कारागारमे मौर्वीसे भुजाओंमें बंधा हुआ और अपने अनेक मुखोंसे बड़ी२ सांसें लेता हुआ कार्तवीर्यकी प्रसन्नता होनेके समयतक रहा ।

ऐतिहासिक कालमें इस प्रांतका सबसे प्राचीन संबन्ध मौर्य साम्राज्यसे था । जबलपूरके पास रूपनाथमें जो अशोक सम्राट्का लेख पाया गया है उससे सिद्ध होता है कि आजसे लगभग अढाई हजार वर्ष पूर्व यह प्रांत मौर्यसाम्राज्यके अंतर्गत था। चंद्रगुप्त मौर्य और भद्रबाहुस्वामी उज्जैनसे निकलकर इसी प्रांतमेंसे होते हुए दक्षिणको गये होंगे। उस समय यहां जैनधर्मका खूब प्रचार हुआ होगा । विक्रमकी चौथी शताब्दिसे लगाकर आगेके अनेक राज-वंशोंके यहां शिलालेख, ताम्रपत्र आदि मिले हैं । डॉ० विन्सेन्ट स्मिथका अनुमान है कि समुद्रगुप्त अपनी दिग्विजयके समय सागर, जबलपूर और छत्तीसगढ़मेंसे होकर दक्षिणकी ओर बढ़े थे । उस समय चांदा जिलेमें बौद्ध राजाओंका राज्य था । पांचवी छटवीं शताब्दिके दो राजवंश उल्लेखनीय हैं क्योंकि ये दोनों ही राजवंश भारतके इतिहासमें अपने ढंगके विलक्षण ही थे । इनमेंसे एक परिव्राजक महाराजा कहलाते थे । जिनका राज्य जबलपूरके आसपास था। दूसरे राजर्षि राज्यकुल नरेश थे जिनका राज्य छत्तीसगढ़में था । इसी समय जबलपूरके पास उच्छकल्पके महाराजा भी राज्य करते थे । इसकी राजधानी आधुनिक उच्छ-

हरा थी। मध्यप्रांतका सबसे बड़ा राजवंश कलचूरि वंश था जिसका प्राबल्य आठवीं नौवीं शताब्दिमें बहुत बढ़ा। शिला-लेखोंमें इस वंशकी उत्पत्ति उपर्युक्त सहस्रार्जुन व कार्तवीर्यसे बतलाई गई है। एक समय कलचूरि साम्राज्य बंगालसे गुजरात और बनारससे कर्नाटक तक फैल गया था, पर यह साम्राज्य बहुत समयतक स्थायी नहीं रह सका। क्रमशः इस वंशकी दो शाखायें होगईं। एक शाखाकी राजधानी जबलपूरके पास त्रिपुरी थी जिसे चेदि भी कहते हैं और दूसरीकी विलासपुर जिलेके रतनपुरमें। यद्यपि कलचूरि नरेशोंका राज्य बहुत समय तक बना रहा, पर तीन चार शताब्दियोंके पश्चात् उसका जोर बहुत घट गया।

कलचूरी नरेश प्रारम्भमें जैनधर्मके पोषक थे। पांचवीं छटवीं शताब्दिके अनेक पाण्ड्य और पल्लव शिलालेखोंमें उल्लेख है कि 'कलभ्र' लोगोंने तामिल देशपर चढ़ाई की और चोल, चेर, और पांड्य राजाओंको परास्तकर अपना राज्य जमाया। प्रॉफेसर रामस्वामी अय्यन्गारने वेल्विकुडिके ताम्रपत्र तथा तामिल भाषाके 'पेरियपुराणम्' परसे सिद्ध किया है कि ये कलभ्रवंशी प्रतापी राजा जैनधर्मके पक्के अनुयायी थे (Studies in South Indian Jainizm P. 53–56) इनके तामिल देशमें पहुंचनेसे जैनधर्मकी वहां बड़ी उन्नति हुई। इनके एक राजाका नाम या उपनाम 'कल्वरकल्वम्' था। इन नरेशोंके वंशज अब भी विद्यमान हैं और वे कलार कहलाते हैं। श्रीयुक्त अय्यन्गारजीका अनुमान है कि ये 'कलभ्र' आर्य नहीं द्राविण जातिके होंगे, पर अधिक सम्भव यह प्रतीत होता है कि ये

'कलभ्र' कलचुरिवंशकी ही शाखा होंगे। कलचुरि संवत् सन् २४८ ईस्वीसे प्रारम्भ होता है। अतएव पांचवीं शताब्दिमें इनका दक्षिण पर चढाई करना असम्भव नहीं है। अय्यन्गारजीका अनुमान है कि सम्भवतः दक्षिणके जैनियोंने ही शैवराजाओंसे त्रासित होकर कलभ्रराजाको दक्षिणपर चढाई करनेके लिये आमन्त्रित किया था। इस विषयपर अभी बहुत थोडा प्रकाश पड़ा है। इसकी खोज होनेकी अत्यन्त आवश्यक्ता है। ईस्वी पूर्व दूसरी शताब्दिका जो उदयगिरिसे कलिंगके जैन राजा खारवेलका लेख मिला है उसमें खारवेलके साथ 'चेतराजवसवधन' विशेषण पाया जाता है। इसकी संस्कृत छाया 'चैत्रराजवंशवर्धन' की जाती है। पर वह 'चेदिराजवंशवर्धन' भी हो सक्ता है जिससे खारवेलका कलचुरिवंशीय होना सिद्ध होता है। अन्य कितने ही कलचुरि नरेशोंने अपनेको 'त्रिकलिङ्गाधिपति' कहा है। आश्चर्य नहीं जो खारवेलका कलचुरिवंशसे सम्बंध हो। प्रॉफेसर शेषगिरि-रावका भी ऐसा ही अनुमान है।

(South Indian Jainizm P. 24)

मध्यप्रान्तके कलचुरि नरेश जैनधर्मके पोषक थे 'इसका एक प्रमाण यह भी है कि उनका राष्ट्रकूट नरेशोंसे घनिष्ट सम्बन्ध था और राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मके बड़े उपासक थे। इन दोनों राज-वंशोंमें अनेक विवाह सम्बन्ध भी हुए थे। उदाहरणार्थ कृष्णराज (द्वि०) ने कोकल्लदेव (चेदिनरेश) की राजकुमारीसे विवाह किया था। कोकल्लके पुत्र शंकरगणकी दो राजकुमारियोंको कृष्णराजके पुत्र जगत्तुंगने विवाहा था। इसी प्रकार इन्द्रराज और अमोघवर्षने

भी कलचुरि राजकुमारियोंसे विवाह किया था। एक कलचुरि नरेशके राष्ट्रकूट राजकुमारीको विवाहनेका भी उल्लेख है। कलचुरि राजधानी त्रिपुरी और रतनपुरमें अब भी अनेक प्राचीन जैन मूर्तियां और खण्डहर विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त कलचुरिवंशके बड़े प्रतापी नरेश विज्जल (विजयसिंहदेव सन् ११८०) के पक्के जैन मतावलम्बी होनेके स्पष्ट प्रमाण हैं, पर इसी राजाके समयसे कलचुरि राज दरबारमें जेनियोंका जोर घट गया और शैवधर्मका प्रावल्य बढ़ा। इसका विवरण " वासवपुराण " और 'विज्जलराज चरित' में पाया जाता है। वासव एक शैवधर्मका प्रचारक था, इसीने कलचुरि राजदरबारमें जैनधर्मकी जड़ उखाड़ी और विज्जल नरेशका घात भी कराया। विज्जलके राज्यमें किस प्रकार जैनधर्मका ह्रास हुआ और शैवधर्मका प्रभाव बढा इसकी एक कथा महामण्डलेश्वर कामदेवके एक लेखमें पाई जाती है। इसका सर रामकृष्ण गोपाल भण्डारकरने उल्लेख किया है। वह कथा संक्षेपमें इस प्रकार है:—

एक समय शिव और पार्वती अपनी जमात सहित कैलाश पर्वतपर क्रीड़ा कर रहे थे। उसी समय नारद मुनिने आकर यह संवाद सुनाया कि संसारमें जैन और बौद्ध धर्मोंकी बहुत शक्ति बढ़ती जारही है। इसपर शिवने अपनी जमातके 'वीरभद्र' को आज्ञा दी कि तुम जाकर संसारमें मनुष्यजन्म ग्रहण करो और इन धर्मोंकी जड़ उखाड़ो। तदनुसार वीरभद्रने पुरुषोत्तमपल्लके यहां जन्म लिया। बालकका नाम 'राम' रक्खा गया पर पीछे शिवमें बड़ी भक्ति होनेसे उसका नाम 'एकान्त रामय्य' पड़ गया। इसने

शैवधर्मका प्रचार करना प्रारम्भ किया तब जैनियोंने उसे अपने देवकी कुछ प्रभुता सिद्ध करनेकी चुनौती दी। जैनियोंने यह वचन दिया कि यदि रामय्य अपना कटा हुआ सिर शिवकी सहायतासे पुनः प्राप्त करले तो वे अपने सब मंदिरों आदिको छोड़कर देशसे बाहर चले जावेंगे। रामय्यने इसे स्वीकार किया, उसका सिर काट डाला गया, पर आश्चर्य दूसरे ही दिन वह फिर जीताजागता जैनियोंके सन्मुख आ खड़ा हुआ। जैनियोंने इसपर भी उसका विश्वास नहीं किया और वे अपना वचन पूरा करनेके लिये तैयार नहीं हुए। रामय्य क्रोधित होकर जैन मंदिरोंको विध्वंस करने लगा, इसका समाचार विज्जल नरेशके पास पहुंचा। वे रामय्यपर बहुत कुपित हुए, पर रामय्यने वही अद्भुत चमत्कार उनके साम्हने भी कर दिखाया तब तो राजाको रामय्यके देवमें विश्वास हो गया। और उन्होंने जैनियोंको अपने दरबारसे अलगकर उन्हें शैवोंके साथ झगड़ा न करनेकी सख्त ताकीद करदी।

यह मध्यप्रांतमें जैन धर्मके ह्रास और शैवधर्मकी वृद्धिका हिंदू पुराणोंके अनुसार वृत्तान्त है। इसमें सत्य तो जो कुछ हो, पर इसमें संदेह नहीं कि इस समयसे यहां और दक्षिण भारतमें जैनधर्मको शैवधर्मने जर्जरित कर डाला। आगे मुसलमानी कालमें भी इस धर्मकी भारी क्षति हुई और उसे उन्नतिका अवसर नहीं मिल सका।

जैनधर्म राजाश्रय विहीन होकर क्षीण अवश्य होगया, पर उसका सर्वथा लोप न हो सका। स्वयं कलचुरिवंशमें जैनधर्मका प्रभाव बना ही रहा। मध्यप्रांतमें जो जैन कलवार सहस्रोंकी संख्यामें

पाये जाते हैं वे इन्हीं कलचुरियोंकी सन्तान हैं। अनेक भारी मंदिर जो आजतक विद्यमान हैं वे प्रायः इसी गिरती के समयमें निर्माण हुए हैं। जैनियोंके मुख्य तीर्थ इस प्रांतमें बैतूल जिलेमें मुक्तागिरि, निमाड़ जिलेमें सिद्धवरकूट और दमोह जिलेमें कुंडलपुर हैं। मुक्तागिरि, अपरनाम मेढागिरि और सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र हैं जहांसे प्राचीन कालमें करोड़ों मुनियोंने मोक्षपद प्राप्त किया है। मुक्तागिरिमें कुल अड़तालीस मंदिर हैं जिनमें मूर्तियोंपर विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिसे लगाकर सत्तरहवीं शताब्दि तकके उल्लेख हैं। इन मंदिरोंमें पांच बहुत प्राचीन प्रतीत होते हैं और सम्भवतः बारहवीं तेरहवीं शताब्दिके हैं। सिद्धवरकूटके प्राचीन मंदिर ध्वंस अवस्थामें हैं। कुछ मूर्तियोंपर पन्द्रहवीं शताब्दिके तिथि—उल्लेख हैं। कुण्डलपुरके मंदिरोंकी संख्या ९२ है। मुख्य मंदिरमें महावीरस्वामीकी बृहत् मूर्ति है और १७हवीं शताब्दिका शिलालेख है। मंदिरोंसे अलंकृत पर्वत कुंडलाकार है इसीसे इसका नाम कुण्डलपुर पड़ा है, पर कई भाइयोंको इससे महावीरस्वामीकी जन्मनगरी कुन्दनपुरका भ्रम होता है। इन तीनों क्षेत्रोंका प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा ही चित्तग्राही और प्रभावोत्पादक है।

बरार।

इसका प्राचीन नाम 'विदर्भ' पाया जाता है। पं० तारानाथ तर्कवाचस्पतिने इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की है:—विगताः दर्भाः कुशाः यतः' अर्थात् जहां दर्भ न ऊगे, पर यह निरी व्याकरणकी खींचातानी ही प्रतीत होती है। यह भी दन्तकथा है कि यहां विदर्भ नामका एक राजा होगया है इसीसे इसका

नाम विदर्भ देश पड़ा, इसका समर्थन 'भागवतपुराण' से भी होता है। भागवतपुराणके पांचवे स्कन्धमें ऋषभदेव महाराजका वर्णन है। वहां कहा गया है कि ऋषभदेवने अपने कुल-राज्यके नव हिस्सेकर उन्हें अपने नव पुत्रोंमें वितरण कर दिये। कुश नामके पुत्रको जो भाग मिला वह कुशावर्त कहलाया। ब्रह्मको जो देश मिला उसका नाम ब्रह्मावर्त पड़ा, इसी प्रकार विदर्भ नामक कुमारको जो प्रदेश मिला वह विदर्भ देश कहलाया। जैन पुराणोंमें ऐसा कथन नहीं है। आजकल इस देशको वह्राड कहते हैं जो विदर्भका ही अपभ्रंश है, पर वह्राडकी व्युत्पत्तिके विषयमें भी अनेक दन्तकथायें, अनुमान और तर्क लगाये जाते हैं। कोई कहता है वरयात्रा व 'वरहाट' व 'वरात' से वह्राड बना है। इसका सम्बंध कृष्ण और रुक्मणीके विवाहकी वरातसे बतलाया जाता है। कोई वर्धाहार व वर्धातट—अर्थात् वर्धाके पासका—देशसे वह्राडरूप सिद्ध करता है। कोई विराट व वैराट राजासे वह्राडका सम्बन्ध स्थापित करता है इत्यादि, पर ये सब निरी कल्पनायें ही प्रतीत होती हैं।

विदर्भ देशका उल्लेख रामायण और महाभारतमें अनेक जगह पाया जाता है। अगस्त्य ऋषिकी पत्नी लोपामुद्रा, इक्ष्वाकुवंशके राजा सगरकी रानी केशिनी, अजकी रानी इन्दुमती, नलराजाकी रानी दमयन्ती, कृष्णकी रानी रुक्मिणी, प्रद्युम्नकी रानी शुभांगी, अनिरुद्धकी रानी रुक्मावती ये सब विदर्भ देशकी ही राजकुमारियां थीं। रुक्मिणी भीष्मक राजाकी कन्या व रुक्मीकी बहिन थीं। भीष्मककी राजधानी कौण्डिन्यपुर थी जिसका आधुनिक नाम

कुंडिनपुर है। यह अमरावतीसे लगभग वीस मील है। कहा जाता है कि आधुनिक अमरावती उस समयमें कौण्डिन्यपुरके ही अंतर्गत थी। अमरावतीमें जो अम्बकादेवीकी स्थापना है वह कौण्डिन्यपुरकी अधिष्ठात्रीदेवी कही जाती है। यहींपर रुक्मिणी अम्बिकादेवीकी पूजा करने आई थीं और यहींसे कृष्णने उसका अपहरण किया था। रुक्मिणीका भाई रुक्मी जब कृष्णसे पराजित हो गया और रुक्मिणीको वापिस नहीं लेसका तब वह वहुत लज्जित हुआ। लज्जाके मारे उसने कौण्डिन्यपुरको जाना ही उचित नहीं समझा। उसने एक दूसरे ही स्थानपर अपनी राजधानी बनाई। इसका नाम उसने भोजकट (भोजकटक) रक्खा। इस स्थानका नाम आजकल भातकुली है जो अमरावतीसे लगभग दस मील है। यहां जैनियोंका बड़ा प्राचीन मंदिर है और वार्षिक मेला लगता है।

विक्रमकी ८ वीं ९ वींतथा १० वीं शताब्दिमें विदर्भ क्रमशः चालुक्य और राष्ट्रकूट राजाओंके राज्यमें सम्मिलित था। ये दोनों ही राजवंश जैन धर्मके पोषक थे और इसलिये उक्त शताब्दियोंमें यहां जैन धर्मका खूब प्रचार रहा। कहा जाता है कि मुसलमानोंके आगमनसे प्रथम दशवीं शताब्दिके लगभग वह्राडान्तर्गत एलिचपूरमें 'ईल' नामका एक जैनधर्मी राजा राज्य करता था। उसने वि० सं० १०००में अपने नामसे ईलिचपुर (ईलेशपुर) शहर वसाया। एक वार ईल राजाने एक मुसलमान फकीरके साथ बुरा वर्ताव किया इसका समाचार गजनीके तत्कालीन राजा शाह रहमानके पास पहुंचा। उस समय शाह रहमानका विवाह हो रहा था। उनको फकीरके अपमानसे इतना बुरा लगा कि उन्होंने अपना

विवाह छोड़ ईलराजापर चढाई कर दी। इसीसे उनका नाम दूल्हारहमान पड़ा। दूल्हारहमान और ईलके बीच घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों ही राजा काम आये। मुसलमानोंके ग्यारह हजार योद्धा इस युद्धमें मारे गये, पर अन्तमें मुसलमानोंकी ही जीत हुई। युद्धमें मारे गये योद्धा सब एक ही स्थानपर दफन किये गये और उस स्थानपर एक इमारत बनवाई गई। यह इमारत अब भी विद्यमान है और 'गंजीशहीदा' नामसे प्रसिद्ध है। पास ही शाह दूल्हारहमानकी कब्र भी बनी हुई है।

उक्त कथाका उल्लेख तवारीख–इ–अमजदीमें पाया जाता है, पर अन्य कोई पुष्ट प्रमाण इस वृत्तान्तके अभीतक नहीं पाये गये। सम्भव है कि दशवीं शताब्दिके लगभग यहां ईल नामका कोई जैनी राजा राज्य करता रहा हो, पर एलिचपुर उसका बसाया हुवा है यह बात कदापि नहीं मानी जासक्ती। अनेक ग्रंथों और शिलालेखोंमें इस नगरका प्राचीन नाम अचलपुर (अच्चलपुर) पाया जाता है। इस नगरके पास ही जो मुक्तागिरि नामका सिद्धक्षेत्र है वहांकी कई मूर्तियोंपर यह नाम खुदा हुआ पाया जाता है। यही नाम ' निर्वाणकाण्ड ' ग्रंथमें भी आया है; यथा 'अच्चलपुर वरणयरे इत्यादि। अच्चलपुरका ही अपभ्रंश अचलपुर (एलिचपुर)... है और यह नाम विक्रमकी १२ हवीं शताब्दिमें सुप्रचलित हो गया था। उस समयके एक बड़े भारी वैयाकरण हेमचन्द्राचार्यने अपनी व्याकरण 'सिद्ध हैमचन्द्र' में इस नामकी व्युत्पत्ति करनेके लिये एक स्वतंत्र सूत्रकी ही रचना की है। वह सूत्र है 'अचलपुरे चलोः'। ८, ११८, इसकी वृत्ति करते हुए कहा गया है

'अचलपुरशब्दे चकारलकारयोः व्यत्ययो भवति अचलपुरं' ॥

इससे स्पष्ट है कि उस समयके एक प्रसिद्ध विद्वान्, इतिहासज्ञ और वैयाकरण ईलराजासे ईलिचपुर नामकी उत्पत्तिको स्वीकार नहीं करते थे।

विदर्भ प्रान्तमें संस्कृतके अनेक बड़े२ कवि हो गये हैं। भारवि, दण्डी, भवभूति, गुणाढ्य, हेमाद्रि, भास्कराचार्य, त्रिविक्रमभट्ट, भास्करभट्ट, लक्ष्मीधर आदि संस्कृतके अमर कवियोंका विदर्भसे सम्बन्ध बतलाया जाता है। यहांके कवियोंने प्राचीनकालमें इतनी ख्याति प्राप्त की थी कि संस्कृत साहित्यमें एक रचनाशैली ही इस देशके नामसे प्रख्यात हुई। काव्यरचनामें 'वैदर्भी रीति' सर्वोच्च और सर्वप्रिय मानी गई है क्योंकि इस रीतिमें प्रसाद, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारत्व आदि गुण विशेषरूपसे पाये जाते हैं। इस देशमें अनेक जैन कवि भी हो गये हैं। ये कवि विशेषतः कारंजाके बलात्कारगण और सेनगणके भट्टारकोंमेंसे हुए हैं। इन्होंने धार्मिक ग्रन्थोंकी रचना की है; पर ये ग्रन्थ अभीतक प्रकाशित नहीं हुए। वे वहांके शास्त्रभंडारोंमें ही रक्षित हैं। अपभ्रंश भाषाके प्रसिद्ध कवि धनपाल जिनकी 'भविष्यदत्त कथा' जर्मनी और बड़ौदासे प्रकाशित हो चुकी है, सम्भवतः इसी प्रांतमें हुए हैं। क्योंकि ये कवि धाकड़वंशी थे और यह जाति इसी प्रांतमें पाई जाती है। भविष्यदत्त कथाकी दो अति प्राचीन प्रतियां भी इस प्रान्तके ही अन्तर्गत कारंजाके शास्त्रभंडारोंमें पाई गई हैं। बुलडाला जिलेके मेहकर (मेघंकर) नामक ग्रामके बालाजीके मंदिरमें एक खंडित जैन मूर्ति संवत् १२७२ की है जिसे

आशाधरकी स्त्री पद्मावतीने प्रतिष्ठित कराई थी (पृ० ९०)। संवत्के उल्लेखसे अनुमान होता है कि सम्भवतः ये आशाधर उन प्रसिद्ध जैनाचार्य 'कलिकालिदास' आशाधरजीसे अभिन्न हैं, जिनके बनाये हुए ग्रन्थोंका जैन समाजमें भारी आदर है। ये आशाधर बघेरवाल जातिके थे और राजपूतानामें शाकम्भरी (साम्हर) के निवासी थे। मुसलमानोंके त्राससे वे वि० सं० १२४९में धारा-नगरीमें और वि० सं० १२६९में नालछे (नलकच्छपुर) में आ गये थे। उनके वि० सं० १३०० तकके बने हुए ग्रन्थोंमें नल-कच्छपुरका उल्लेख मिलता है, पर मेहकरकी मूर्तिके लेखपरसे अनु-मन होता है कि वि० सं० १२७९के लगभग आशाधरजी विदर्भ प्रान्तमें ही रहे होंगे। वे बघेरवाल जातिके थे और इस जातिकी बरारमें ही विशेष संख्या पाई जाती है। उनकी स्त्रीका नाम अन्यत्र सरस्वती पाया जाता है, पर सरस्वती और पद्मावती पर्यायवाची शब्द हैं अतः उनका तात्पर्य एक ही व्यक्तिसे हो सक्ता है। यह भी अनुमान होता है कि सम्भवतः आशाधरजी जब बरारमें थे तभी उन्होंने अपने ' मूलाराधनादर्पण ' नामक टीका ग्रन्थकी रचना की थी। इस ग्रन्थका उल्लेख उनके वि० सं० १२८९से लगाकर १३०० तकके बने हुए ग्रन्थोंकी प्रशस्तियोंमें पाया जाता है और वि० सं० १२७९के पूर्वके ग्रंथोंमें नहीं पाया जाता। इस ग्रंथकी प्रति भी अबतक केवल बरार प्रान्तान्तर्गत कारंजामें ही पाई गई है, अन्यत्र नहीं। इन सब प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि आशाधरजीने वि० सं० १२७९के लगभग कुछ काल बरार प्रान्तमें निवास किया और ग्रन्थ रचना भी की।

बरार प्रान्तमें जैनियोंका मुख्य स्थान अकोला जिलेमें कारंजा है। यहां लगभग चार पांचसौ वर्षसे दिगंबर संप्रदायके भिन्न२ तीन गणोंके पट्टोंकी स्थापना है। बलात्कारगण, सेनगण और काष्टासंघ, इन तीनों ही गणोंके मंदिरोंमें एक२ शास्त्रभंडार है। बलात्कारगण और सेनगणके मंदिरोंके शास्त्रभंडार बड़े ही विशाल और महत्व-पूर्ण हैं। इनमें अनेक अप्रकाशित और अश्रुतपूर्व संस्कृत, प्राकृत व हिन्दीके ग्रन्थ हैं। इनका उद्धार होनेकी बड़ी आवश्यक्ता है*। अकोला जिलेमें दूसरा जैनियोंका पवित्र स्थान सिरपुर है जहां अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर है।

मध्यभारत।

मध्यभारतके अन्तर्गत अनेक अत्यन्त प्राचीन और इतिहास प्रसिद्ध स्थान हैं। अवंती देशकी गणना भारतके प्राचीनसे प्राचीन राज्योंमें की गई है। जिस दिन अन्तिम तीर्थंकर महावीरस्वामी-का मोक्ष हुआ था उसी दिन अवन्ती देशमें पालक राजाका अभिषेक हुआ था। जैन ग्रंथोंके अनुसार मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त भी अधिकांश अवन्ती (उज्जैनी) नगरीमें ही निवास करते थे। श्रुतकेवली भद्र-बाहुने उज्जैनीमें ही प्रथम द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षके चिन्ह देखे और चंद्रगुप्तको तत्सम्बंधी भविष्यवाणी सुनाई। चंद्रगुप्त सम्राट्ने यहां ही उनसे जिनदीक्षा लेली और यहांसे ही मूल जैन संघकी वह

---

* कारंजा और वहांके गणों व शास्त्र भंडारोंका विशेष परिचय प्राप्त करनेके लिये देखोः–१) दिगम्बर जैन खास अंक वर्ष १८ वीर सं० २४५१ 'कारंजा' वहांके गण और शास्त्रभंडार' (२) सी० पी० गवर्न्मेंन्ट द्वारा प्रकाशित–Catalogue of Sanskrit-Prakrit Mss. in C. P. & Berar.

दक्षिण यात्रा प्रारम्भ हुई जिसका केवल जैनधर्मके ही नहीं भारतवर्षके इतिहासपर भी भारी प्रभाव पड़ा। विक्रमादित्य नरेशके सवन्धमें आधुनिक विद्वानोंका मत है कि विक्रम संवत्के प्रारम्भ कालके समय किसी उक्त नामके राजाका ऐतिहासिक अस्तित्व सिद्ध नहीं होता, पर जैन ग्रन्थोंमें महावीरस्वामीके ४७० वर्ष पश्चात् उज्जैनीके राजा विक्रमादित्यका उल्लेख मिलता है व उनके जीवनकी वहुतसी घटनायें भी पाई जाती हैं। 'कालिकाचार्य कथानक' के अनुसार विक्रमादित्यने महावीरस्वामीसे ४७० वर्ष पश्चात् विदेशियों (शकों)से युद्धकर उन्हें परास्त किया और अपना सम्वत् चलाया। इसके १३५ वर्ष पश्चात् शकोंने विक्रमादित्यको हराया और दूसरा संवत् स्थापित किया। स्पष्टतः उक्त दोनों संवतोंका अभिप्राय क्रमशः विक्रम और शक संवत्से है, पर इन संवतोंके वीच १३५ वर्षका अन्तर होनेसे शकोंके विजेता विक्रम और उनसे पराजित होनेवाले विक्रम एक नहीं माने जासक्ते। जो हो पर अनेक जैन ग्रन्थ यह प्रमाणित करते हैं कि उस समय एक बड़ा प्रतापी विक्रमादित्य नामका नरेश हुआ है जो जैनधर्मावलम्बी था। इसका समर्थन इस बातसे भी होता है कि 'वैताल पंचविंशतिका' 'सिंहासन द्वात्रिंशिका' आदि विक्रमादित्यसे सम्बन्ध रखनेवाले कथानक जैनियोंने ही विशेष रूपसे अपने ग्रन्थ भंडारोंमें सुरक्षित रक्खे हैं।

गुप्तवंशी राजाओंके समयमें यद्यपि जैनधर्मको विशेष उत्तेजन नहीं मिला, तथापि राज्यमें शांति होनेसे उसका प्रचार होता रहा। इसी समयमें 'हूण' जातिके विदेशी लुटेरोंके आक्रमणसे देशकी भारी क्षति हुई और मध्यभारतमें जैनधर्मको विशेष हानि हुई।

जैन ग्रंथोंमें इस समयके 'कल्कि' नामक राजाके निर्ग्रन्थ मुनियोंपर भारी अत्याचारोंका उल्लेख है। उत्तरपुराणमें कहा गया है कि उसने परिग्रहरहित मुनियोंपर भी कर लगाया था। कुछ विद्वान् इस कल्किराजको हूणवंशी, महा दुराचारी मिहिरकुल ही अनुमान करते हैं। कल्किका अधर्मराज्य बहुत समयतक नहीं चला—४२ वर्षके अधर्म राज्यसे भूतलको कलंकितकर कल्कि कुगतिको प्राप्त हुआ और उसके उत्तराधिकारियोंने पुनः धर्मराज्य स्थापित किया।

नौवीं दशवीं शताब्दिसे मध्यभारतमें जैनधर्मकी विशेष उन्नति हुई और कीर्ति फैली। 'धारा'के नरेशोंने जैन धर्मको खूब अपनाया, 'महासेनसूरि' ने मुञ्जनरेशसे विशेष सन्मान प्राप्त किया और उनके उत्तराधिकारी सिन्धुराजके एक महासामन्तके अनुरोधसे उन्होंने 'प्रद्युम्नचरित' काव्यकी रचना की। ग्वालियर रियासतके शिवपुर परगनान्तर्गत दूबकुंडसे जो सं० ११४५का शिलालेख मिला है उसमें तत्कालिक राजवंश परिचयके अतिरिक्त 'लाटवागट' गणके आचार्योंकी परम्परा दी है। इस परम्पराके आदिगुरु देवसेन कहेगये हैं (पृ० ७३–७७)। ये देवसेन संभवतः वे ही हैं जिन्होंने संवत् ९९०में दर्शनसार नामक एक जैन ऐतिहासिक ग्रंथकी रचना की थी। इनके बनाये हुए संस्कृत, प्राकृत और भी अनेक ग्रन्थ पाये जाते हैं। भोजदेवके समयमें अनेक प्रसिद्ध २ जैनाचार्य हुए हैं। ब्रह्मदेव टीकाकारके अनुसार द्रव्यसंग्रह ग्रंथके रचयिता नेमिचन्द्राचार्य भोजदेवके दरबारमें थे। नयनंदि आचार्यने अपना अपभ्रंश भाषाका एक काव्य 'सुदर्शनचरित्र' भी इन्हींके राज्यमें सं० ११००में समाप्त किया था जैसा उसकी प्रशस्तिमें है:—

'तिहुवणंनारायणसिरिनिकेउ, तहिं णरवरु पुंगमु भोयदेउ ।
णिव विक्कमकालहो ववगएसु, एयारह संवच्छरसएसु ॥
तहिं केवलिचरिउ अमच्छरेण, णयणंदिय विरइउ वच्छरेण ।

तेरहवीं शताब्दीमें आशाधरजी राजपूतानेसे मुसलमानोंके भयसे धारामें आगये थे। धारा और नालछेमें रहकर ही उन्होंने अपने अधिकांश ग्रंथोंकी रचना की। यह समय जैनधर्मकी खूब समृद्धिका था। भेलसाके समीपका 'वीसनगर' जैनियोंका बहुत प्राचीन स्थान है। वह शीतलनाथ तीर्थंकरकी जन्मभूमि होनेसे अतिशयक्षेत्र है। जैन ग्रंथोंमें इसका नाम भद्दलपुर पाया जाता है। भट्टारकोंकी गद्दी यहींसे प्रारम्भ होकर मान्यखेट गई थी। इसी समय मध्यभारतमें विशेषतः बुन्देलखण्डमें अनेक जैन मंदिर निर्मापित हुए जिनके अब अधिकतः खण्डहर मात्र शेष रह गये हैं। खजराहाके प्रसिद्ध जैन मंदिर इसी समयके हैं। आगामी तीन चार शताब्दियोंमें मंदिरनिर्माणका कार्य खूब प्रचुरतासे जारी रहा, बड़े२ सुन्दर कारीगरीके मंदिर बनगये और अनेक मूर्तियोंकी प्रतिष्ठायें हुईं। सोनागिरि (दतिया) बड़वानी, नयनागिरि (पन्ना), द्रोणगिरि (बीजावर) आदि अतिशय क्षेत्र इसी समय अनेक मंदिरोंसे अलंकृत हुए। सत्तरहवीं शताब्दिसे यहां जैनधर्मका ह्रास होना प्रारम्भ हुआ। जहां किसी समय हजारों लाखों जैनी थे वहां अब कोसों तक अपनेको जैनी कहनेवाला ढून्ढ़नेसे नहीं मिलता। वहां अब जैनधर्मका पता उन्हीं मंदिरोंके खण्डहरों और टूटीफूटी हजारों जिनमूर्तियोंसे चलता है।

राजपूताना।

जैनधर्म आदिसे क्षत्रियोंका धर्म रहा है, और इसलिये इसमें

कोई आश्चर्य नहीं जो क्षत्रिय—भूमि राजपूतानेमें इस धर्मका विशेष प्रचार अत्यन्त प्राचीन कालसे पाया जाय। जैनधर्म क्षत्रियोंके लिये अत्यन्त उपयोगी था यह इसी बातसे सिद्ध है कि ऐतिहासिक कालमें ही अन्य धर्मावलंबियोंको जैनी बनानेका कार्य जितना राज-पुतानेमें सफल हुआ उतना अन्यत्र कदाचित् ही हुआ होगा। जैनियोंकी प्रसिद्ध२ जातियोंका जैसे ओसवाल, खण्डेलवाल, बघेर-वाल, पल्लीवाल आदिका उद्गम स्थान राजपूताना ही है। इन जातियोंको कब कौन आचार्यने जैनी बनाया इसका बहुतसा वृत्तांत जैन ग्रन्थोंमें पाया जाता है। विक्रम सम्वत्की प्रथम ही कुछ शताब्दियोंमें राजपुतानेमें जैनधर्मका खासा प्रचार हो गया था। इसके आगेकी शताब्दियोंमें यहांके जैनियोंने अपने अहिंसामयी धर्मके साथ२ अपने क्षत्रिय कर्तव्यका पूर्णरूपसे निर्वाह किया। चित्तौड़का प्रसिद्ध प्राचीन कीर्तिस्तम्भ जैनियोंका ही निर्माण कराया हुआ है। उदयपुर रज्यके केशरियानाथजी आदि जैनियोंके ही प्राचीन पवित्र स्थान हैं जिनकी पूजा वंदना आजतक अजैन भी बड़ी भक्तिसे करते हैं। सिरोही राज्यके अंतर्गत 'आबू' के पास देलवाड़े (देवलवाड़े) के विमलशाह और तेजपालके बनवाये हुए जैन मंदिर कारीगरीमें अपनी शानी नहीं रखते। विमलशाहके आदिनाथ मंदिरके विषयमें कर्नेल टॉडसाहबने लिखा है कि 'यह मंदिर भारतके संपूर्ण देवालयोंमें सबसे सुन्दर हैं और आगरेके ताजमहलको छोड़कर और कोई भी इमारत ऐसी नहीं है जो इनकी समता कर सके'। इस अनुपम मंदिरका कुछ हिस्सा मुसलमानोंने तोड़ डाला था जिससे वि० सं० १३७८में लल्ल और वीजड़

नामक दो साहूकारोंने इसका जीर्णोद्धार करवाया और ऋषभदेवकी मूर्ति स्थापित की। इस बातका उल्लेख जिनप्रभसूरिने अपने तीर्थ-कल्प नामक ग्रन्थमें किया है।

आदिनाथ मंदिरके पास ही वस्तुपालके छोटे भाई तेजपाल द्वारा अपने पुत्र और स्त्रीके कल्याणार्थ बनवाया हुआ नेमिनाथका मंदिर है। यही एक मंदिर है जो कारीगरीमें उपर्युक्त आदिनाथ मंदिरकी समता कर सकता है। इसके विषयमें भारतीय भवनक-लाके प्रसिद्ध ज्ञाता फर्ग्यूसन साहबने कहा है कि 'संगमर्मरके बने हुए इस मंदिरमें अत्यन्त परिश्रम सहन करनेवाली हिन्दुओंकी टांकीसे फीते जैसी बारीकीके साथ ऐसी मनोहर आकृतियां बनाई गई हैं कि उनकी नकल कागजपर बनानेको कितने ही समय तथा परिश्रमसे भी मैं समर्थ नहीं हो सका'। इसी मंदिरकी गुम्मटकी कारीगरीके विषयमें कर्नल टॉड साहब कहते हैं कि "इसका चित्र तैयार करनेमें लेखनी थक जाती है और अत्यन्त परिश्रम करने-वाले चित्रकारकी कलमको भी महान् श्रम पड़ता है"। मंदिरमें छोटे बड़े ५२ जिनालय हैं और कई लेख हैं जिनमें वस्तुपाल तेजपालके वंशका तथा बघेल राणाओंके वंशका ऐतिहासिक वर्णन पाया जाता है। मूल गर्भगृहके द्वारकी दोनों ओर बड़ी कारीग-रीसे बने हुए दो ताक हैं जिन्हें तेजपालने अपनी दूसरी स्त्री सुह-ड़ादेवीके कल्याणके निमित्त बनवाया था। तेजपाल पोरवाड़ जातिके थे और लेखसे सुहड़ादेवी मोढ़ जातीय महाजन जल्हणके पुत्र ठाकुर आसाकी पुत्री सिद्ध होती है। इससे सिद्ध है कि उस समय मोढ़ व पोरवाड़ोंमें परस्पर विवाहसम्बंध था। (पृ० १७६-७७)

जैन समाजमें अन्यत्र तो क्षत्रियत्व बहुत समयसे लुप्त हो गया पर राजपूतानेमें वह अभी२ तक बना रहा है। राजत्व, मंत्रीत्व और सेनापतित्वका कार्य जैनियोंने जिस चतुराई और कौशलसे चलाया है उससे उन्होंने राजपूतानेके इतिहासमें अमर नाम प्राप्त कर लिया है। आदिनाथ मंदिरके निर्मापक विमलशाहने भीमदेव नरेशके सेनापतिका कार्य बहुत अच्छी तरहसे किया था। सोलहवीं शताब्दिमें अकबरके भीषण षड्यंत्र जालमें फंसे हुए राणा प्रतापसिंहका उद्धार जिन भामाशाहकी अतुल द्रव्य और चतुराईसे हुआ था वे ओसवाल जातिके जैनी ही थे। अपने अनुपम स्वदेश प्रेम और स्वार्थ त्यागके लिये यदि भामाशाह मेवाड़के जीवनदाता कहे जांय तो अत्युक्ति नहीं होगी। सन् १७८७के लगभग मारवाड़के महाराजा विजयसिंहके सेनापति और अजमेरके सूबेदार डूमराजने मरहटोंके प्रति घोर युद्धकर अपनी वीरता और स्वामिभक्तिका अच्छा परिचय दिया था। ये डूमराज भी ओसवाल जैन जातिके सिंघी कुलके नररत्न थे। इसी प्रकार गत शताब्दिके प्रारम्भिक भागमें वीकानेर राज्यके दीवान और सेनापति अमरचंद्रजीने भटनेरके खान जब्ताखांको भारी शिकस्त दी थी तथा अनेक युद्धोंमें अपनी वीरताका अच्छा परिचय दिया था। सन् १८१७ ईस्वीमें पिंडारियोंका पक्ष करनेका झूठा दोष लगाकर उनके शत्रुओंने उनके असाधारण जीवनकी असमय ही-इतिश्री-करा डाली। ये भी ओसवाल जैन जातिके वीर थे। और भी न जाने कितने जैन वीरोंके वीरतापूर्ण जीवनचरित्र आज इतिहासकी अंधेरी कोठरीमें पड़े हुए हैं। इन्हीं शताब्दियोंमें राजपूतानेने ही ढूंढारी हिन्दीके कुछ ऐसे भारी जैन

धार्मिक विद्वानोंको पैदा किया जिन्होंने संस्कृत प्राकृत ग्रन्थोंपर हिन्दीमें टीका और भाष्य लिखकर जनताका भारी उपकार किया है। इनमें जयचंद्र, किसनसिंह, जोधराज, टोडरमल, दौलतराम, सदासुखजी छावड़ा आदिके नाम प्रख्यात हैं जिनका अधिक परिचय देनेकी आवश्यक्ता नहीं। राजपूतानेमें अनेक जगहं जैसे—जैसलमेर, जयपुर आदिमें प्राचीन शास्त्रभंडार हैं जिनका अभीतक पूरा२ शोध नहीं हुआ है। वह दिन जैन संसारके लिये बड़े सौभाग्यका होगा जब प्राचीन मंदिरों, खण्डहरों, मूर्तियों, शिलालेखों और ग्रन्थोंके आधारपर जैन धर्मके उत्थान और पतनका जीता जागता इतिहास तैयार होकर विद्वत्समाजके सन्मुख रक्खा जासकेगा। ब्रह्मचारीजीकी संकलित की हुई इन प्राचीन स्मारकोंकी पुस्तकोंको पढ़कर पाठकोंके हृदयमें यह भाव उठे विना नहीं रहेगा कि:—

"अबतक पुराने खंडहरोंमें, मंदिरोंमें भी कहीं,
बहु मूर्तियां अपनी कलाका पूर्ण परिचय दे रहीं।
प्रकटा रही हैं भग्न भी सौन्दर्यकी परिपुष्टता,
दिखला रही हैं साथ ही दुष्कर्मियोंकी दुष्टता ॥ १ ॥
यद्यपि अतुल, अगणित हमारे ग्रन्थ—रत्न नये नये,
बहु वार अत्याचारियोंसे नष्टभ्रष्ट किये गये।
पर हाय! आज रहींसहीं भी पोथियां यों कह रहीं,
क्या तुम वही हो, आज तो पहचानतक पड़ते नहीं ॥ २ ॥

गांगई।
२९-९-२६ } हीरालाल जैन।

सूचीपत्र।

प्रथम भाग—मध्यप्रान्त।

शुद्धाशुद्धि।

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
९३	११	१९८२	११८२
१४६	२०	करेड़	करेड़ा
१४८	१७	नादाल	नाडोल
१५०	४	कालिंजर	कलिंजरा
१५५	३	मांदोर	मांडोर
,,	११	नादोल	नाडौल
,,	१९	मंगलोद	मांगलोद
१५६	४	रानापुर	राणपुर
,,	२२	सादरी	सादड़ी
१५७	५	पीपर	पांड
,,	१३	दीदवाना	डीडवाना
१५८	१३	ओसियान	ओसियां
१५९	३	बारमेर	बाड़मेर
,,	११	मेरत	मेड़ता
१६१	४	संचोर	सांचोर
,,	११	नाना	नाणा
१६३	२	छवल	घवल
,,	१०	सेवादी	सेवाडी
,,	१८	धनेरवा	धाणेराव
,,	२२	संदेखा	सांडेराय

१५४.	७	कोरता	कोरटा
१६५	१८	'वारलू	वड़लू
१६६	३	जासोल	जसोल
१६८	१४	लोडवरा	लोद्रुवा
१६९	१७	मुंगथल	मुंगथला
१७०	३	पतनारायण	पाटनारायण
१७१	३	वलदा	वालदा
,,	८	कलार	कोलर
,,	११	पालदी	पालडी
,,	१५	वागिन	बागिण
,,	१९	उथमन	ऊथमन
१७२	३	जावल	जावाल
,,	५	कातन्द्री	कालन्द्री
,,	८	उदरत	उदरट
,,	१३	वरमन	वरमाणा
१७३	१२	कामद्रा	कायद्रा
१७४	१	दत्ताणी	दन्ताणी
,,	३	हणाद्री	हणाद्रा
,,	६	सणापुर	सणपुर
,,	१३	सीवरा	सीवेरा
१७६	२३	असराज	आसराज
१८०	१९	नरैना	नराणा
१८५	१६	मुकंद्वारा	मुकंदरा

मध्यप्रान्त, मध्यभारत और राजपूतानाके-
प्राचीन जैन स्मारक।

प्रथम भाग-मध्य प्रान्त।

Imperial Gazetter of India C. P. (1908).
भारतके बादशाही गजटियर मध्य प्रांत (१९०८) से जो समाचार विदित हुआ है उसको मुख्यतया ध्यानमें लेकर मध्य प्रांतका वर्णन प्रारम्भ किया जाता है। बीच २ में और पुस्तकोंका वर्णन भी आयगा। बहुतसा मसाला हरएक जिलेके गजटियर, मध्य प्रान्तका इतिहास और कौजन साहबकी रिपोर्टसे लिया गया है। जबलपुर जिलेमें रूपनाथपर महाराजा अशोकका शिला स्तंभ है जिससे प्रमाणित है कि महाअशोकका* राज्य मध्यप्रांतके इस भागमें था। सागर जिलेके एरन स्थानपर चौथी या पांचमी शताब्दीके लेखोंसे प्रगट है कि यहां मगधके गुप्तवंशके पीछे श्वेत हून तूरानियोंने राज्य किया। शिवनी और अजन्टाकी गुफाके लेखोंसे जाना जाता है कि वाकातक[1] वंशने शतपुरा और नागपुरके मैदानोंपर तीसरी

---

* यह जैन सम्राट चन्द्रगुप्त (जो श्री भद्रबाहु श्रुतकेवलीके शिष्य मुनि होगए थे) का पोता था। वह अपने राज्यके २९ वर्षतक जैनी रहा फिर बौद्ध होगया था। यह अहिंसाका प्रचारक था।

[1] वाकातक जो प्रवरणपुरमें राज्य करते थे उन राजाओंके कुछ नाम "Disciptive list of inscriptions in C. P. & Berar by R. S. Hiralal B. A. 1916." नामकी

शताब्दीसे राज्य किया था। उनकी राज्यधानी चांदाके भांद्रकमें थी जो प्राचीन कालमें एक बड़ा नगर था।

वर्धा जिलेके भीतर नागपुरके कुछ भागपर सन् ई०से दो शताब्दी पहले विदर्भ या वरारके हिन्दुओंका राज्य था। यही राज्य तंलुगूके अंध्र लोगोंकि हाथमें सन् ११३में पहुंचा फिर उस पर दक्षिणके राष्ट्रकूट[१] वंशवालोंने सन् ७५० से १८०७ तक राज्य किया।

उत्तरमें हैहय राजपूतोंके कलचूरी या चेदी वंशजोंने नर्बदा नदीकी ऊपरी घाटीपर राज्य किया। इनकी राज्यधानी त्रिपुरा या करणवेल थी जहां अब जबलपुरमें तेवर ग्राम है। इस वंशवालोंने अपने लेखोंमें अपने खास सम्वत्का व्यवहार किया था। तीसरी शताब्दीमें इनकी शक्ति बहुत जमी हुई थी। जबसे नौमी शताब्दीतक इनका नाम नहीं सुन पड़ा। अंतमें इनका वर्णन सन् ११८१ के लेखमें आया है। *

पुत्रक्रम हैं वे इस तरह हैं-(१) विन्ध्यशक्ति (२) प्रवरसेन प्रथम (३) रुद्रसेन प्रथम गौतम पुत्रका बेटा, यह गौतम प्रवरसेनका पुत्र था (४) पृथ्वीसेन प्रथम (५) रुद्रसेन द्वि० (६) प्रवरसेन द्वि० (७) नरेन्द्रसेन (८) देवसेन (९) पृथ्वीसेन द्वि० (१०) हरिसेन।

१ राष्ट्रकूट वंशके बहुतसे राजा जैनधर्मके माननेवाले थे जिनमें महाराज अमोघवर्ष बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

*गाड़वाड़ बम्बई प्रांतके गजटियर जिल्द २२ पीसे प्रगट होता है कि कलचुरी वंशवाले जैन थे। इनका यह पद प्रसिद्ध था। "कालंजर पराधाधीश्वर" अर्थात् सर्वोत्तम नगर कालंजरके स्वामी इनकी उत्पत्ति इस नगरसे विदित होती है। यह बुंदेलखण्डमें अब एक गढ़ (किला)

नौवींसे १३ वीं शताब्दीतक सागर और दमोह महोवाके चन्देल राजपूतोंके राज्यमें गर्भित थे। उसी समयके अनुमान असीरगढ़का वर्तमान क़िला चौहान राजपूतोंके हाथमें था। नर्बदा घाटीके पश्चिम शायद मालवाके परमार राज्यने ११वीं और १२वीं शताब्दीके मध्यमें राज्य किया होगा। सन् ११०४-५का एक लेख नागपुरमें है कि कमसेकम एक परमार राजा लक्ष्मणदेवने नागपुरको अपने राज्यमें मिला लिया था। छत्तीसगढ़में हैहयवंश या चेदीवंशने रतनपुरमें स्थान जमाया था और रायपुर तथा विला-

है। **कनिंघम** साहबकी रिपोर्ट जिल्द ९ से मालूम होता है कि नौवीं, दशवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दीमें इस वंशकी एक बलवती शाखा बुंदेलखण्डमें राज्य करती थी जिसको चेदी भी कहते थे। इनका प्रारम्भ सन् २४९ से मालूम होता है। इनकी राज्यधानी त्रिपुरा थी जो जबलपुरसे पश्चिम ६ मील तेवर ग्राम है।

कलचूरी वंशके त्रिपुरा निवासियोंने कई दफे राष्ट्रकूटोंसे और पश्चिम चालुक्योंसे विवाह सम्बन्ध किये थे। इस कलचूरी वंशकी एक शाखा छठी शताब्दीमें कोंकण (बंबईप्रांत) में राज्य करती थी। यहांसे इनको पुलकेशी द्वि० (सन् ६१०-६३४) के चाचा चालुक्य वंशी **मंगलीसने** भगा दिया था।

कलचूरी लोग अपनेको हैहय वंशी कहते हैं और अपनी उत्पत्ति यदुवंशसे कार्यवीर्य या सहस्रबाहु अर्जुनसे बताते हैं।

नोट संपादकीय–मध्यप्रान्तमें **जैन कलवार** नामकी जाति प्रसिद्ध है। यही जाति कलचूरी वंशकी सन्तान है ऐसा मध्यप्रांत सेन्सस रिपोर्ट सन् १९११ पृष्ठ २३०में बताया गया है। ये जैन कलवार बहुत संख्यामें है। अब जैनधर्मको भूल गए हैं। आचार भी कुछ २ बिगड़ गया है।

कनिंघम साहबकी रिपोर्ट नं० ९ में कलचूरी राजाओंकी वंशावली दी हैं वह इस प्रकार है—

बलपुरके जिलोंपर राज्य फैलाया था। लेख १२वीं शताब्दी तक ले जाता है। यहांसे १५वीं व १६वीं शताब्दी तकका हाल प्रगट नहीं

चेदी संवत	सन् ई०	नाम राजा
०	२४९	चेदी या कलचुरी संवत प्रारम्भ
१	२५०	काकवर्ण शिशुनागकी संतानोंमें
		मध्यके राजाओंके नाम प्रगट नहीं
२७१	५२०	शंकर गण
३०१	५५०	बुद्धराज जिसको मंगलीश चलुक्यने हराया।
		कुछ नाम बीचके नहीं प्रगट
४३१	६८०	हैहय जिसको विनयादित्य चलुक्यने हराया
४८१	७३०	हैहय वंशकी राजकुमारी लोका महादेवी जो विक्रमादित्य द्वि० चलुक्यको विवाही गई
		बीचके राजा प्रगट नहीं
६२६	८७५	कोक्कल प्रथम कन्नौजके भोजका समकालीन
६५१	९००	मुग्धतुंग प्रसिद्ध धवल प्रथम
६७६	९२५	युवराज केयूरवर्ष
७०१	९५०	लक्ष्मणराज या लक्ष्मणसागर (जैसा बिल्हारी लेखमें है)
७२६	९७५	युवराज, वाक्पतिका समकालीन
७५१	१०००	कोकल्ल द्वि०
७७१	१०२०	गांगेयदेव विक्रमादित्य
७९१	१०४०	कर्णदेव
८३१	१०८०	यशःकर्ण देव
८६६	१११५	गयकर्ण या नयकर्ण देव
९०२	११५१	नरसिंहदेव
९३०	११७९	जयसिंहदेव
९३२	११८१	विजयसिंहदेव

जबलपुर जिलेके गजेटियर सन् १९०९ में जो कलचुरी राजाओंके

है। जबतक गोंदलोगोंकी शक्ति बढ़ गई थी सबसे पहला गोंड राजा बेतुलके खेरलामें था। इसका नाम १३९८में प्रगट होता है जब

नाम दिये हैं वे भी यही हैं। कुछ अन्तर हैं वह यह है कि मुग्धतुंगके पीछे बालाहर्ष है, फिर केयूरवर्ष युवराजदेव है। लक्ष्मणराजके पीछे संकरगण (९७०) है फिर युवराजदेव द्वि० (९७५) है।

कनिंघम साहबने कुछ शिलालेख भी दिये हैं जिनमें चेदी या कलचूरी वंशके राजाओंके नाम आए हैं।

(१) जबलपुरसे उत्तर ४२ मील बहुरीबन्द ग्राममें एक १२ फुट ऊंची बड़ी नग्न जैन मूर्तिके लेखमें कलचूरी राजा गजकर्ण देव संवत १०XX आता है।

(२) इसके पुत्र नरसिंहदेवका लेख भेड़ाघाट पर है।

(३) बिल्हारीके प्राचीन नगरके एक शिलालेखमें चेदी वंशके हैहय राजाओंके नाम हैं। यह पाषाण नागपुरके म्यूजियममें है। वे नाम हैं- कोकल, मुग्धतुंग, केयूरवर्ष, लक्ष्मण, संकरगण, युवराज।

कोकल्लके परतेका पोता गयकर्ण था जिसने धारके राजा उदयादित्यकी बड़ी कन्याको विवाहा था। यह भी कहा जाता है कि इस कोकल्लने दक्षिणके कृष्णराजको पराजित किया था। मैं इसे कृष्णराष्ट्रकूट समझता हूं जिसने अनुमान ८६०से ८८० ई० तक राज्य किया था। वह दंतिदुर्गा (शाका ६७५ या सन् ७५३) से पांचवी पीढ़ीमें था तथा वह कृष्ण गोविन्द राष्ट्रकूट (शाका ८५५-सन् ९३३) का परबाबा (Great grand father) भी था। राष्ट्रकूटोंके एक शिलालेखमें लिखा है कि कृष्णराजने कोकल प्रथमकी कन्या महादेवीको विवाहा था। दूसरे राष्ट्रकूट लेखमें (R. A. S. J. III 102) है कि कृष्णके पुत्र जगतरुद्रने चेदी राजा शंकरगणकी दो कन्याओंको विवाहा था। यह शंकरगण कोकल्ल प्रथमका पुत्र था। तीसरे राष्ट्रकूट लेख (B. A. S. J. IV P. 97) में है कि इन्द्रराजने कोकल प्रथमकी परपोती द्विजम्बाको विवाहा था। इस इन्द्रराजा और उसकी रानीका समय निश्चयपूर्वक उनके पुत्र गोविन्दराजके लेखसे शाका ८५५ या

खेरलाके राजा नरसिंहरायके पास (जैसा फारसी कवि फरिश्ताने कहा है) बहुत सम्पत्ति व शक्ति थी तथा गोंडवानाकी सर्व पहाड़ियां व

सन् ९३३ सिद्ध होता है। राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष स्वयं कोकल्ल प्रथमका परपोता अपनी माता गोविन्दम्बाकी तरफसे था तथा लक्ष्मणके ही वंशका था। मेरी सम्मतिमें चन्द्रादेवीका पिता लक्ष्मण था।

चौथे कवितलाईके लेखमें युवराजदेवके पुत्र लक्ष्मण राजाका नाम आया है जिसने अनुमान ९५०से ९७५ तक राज्य किया था।

पांचवें बनारसमें राजघाटके किलेमें हैहय वंशी कर्णदेवका लेख संवत ७९३ का मिला है, जिसमें चेदी राजाओंकी नीचे लिखी वंशावली है—

कार्थवीर्यदेव
|
कोकल जिसने चंदेलाकी नंदादेवीको विवाहा था।
|
प्रसिद्ध धवल
|
बालहर्ष
|
युवराजदेव
|
लक्ष्मण
|
शंकरगण
|
युवराजदेव
|
कोकलदेव
|
गांगेयदेव
|
कर्णदेव

नोट—कोकल्ल प्रथमने ग्वालियरमें राजा भोजके साथ संवत ९३३ या सन् ई० ८७६में युद्ध किया था। यह राजा भोज कन्नौजका महाराजा था जिसने सन् ८५० से सन् ८९० तक राज्य किया था तथा कोकल्ल प्रथमका राज्य सन् ८५० से ८९० तक था।

दूसरे देश थे। इस राजाने उन युद्धोंमें भाग लिया था जो मालवा और खानदेशके राजाओंके और बहमनी बादशाहोंके साथ

स० नोट–चेदी व राष्ट्रकूट वंश दोनों जैन धर्मके भक्त थे इससे दोनोंमें सम्बन्ध भी होते थे। कलचूरि शब्दके अर्थ होते हैं–कल=देह, देहोंका चूरनेवाला मुक्तिगामी, हैहय शब्द वास्तवमें अहेय या अहृदय होगा जिसका भी भाव पापोंको चूरनेवाला है। चेदीका अर्थ आत्माको चेतानेवाला, ये तीनों नाम इस वंशको जैन धर्मी सिद्ध करते हैं। "Descriptive list of inscriptions of C. P. & Berar by Hiralal B. A. 1916." नामकी पुस्तकसे विदित हुआ कि पहले जो कामवर्णसे विजयसिंहदेव तक राजाओंकी सूची दी है वह त्रिपुरके कलचूरि राजाओंकी है।

रतनपुरकी शाखाके कलचूरी राजाओंकी सूची नीचे प्रमाण है, इनको महाकौशलके हैहय वंशी भी कहते थे—

(१) कलिंगराज त्रिपुरके कोकल्ल द्वि० का पुत्र (२) कमल (३) रत्नराज या रत्नदेव (४) पृथ्वीदेव (५) जाजल्लदेव सन् ११२४ ई० (६) रत्नदेव द्वि० (७) पृथ्वीदेव द्वि० ११४५ (८) जाजल्लदेव द्वि० ११६८ (९) रत्नदेव तृ० ११८१ (१०) पृथ्वीदेव तृ० ११९० (११) भानुसिंह १२०० (१२) नरसिंहदेव १२२१ (१३) भूसिंहदेव १२५१ (१४) प्रतापसिंहदेव १२७६ (१५) जयसिंहदेव १३१९ (१६) धरमसिंहदेव १३४७ (१७) जगन्नाथसिंह १३६८ (१८) वीरसिंहदेव १४०७ (१९) कमलदेव १४२६ (२०) संकरसहाय १४३६ (२१) मोहनसहाय १४५४ (२२) दादूसहाय १४७२ (२३) पुरुषोत्तमसहाय १४८७ (२४) बाहरसहाय या बाहरेन्द्र १५१९ (२५) कल्याणसहाय १५४६ (२६) लक्ष्मणसहाय १५८३ (२७) मुकुन्दसहाय १५९१ (२८) संकरसहाय १६०६ (२९) त्रिभुवनसहाय १६१७ (३०) जगमोहनसहाय १६३२ (३१) आदितिसहाय १६४५ (३२) रंजीतसं० १६५९ (३३) तख्तसिंह १६८५ (३४) रायसिंहदेव १६८८ (३५) सरदारसिंह १७२० (३६) रघुनाथसहाय १७३२।

हुए थे । मालवाके होशंगशाहने इसके देशपर आक्रमण किया तब नरसिंहराय हार गया और मारा गया । १६ वीं शताब्दीमें गढ़ मांडलाके गोंद वंशके ४७ वें राजा संग्रामशाहने अपना राज्य परगनों या जिलोंमें जमा लिया था, जिनमें सागर, दमोह, भोपाल, नरबदाघाटी, मांडला और शिवनी भी गर्भित थे । ऐसा निश्चय होता है कि मांडलाका यह वंश सन् ई० ६६४ के अनुमान प्रारंभ हुआ था तब जादोराय राज्य करता था । यह प्राचीन गोंद राजाका सेवक था । इसने उसकी कन्या विवाही और राज्याधिकारी होगया । सन् १४८०के संग्रामशाहके होने तक यह वंश एक छोटा राजासा बना रहा । इसके २०० वर्ष पीछे गोंदराजा बख्त बुलन्द "जिसकी राज्यधानी छिंदवाड़ामें देवगढ़ रथी" दिहली गया था और उसने वहांका ऐश्वर्य देखकर अपने राज्यको उन्नत करना चाहा । इसने नागपुर नगर बसाया जो उसके पीछे राज्यधानी होगया । देवगढ़ राज्यका विस्तार बेतुल, छिंदवाड़ा, नागपुर, शिवनीका भाग, भंडारा और बालाघाट तक था । दक्षिणमें कोटसे घिरा नगर चांदा

रायपुर शाखाके चेदी राजा—

(१) लक्ष्मीदेव (२) सिंहाना (३) रामचन्द्र (४) ब्रह्मदेव सन् १४०२ ई० (५) केशवदेव १४२० (६) भुवनेश्वरदेव १४३८ (७) मानसिंहदेव १४६८ (८) संतोषसिंहदेव १४७८ (९) सुरतसिंहदेव १५०८ (१०) भरतसिंहदेव १५१८ (११) चामुंडसिंहदेव १५२८ (१२) वंशीसिंहदेव १५६३ (१३) धनसिंहदेव १५८२ (१४) जैतसिंहदेव १६०३ (१५) फत्तेसिंहदेव १६१५ (१६) यादवदेव १६३३ (१७) सोमदत्तदेव १६५० (१८) बलदेवसिंहदेव १६६३ (१९) उमेदसिंहदेव १६८५ (२०) वनवीरसिंहदेव १७१५ (२१) अमरसिंहदेव १७३८ ।

एक दूसरे वंशका स्थान था जो १६ वीं शताब्दीमें प्रसिद्ध था तब एक राना बाबाजी वल्लालशाहने देहलीकी मुलाकात ली थी। इस चांदा राज्यमें बरारका भाग मिला हुआ था।

संग्रामशाहके उत्तराधिकारीके राज्यमें मुसलमान उत्तरसे आए। इसकी विधवा रानी दुर्गावतीको मुगल सेनापतिने सन् १५६४ में हराया और मार डाला।

स० नोट—इसके पीछे मुसलमान राज्यके इतिहासकी जरूरत नहीं है। यहां तकका वर्णन इसलिये किया गया है कि जैन मंदिरोंमें जो प्रतिमाएं विराजमान हैं उनके लेखोंका संग्रह होनेसे इनमेंसे बहुतसे राजाओंके नाम मिल जानेकी संभावना है जिससे इतिहासपर बहुत प्रभाव पड़ेगा।

पुरातत्व—उत्तरके जिलोंमें बहुत स्थानोंमें प्राचीन और नवीन जैन मंदिर हैं जिनमें प्राचीन मंदिर अब लगभग नष्टप्रायः हो गए हैं। परन्तु उनके छितरे हुए खंड यह बताते हैं कि ये बहुत सुन्दर बने थे। वर्तमान जैन मंदिरोंका समूह कुंडलपुर (दमोह) में बहुत उपयोगी है जिनकी संख्या ५०से अधिक होगी।

(१) जबलपुर विभाग।

[१] सागर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है-उत्तरमें झांसी, पन्नाराज्य, विजावर, चरखारी; पूर्वमें पन्ना और दमोह; दक्षिणमें नरसिंहपुर, भोपाल; पश्चिममें भोपाल और ग्वालियर। इस जिलेमें ३९६२ वर्गमील भूमि है।

इतिहास—सागर नगरसे उत्तर ७ मील गढ़ी पाहरी है जिसको गोंद राजाने वसाया था। गोंदोंके पीछे अहीरोंने (जिनको फौला-दिया कहते हैं) रेहलीमें किला बनाया। अनुमान १०२३ सन्‌के जालौनके एक राजपूत निहालसाने अहीरोंको हटा दिया तथा सागर व दूसरे स्थान लेलिये। निहालसाके वंशवालोंने करीब ६०० वर्षों तक राज्य किया परन्तु महोवाके चंदेलोंने उनको परास्तकर अपनाकर दाता बना लिया था। चंदेल राजाओंके दो वीर आल्हा और ऊदल बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। इनकी प्रशंसामें जो गीत हैं उनमें इनकी प्रसिद्धि ५२ युद्धोंमें बताईगई है।

महोवाके एक किसी डांगी सर्दार उदनशाहने सन् १६६०में सागर वसाया। इसने नगरका परकोटा बनाया। उदनशाहके पोते पृथ्वीजीतको प्रसिद्ध बुन्देलाराजा छतरशाहने हटा दिया परंतु जैपुरके राजाने फिर स्थापित किया, तथापि कुरईके मुसलमान सर्दारने फिर हटा दिया। तब वह बिलहरामें चला गया जहां उसके वंशजोंके पास विलहरा और दूसरे ४ ग्राम विना मालगुजारीके अभीतक पाए जाते हैं। सन् १७२९ में मराठा पेशवा बाजीरावके भतीजेने

सागरको ले लिया। उसके प्रतिनिधि गोविंदराव पंडितने नगरकी उन्नति की. इसीने किला बनाया। यह पानीपतके युद्धमें सन् १७६१ में मारा गया। सन् १८१८से सागर इंग्रेजोंके पास है।

सागरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) एरन-ग्राम तहसील खुरई। वामोरा स्टेशनसे ६ मील बीना नदीके तटपर यह पुरातत्वकी बढ़ियां जगह है। यहां सन् ई०से पहलेके सिक्के मिलते हैं। ग्रामके पास आधमील ऊंचेपर ४७ फुट ऊंचा एक बड़ा स्तम्भ है जो एक मंदिरके सामने है। इसमें सन् ४८४ के बुधगुप्तका लेख अंकित है। यहां एक वैष्णव मंदिर है जिसमें १० फुट ऊंचो वराहकी मूर्ति है। पत्थरके पास सबसे पुराना ब्राह्मणोंका लेख मिलता है। सागरके गजटियर सन् १९०६से मालूम हुआ कि इस बड़े खंभेका नीचेका आसन १३ फुट चौरस है तथा गुम्बजके ऊपर एक ५ फुट ऊंची पुरुषकी मूर्ति है जिसका मुंह दोनों ओर है। यह ९ लाइनका लेख है जिसमें लिखा है कि मंत्री विष्णु और धन्य विष्णुने स्थापित किया। एरनका पुराना नाम एराकैना है।

(२) खुरई—सागरसे ३३ मील। यहां जैनियोंके सुन्दर मंदिर हैं। सागर जिलेके गजटियरसे नीचे लिखे स्थान मालूम हुए।

(३) बंडा—सागरसे दक्षिण पूर्व २० मील। यहां जैनमंदिर है।

(४) वीना—ग्राम तहसील रहली। देवरीसे ४ मील। यहां एक बड़ा जैन मंदिर २०० वर्षसे ऊपरका है। यहां अगहन सुदी ६ को ८ दिनके लिये मेला लगता है।

(५) गढ़ाकोटा—तहसील रहली। सागरसे पूर्व २८ मील।

यह ध्वंश स्थान है। यहां एक ऊँची मीनार १०० फुट ऊँचाई पर है। भूमि १९ फुट वर्ग हर तरफ है। इसको राजा मर्दान-सिंहने अपनी स्त्रीकी इच्छासे सागर और दमोहको देखनेके लिये बनाया था।

(६) सागर—यहां जैनियोंके कई मंदिर हैं। १९०१ में संख्या १०२७ थी। यहांकी बड़ी झीलको जिसको सागर कहते हैं लक्खा बंजाराने बनवाया था।

कोज़िन साहबकी रिपोर्ट सन् १८९७ से नीचेका हाल विदित हुआ।

(७) मदनपुर—सागर और ललितपुरके मध्यमें प्राचीन नगर है। यहां छः प्राचीन ध्वंश मंदिर हैं जिनमें नगरके उत्तरकी ओर सबसे पुराने तीन जैन मंदिर हैं। झीलके उत्तर पश्चिम दो व उत्तर पूर्वमें एक है। यहां संवत् १२१२ से १६९२ तकके कई शिलालेख हैं।

—⊱❋⊰—

[२] दमोह जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है-पश्चिममें सागर; दक्षिणपूर्व नरसिंहपुर, जबलपुर; उत्तरमें पन्ना और छतरपुर राज्य। यहां भूमि २८१६ वर्गमील है। यह जिला १०वीं शताब्दीमें महोबाके चन्देल राजाओंके राज्यमें शामिल था। चंदेलोंके बनवाए पुराने मंदिर हैं। १३८३में यह देहलीके तुगलकोंके हाथमें था। यहांके स्थान जानने योग्य हैं।

(१) कुंडलपुर—पहाड़ी। दमोहसे पूर्व २० मील। यहां ५२

दि० जैन मंदिर हैं। यहां श्री महावीरस्वामीकी बृहत् मूर्ति बहुत ही मनोज्ञ व दर्शनीय है जिसका आसन ४ फुट ऊंचा है व मूर्ति १२ फुट ऊंची है। यहां २४ लाइनका शिलालेख है जो १७०० सन्का पन्नाके बुन्देल राजा छत्रसालके समयका है। पहाड़ीके नीचे जो सरोवर है उसको वर्द्धमान सरोवर कहते हैं। यह सं० १७६७ का है। यह जैनियोंका माननीय क्षेत्र है। ग्राममें बड़ा भारी जैन मेला प्रतिवर्ष लगता है। दमोहके परवार जैनी इसके अधिकारी हैं।

(२) नोहटा—दमोहसे दक्षिण पूर्व १३ मील। यह पहले १२ वीं शताब्दीमें चंदेलोंकी राज्यधानी थी। यहां जैन मंदिरोंके बहुत खँडहर हैं। स्तंभ व खँड ग्राममें मिलते हैं। जैन मूर्तियां भी यत्र तत्र पड़ी हैं। इनमें श्री चन्द्रप्रभ भगवानकी मूर्ति भी है। एक जैन मंदिर ग्रामके दक्षिण १ मील दूर सड़कपर है जो बहुत पुराना है।

(३) सिंगोरगढ़—दमोहसे दक्षिण पूर्व २८ मील। यह एक पहाड़ी किला है। जबलपुर-दमोहकी सड़कपर सिंग्रामपुर ग्रामसे ४ मील है। महोबाके चंदेलराजा बेलाने बनाया परन्तु कनिंघम साहब ८ लाइनके चौकोर खंभेके लेखपरसे इसे गजसिंह प्रतिहर या परिहर राजपूत द्वारा बनाया गया है ऐसा कहते हैं। उस लेखमें है कि गजसिंह दुर्गादेव संवत् १३६४ व सन् १३०७ है। यह परिहर राजपूत हैहय राजपूतोंके कलचूरी या चेदी वंशकी सन्तान थे।

—❦—
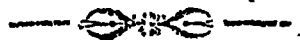
[३] जबलपुर जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरपूर्व मैहर, पन्ना, रीवां राज्य; पश्चिम दमोह; दक्षिण नरसिंहपुर, सिवनी, मांडला। यहां ३९१२ वर्गमील भूमि है। इतिहास—जबलपुरसे थोड़ी दूर जो तिवार ग्राम है वही प्राचीन नगर त्रिपुरा या करणवेलका स्थान है जो कलचूरी राज्यकी राज्यधानी था। (देखो शिलालेख जबलपुर, छत्तीसगढ़ और बनारस कनिंघम रिपोर्ट नं० ९) ये हैहय राजपूतसे सम्बन्ध रखते हैं। इस वंशकी एक शाखा रतनपुरमें थी जो छत्तीसगढ़ पर राज्य करती थी। इस वंशके राजाओंका युद्ध कन्नौजके राठौड़ व महोबाके चंदेल तथा मालवाके परमारोंके साथ हुआ है। जबलपुरमें पहले अशोकका राज्य था। फिर तुंग वंशने ११२ वर्ष तक सन् ई०से ७२ वर्ष पहलेतक राज्य किया। फिर अंध्रोंने सन् २३६ तक, फिर गुप्तोंने जो परिव्राजक महाराज कहलाते थे। इनके राजाओंके ६ लेख सन् ४७५ और ५२८ के मध्यके पाए गए हैं।

जबलपुरको पहले दाहल या दमाला भी कहते थे। कलचूरी वंशका सबसे पुराना वर्णन ५८० सनके बुद्धराजके लेखमें है। अनुमान १५ वीं शदीके यह गोंदराजाओंके अधिकारमें था। यह गढ़ी मांडलाका वंश था। राज्यधानी गढ़ो थी। १७८१ में मरहठोंने कबजा किया।

पुरातत्व—रीढ़ी, छोटा देवरी, सिमरा, पुरेनी, तथा नांदचन्दमें पुराने स्थान हैं। बड़गांवके ध्वंश स्थान जैनियोंके हैं। बहरी बंद, रूपनाथ व तिगवानके ग्रामोंमें भी प्राचीन स्थान हैं।

बहुरीबन्द एक प्राचीन नगर था जिनको कनिंघमने Tolemy टोलेमीका कहा हुआ थोलावन Tholaban नाम बताया है। तिवारमें प्राचीनताका चिह्न एक बड़ी नग्न जैन मूर्ति है जिसपर कलचूरी वंशका लेख है। तिगवान एक छोटा नगर बहरीबंदसे २ मील है। इसमें बहुतसे प्राचीन मंदिरके खण्डहर हैं जिनको रेलवेके ठेकेदारोंने नष्ट कर दिया है। रूपनाथमें अशोकका स्तंभ है। यहांके कुछ स्थानोंका वर्णन यह है—

(१) जबलपुर शहर—यहां कुछ जैन मूर्तियें खुरशैदजी कंपनीके बागमें एक मकानमें लगा दी गई है। इनकी खुदाई बहुत बढ़िया है। शहरको ४ मील गढ़ी है जो गोंद वंशकी राज्यधानी थी। इनका प्राचीन किला मदनमहल है जो कि टीला है। इसके नीचे मदनमहल नामका बड़ा नगर बसता था। इसको मदनसिंहने सन् ११००में बनवाया था। नागपुर म्यूजियममें एक लेखमें जबलपुरका नाम जबलीपाटन भी आया है।

(२) बहरीबंद—तहसील सिहोरा-सलामाबाद रेलवे स्टेशनसे पश्चिम १२ मील। यहां नगरके पास एक पीपल वृक्षके नीचे एक बड़ी जैन मूर्ति है जो १२ फुट २ इंच ऊंची है। आसनपर ७ लाइनका लेख है (कनिंघम रिपोर्ट नं० ९ पत्रे ३९) ३ री चौथी लाइन नष्ट होगई है। वह लेख जो पढ़ा या वह यह है—ल० १—संवत १० XX फाल्गुण वदी ९ सोम श्री मत् जयकर्णदेव विजय रा—

ल० २—जो राष्ट्रकूट कुलोद्भव महासमंताधिपति श्रीमद् गोल्हान देवस्य प्रवर्द्धमानस्य।

ल० ३—श्रीमद् गोल्हणथी........मय........—

इसका भाव यह है कि गोल्लष्टी राष्ट्रकूट वंशीय गोल्हन देवका सेनापति था। यह देश गोल्हनदेवके अधिकारमें था जो महाराज कलचूरी गयकर्णदेवके आधीन राज्य करता था। इसीका पुत्र नरसिंहदेव था जिसके भेराघाटका लेख सन् ९०७ है।

यह बहुरीबंद जबलपुरसे उत्तर ३२ मील कैमूरी पहाड़ीके किनारेपर है जो १२० फुट ऊँची है।

जबलपुर जिलेके गजटियर सन् १९०९में लिखा है कि यह बड़ी मूर्ति छः फुट चौड़ी है तथा लेखसे प्रगट है कि यहां श्री शांतिनाथका मंदिर ११वीं शताब्दीमें बना हुआ था।

(३) बड़गांव—तहसील मुड़वाड़ा। मुड़वाड़ासे उत्तर पश्चिम २७ मील व सलौना स्टेशनसे ६ मील जो कटनी बीना रेल लाइन पर है। यह जैनियोंका प्राचीन स्थान है। इनके मंदिर व प्रतिमाओंके खंड मिलते हैं।

एक जैन मंदिर नीचेसे २१ फुट ऊंचा है। इसमें एक लेख है जो बहुत घिस गया है, पढ़ा नहीं जाता (कनिंघम रिपोर्ट २१ सफा १०१ और १६३) कुछ जैन शिलालेखोंमें कलचूरीके कर्णदेव राजाका नाम आया है।

(४) दैमापुर—प्राचीन नाम देवपुर—सिहोरासे पूर्व १० मील। यहां अब भी बहुत सुन्दर खुदाईके पाषाण व मूर्तियें मिलती हैं। यहांसे २ मीलपर दोला ग्राम है उसके एक कूएकी भीतोंके आलोंमें यहांकी कई मूर्तियें रक्खी हैं—ये बहुत ही सुन्दर शिल्पकी हैं—जिनमें बहुतसी जैनधर्मकी हैं। एक मूर्तिके आसनपर कलचूरी वंशका लेख संवत ९०७का है।

(५) कड़ीतलाई–प्राचीन नाम कर्णपुर–तहसील मुड़वाड़ा जहांसे उत्तरपूर्व २९ मील है। यहां ताम्रपत्र गुप्त संवत १७४ या सन् ४९३–९४ का है जिसमें उच्छकल्पुर (वर्तमान उचहरा) के महाराज जयनाथका उल्लेख है। यह कैमूर पहाडीकी पूर्व ओर मेहरसे दक्षिणपूर्व २२ मील व उछहरासे दक्षिण ३१ मील है। यहां वहुतसे मंदिरोंके ध्वंश हैं, उनमें एक नग्न जैन मूर्ति भी है। जबलपुरके म्यूजियममें कड़ीतलाईका एक लम्बा शिलालेख है। जिसमें चेदी वंशके युवराजदेव और लक्ष्मणराजके नाम हैं।

(६) मझोली–तहसील सिहोरा। सिहोरा रेलवे स्टेशनसे १४ मील–यह एक ग्राम है यहां प्राचीन मंदिर है खंडित पाषाण और मूर्तियोंमें एक नग्न जैन मूर्ति भी है जिससे विदित है कि जैन मंदिर था। यह चेदी वंशकी पुरानी राज्यधानी तिवारसे २२ मील उत्तरको है। तिवारसे विल्हारी तक पुरानी सड़क गई है। उसीपर यह ग्राम है।

(७) तिवार–जबलपुरसे पश्चिम करीब ८ मील यह ग्राम संगमर्मरकी चट्टान पर वसा है। गढ़के पास है। प्राचीन नाम त्रिपुरा है। यहांसे दक्षिण पूर्व आध मीलपर त्रिपुराके प्राचीन नगरके खंडहर हैं जिसको कलचूरी राजा कर्णदेवने ११वीं शताब्दीमें करणावती या करणवेल नाम दिया था। तिवार ग्राममें बहुतसे खंडित पाषाण हैं तथा तीन नग्न दिगम्बर जैन मूर्तियें हैं–उनमें एक श्री आदिनाथकी है जिनके साथ दो नग्न मूर्तियें और हैं तथा दो मूर्तियें खडगासन २॥ फुट ऊंची हैं जो किसी स्तम्भमें लगी थीं। यहां बालसागर नामका बड़ा तालाव है उसके

आलेमें कुछ बढ़िया मूर्तियें विराजित हैं जिनमें एक जैनधर्मकी है। ऊपर तीर्थंकर हैं नीचे एक स्त्री है जिसकी भुजाओंमें एक बालक है जिसके नीचे एक लेख है उसमें लिखा है कि मानदित्य-की स्त्री मोना नित्य प्रणाम करती है—अक्षर १२वीं शताब्दीके हैं।

नं० नोट—ऐसी मूर्तियां मानभूम जिले विहारमें कई स्थानोंमें देखी गई हैं। देखो (प्राचीन जैन स्मारक बंगाल, विहार, उड़ीसा पृष्ठ ५२) तथा एक मूर्ति राजशाही (बंगाल) के वरेन्द्ररिसर्च इंस्टीट्यूटके मकानमें विराजित है (देखो बंगाल वि० उड़ीसा प्राचीन जैन स्मारक पृष्ठ १३१)

कनिंघमसाहबकी रिपोर्ट नं० ९से नीचेका हाल विदित हुआ।

(८) भूमार—उचहरासे पश्चिम ९ मील उंचाईपर बसा है। यहां एक प्रसिद्ध स्तंभ है जो गाढ़े लाल बालू पाषाणका है जिसको ठाढ़ा पत्थर कहते हैं इसके नीचे भागमें गुप्त समयके अक्षरोंका ९ लाइनका लेख है जिनमें भिन्न२ वंशके दो राजाओंके नाम हैं उनमेंसे एक उचहराके ताम्रपत्रके प्रसिद्ध राजा हस्तिन् हैं और दूसरे करीतलाईके ताम्रपत्रके राजा जयनाथके पुत्र सर्व्व-नाथ हैं।

ये दोनों राजा समकालीन थे—इन राजाओंके नाम नीचे लिखे ९ शिलालेखोंमें आए हैं।

नं०	नाम राजा	गुप्त संवत	कहां रक्खे हैं
१	राजा हस्तिन्	१५६	बनारस कालेज
२	,,	१७२	अलाहाबाद म्यूजियम
३	राजा जयनाथ	१७४	कनिंघम साहबके पास

४	राजा जयनाथ	१७७	राजा उचहराके पास
५	राजा हस्तिन्	१९१	राजा उचहराके पास
६	„ सर्वनाथ	१९७	„
७	„ संखभ	२०९	„
८	„ सर्वनाथ	२१४	कनिंघम साहबके पास
९	राजा हस्तिन् और सर्वनाथ		भूभारके स्तम्भपर

नं० ८के शिलालेखमें पृष्ठपुरी नाम आया है।

(२) पटेनीदेवी—पिथौराकी बड़ी देवी जिसको आजकल पटैनीदेवी कहते हैं। इसकी ४ भुजाएं हैं व साथमें बहुतसी नग्न मूर्तियां हैं जिससे यही समझमें आता है कि यह जैन देवी होनी चाहिये। समुद्रगुप्तके एक शिलालेखमें पृष्टपुरक, महेन्द्रगिरिक, उछारक और स्वामीदत्त नाम हैं। इनमें पहले तीन क्रमसे पिथौरा, महियर और उछहराके लेखोंसे मिलते हैं यह पटेनीदेवी उछहरासे ८ मील है व पिथौरासे पूर्व ४ मील है। इस देवीके चारों तरफ मूर्तियां हैं। ५ ऊपर, ७ दाहनी, ७ बाईं व ४ नीचे सर्व २३ हैं। इस देवीकी चार भुजाएं टूट गई हैं, इनके पास नाम भी १०वीं व ११वीं शताब्दीके अक्षरोंमें लिखे हैं। जो मूर्तियां ५ ऊपर हैं उनपर नाम हैं बहुरूपिणी, चामुराड, पद्मावती, विजया और सरस्वती। जो सात बाईं तरफ हैं उसके नाम हैं अपराजिता, महामूनसी, अनन्तमती, गंधारी, मानसिजाला, मालनी, मानुजी तथा जो सात दाहनी तरफ हैं उनके नाम हैं जया, अनन्तमती, वैराता, गौरी, काली, महाकाली और वृंनसकला। (नीचेके ४ नाम इस रिपोर्टमें नहीं लिखे हैं)। द्वारपर बाहर तीन मूर्तियां पद्मासन हैं।

मध्यकी छत्रसहित श्री आदिनाथजीकी है। आसनपर बैलका चिन्ह हैं, दाहनी व बाईं तरफकी मूर्तियोंके आसनपर सर्पके चिन्ह हैं तथा दाहनी मूर्तिपर सात फण व बाईंपर पांच फण हैं। ये तीन मूर्तियां प्रगटरूपसे जैनकी हैं इससे मुझे पक्का विश्वास होता है कि यह पटेनीदेवी जैनियोंकी है। "I feel satisfied that the enshrined goddess must belong to Jains." इस देवीके दोनों तरफ कायोत्सर्ग आसन नग्न जैन मूर्तियोंकी दो लाइनें हैं। ये अवश्य जैनकी हैं, यह मंदिर लेखके समयसे बहुत पुराना है। (कनिंघम रिपोर्ट नं० ९)

सं नोट-मालूम होता है कि मध्यमें देवीकी मूर्ति न होकर किसी तीर्थंकरकी जैन मूर्ति होगी जिसे देवी मान लिया गया है। इसकी जांच अच्छी तरह होनी चाहिये।

(१०) विलहारी-प्राचीन नगर-कटनीसे पश्चिम १० मील भरहुत और जबलपुरके मध्यमें प्राचीन नाम पुष्पवती है। यहां राजा गोविंदराव संवत ९१९ या सन् ८६२में राज्य करते थे।

(११) रूपनाथ-वहुरीवन्दसे दक्षिणपश्चिम १३ मील तथा सलेमाबाद स्टे०से पश्चिम १४ मील। यहां राजा अशोकका शिला-स्तम्भ है।

(१२) भरहुत-यहां बौद्ध स्तूप है। यह जबलपुर और अलाहाबादके मध्यमें है। सतना और उछहराके मध्य रेलसे २ मील करीब है। अलाहाबादसे १२० व जबलपुरसे १११ मील है।

(४) मांडला जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरपश्चिम जबलपुर, उत्तर पूर्व रीवां, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम—बालाघाट व सिवनी, दक्षिणपूर्व बिलासपुर और कबर्धा राज्य। यहां ५०५४ वर्गमील स्थान है।

यहां गढ़ी मांडलावंशने रामनगरके महलमें पांचवीं सदीमें राज्यप्रारम्भ किया तब जादोराय राजपूतने जो गोंद राजाका सेवक था उसकी कन्याको विवाहा और उसके पीछे राजा हुआ। इस वंशमें अंतिम राजा संग्रामसिंह सन् १४८०में हुआ। दुर्गावतीकी वीरता—सन् १५६४ में जब असफखांने चढ़ाई की तब उसकी रानी दुर्गावती जो अपने छोटे बच्चेकी प्रतिनिधिरूपसे राज्य करती थी निकली और सिंगोरगढ़के किलेके पास युद्ध किया। पराजित होनेपर वह मांडलामें गढ़के पास आई और उसने अपना दृढ़ बल प्रगट किया। वह हाथीपर चढ़कर युद्ध करने लगी। इसने अपनी सेनाको वीरता दिखानेको प्रेरित किया। स्वयं सेनापतिका काम किया—उसकी आंखमें लाल घाव होगया तब भी उसने पीछा न दिखाया। अन्तमें जब उसने देखा कि उसकी सेना असमर्थ होगई तब उसने अपने हाथीके महावतसे कटार लेकर अपनी छातीमें मारी और वह मर गई। फिर मुसलमानोंका राज्य हो गया।

इसका प्राचीन नाम महिषमंडल या महिषावती संस्कृत साहित्यमें आता है। यह राजा कार्त्तवीर्यका राज्यस्थान रहा है।

(१) कर्करामठ मंदिर—तहसील डिन्डोरी, डिन्डोरीसे १२ मील। यहां किसी समय पांच मंदिर थे उनमेंसे एक मौजूद है।

यह विना गारेके फटे हुए पाषाणोंसे बना है और अन्य ध्वंश स्थानोंकी तरह यह भी शायद जैनियोंका ही कार्य है। यहां बहुत सुन्दर शिल्पकी जैन मूर्तियां हैं। डिन्डोरीसे ९ मीलपर भी दक्षिण और नौमीसे १३ वीं शताब्दीके मध्यके जैन मंदिर हैं।

(२) देवगांव—नर्वदा नदी और बुढ़नेरके संगनपर मांडलासे उत्तर पूर्व २० मील यहां भी प्राचीन मंदिर हैं।

(३) रामनगर—यहां आठ राजाओंका राज्य होरहा है—यहां भी कुछ ध्वंश स्थान हैं।
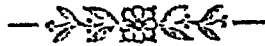
[५] सिवनी ज़िला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तर—नरसिंहपुर, जबलपुर, पूर्व—मांडला, बालाघाट और भंडारा, दक्षिण—नागपुर, पश्चिम—छिंदवाड़ा—यहां ३२०६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—सिवनीमें एक ताम्रपत्र मिला है जिससे जाना जाता है कि शतपुरा पहाड़ीके मैदान पर वाकतक वंशके राजाओंकी एक शाखा तीसरी शताब्दीसे राज्य कर रही थी—उसमें वंश संस्थापकका नाम विंध्यशक्ति है—ऐसे ही लेख अजन्ताकी गुफाओंमें हैं।

पुरातत्त्व—तालुका सिवनीके घनसोर स्थानपर बहुतसे जैन मंदिर हैं। सिवनीसे २८ मील आष्टामें वरघाटपर तीन मंदिर पाषाणके हैं। ऐसे ही लखनादोन पर हैं। कुरईके पास बीसापुरमें गोंद राजा भोपतकी विधवा सोना रानीका बनवाया हुआ पुराना मंदिर है। मुख्य स्थान ये हैं।

(१) चावरी—तहसील सिवनी, यहांसे दक्षिण पश्चिम ६

मील। यह परवार जैनियोंका प्राचीन स्थान है। पुराने जैन मंदिरोंके ध्वंस हैं।

(२) छपारा—सिवनीसे उत्तर २१ मील। तहसील लखनादोन। यहां जैनियोंके मंदिर हैं।

(३) घनसोर—तहसील सिवनी, यहांसे उत्तर पूर्व ३० मील व केवलारी स्टेशनसे ६ मील। यहां लनेती नदीके तटपर १॥ मील तक जैन मंदिरोंके ध्वंस स्थान हैं। अब केवल पाषाणोंके ढेर हैं। कुछ पाषाण सिवनीके दूल सागरकी सीढ़ियोंमें लगे हैं। वे बड़े सुन्दर हैं। कुछ जैन मूर्तियें नवीन जैन मंदिरोंमें हैं। खास घनसोरमें एक बहुत सुन्दर और बड़ी जैन मूर्ति है जिसको ग्रामके लोग नांगा बाबाके नामसे पूजते हैं। ये सब शिल्प नौमी शताब्दीके मालूम होते हैं।

(४) लखनादोन—सिवनीसे उत्तर ३८ मील। यहां जैन मंदिरोंके ध्वंश हैं, यहांकी कुछ मूर्तियें नागपुर म्यूजियममें हैं। इस ग्रामसे १ मील एक पहाडीं या गढ़ी सौनतौरियाके नामसे है, इसपर किला था। एक पाषाण दो भागोंमें टूटा हुआ मिला था जिसपर छोटा लेख था। इस लेखमें विक्रमसेनका नाम आता है जिसने जैन तीर्थंकरकी भक्तिमें मंदिर बनवाया। यह त्रिविक्रमसेनका शिष्य था। त्रिविक्रम अमृतसेनका शिष्य था। अक्षर १० वीं शताब्दीके हैं।

(५) सिवनी शहर—यहां सुन्दर जैन मंदिर हैं। जिनको शुक्रवारी मंदिर कहते हैं। इनमेंसे एकमें, एक प्राचीन जैन मूर्ति सन् १४९१की चावरीसे लाई हुई विराजमान है।

(२) नर्बदा विभाग।

[६] नरसिंहपुर जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तर—भूपाल, सागर, दमोह, जबलपुर, दक्षिण—छिंदवाड़ा, पश्चिम—हुशंगाबाद, पूर्व—सिवनी और जबलपुर। यहां १९७६ वर्ग मील स्थान है—

यहांके मुख्य स्थान हैं—

(१) बरहटा—नरसिंहपुरसे दक्षिण पूर्व १४ मील। यहां बहुतसे प्राचीन पाषाण स्तंभ व मूर्तियें मिली थीं इनमें कुछ नरसिंहपुरके टाउनहालके बागमें हैं और कुछ मूर्तियें वहांपर हैं वे जैन तीर्थंकरोंकी हैं। यह बहुत प्राचीन स्थान है—ये दि० जैनकी मूर्तियां कुछ बैठे कुछ खड़े आसन हैं। वर्तमानमें वहां ६ ऐसी मूर्तियें हैं। एक पर चंद्रका चिन्ह है इससे वह चंद्रप्रभु भगवानकी है। वहांके हिन्दू लोग इनको पांच पांडव और कृष्ण मानकर पूजते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि इनके पूजनेसे पशुओंके रोग, शीतला, व दूसरे संक्रामक रोग चले जाते हैं। यहां बैशाख सुदीमें एक सप्ताहतक मेला भरता है। प्रबन्ध जबलपुरके राजा गोकुलदास करते हैं। ये मूर्तियें एक छोटे घेरेमें विराजित हैं। सबसे बढ़िया मूर्तियें यात्री लोग बर्लिन और बरसाको यूरोपमें लेगए।

Best of sculptures said to have been taken to Berlin and Warsa by travellers.

(२) तेंदूखेडा—तालुका गाडरवारा। नरसिंहपुरसे उत्तर पश्चिम २२ मील। यहां एक जैन मंदिर है जिसमें पत्थरकी खुदाई

अच्छी है । प्राचीनकालमें यह लोहेकी कारीगरीके लिये प्रसिद्ध था । पासमें लोहेकी खानें थी । ग्राममें बहुत लुहार काम करते थे अब बहुत कम लोहा निकलता है । यह कारीगरी अब मर गई है ।

[७] हुशंगाबाद जिला ।

इसकी चौहद्दी है, उत्तरमें भूपाल इन्दौर, पूर्वमें नरसिंहपुर, पश्चिममें नीमाड़ दक्षिणमें छिंदवाड़ा, बेतूल और बरार ।

यहां ३६७६ वर्ग मील स्थान है ।

इतिहास—यहां राष्ट्रकूटोंका एक ताम्रपत्र मिला है । जिसमें लिखा है कि राष्ट्रकूट राजा अभिमन्युने पंच मढीसे ४ मील पेठं पंगारकमें स्थित दक्षिण शिवके मंदिरको उन्तिवातक नामका ग्राम भेटमें दिया । सातवीं शताब्दीमें रीवां राज्यके नैनपुरमें राष्ट्रकूट वंश स्थापित हुआ । राठोर राजपुत यही राष्ट्रवंशी राजा हैं ।

पुरातत्व—यहां भिन्न २ स्थानोंपर कुछ मूर्तियां मिली हैं । सबसे अधिक उपयोगी एक मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी फणसहित जैन मूर्ति है जो सन्खेरामें मिली व दूसरी एक बड़ी मूर्ति सुहागपुरमें मिली है ।

(१) सुहागपुर—हुशंगाबादसे ३२ मील पूर्व है । इसका प्राचीन नाम शोणितपुर है राजा भोजके भाई मुंजने अपनी राज्यधानी उज्जैनसे बदलकर यहां स्थापित की ।

(२) टिमरणी—ष्टे० G. I. P. हुशंगाबादसे ९१ मील है । यहां एक खंडित जैन मूर्ति संवत १२६९ या सन् १२०८ की है ।

[८] नीमाड जिला :

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है। उत्तरमें इंदौर, धार, पश्चिममें इन्दौर, खानदेश, दक्षिणमें खानदेश, अमरावती और अकोला, पूर्वमें हुशंगाबाद और बेतूल। यहां पहाड़ी और मैदान बहुत है।

इतिहास—सन् ५८३ तक यहां गुप्त और हूनोंने राज्य किया फिर थानेश्वर और कन्नौजके बर्द्धन वंशने सन् ६४८ तक फिर वाकतक राजाओंने राज्य किया, जिनके लेख अजन्टाकी गुफा, अमरावती, सिवनी और छिंदवाड़ामें मिलते हैं। नौमीसे १२ वीं शताब्दी तक धारके परमारोंने राज्य किया। यहां सबसे प्राचीन शिलालेख परमार राजाओंका नानधातामें मिला है इसमें लिखा है कि सन् १०५५ में परमार या पंवार राजा जयसिंहदेवने अमरेश्वरके ब्राह्मणको एक ग्राम भेटमें दिया। दूसरा शिलालेख सन् १२१८का हरसूद्में मिला जिसमें धारके राजा देवपाल देवका नाम है। तीसरा मिद्धवरके मंदिरमें १२२५ का मिला जिसमें देवपालदेवका नाम है। वहीं एक और मिला सन् ११२६ का जिसमें राजा जयवर्मनका नाम है। सातवां परमार राजा भोज बहुत प्रसिद्ध हुआ है जो राजा मुंजका भतीजा था। राजा भोज सन् १०१० ई० में प्रसिद्ध हुए। इसने ४० वर्ष तक राज्य किया।

यहांके प्राचीन स्थान हैं।

(१) खंडवा—प्राचीनकालमें जैन समाजका प्रसिद्ध स्थान रहा है। बहुतसे सुन्दर पाषाण जो जैन मंदिरोंसे लाए गए हैं शहरके मकानोंमें दिखाई देते हैं। टोलैमीने इसका नाम कोग्नबन्द

लिखा है। अरबके विद्वान अलबेरुनीने इसे ११ वी १२ वीं शताब्दीमें खंडवाहो लिखा है, तथा बताया है कि यह जैन पूजाका महान स्थान था।

यह १५१६में मालवाकी राज्यधानी थी इसे जसवंतराव होलकरने सन् १८०२ में जला डाला फिर सन् १८५८ में इसे तांतियाटोपीने जलाया। जैन पाषाण चार सरोवरोंमें मिलते हैं—रामेश्वरकुंड, पद्मकुंड, भीमकुंड और सूर्यकुंड। सबसे बढ़िया जैन मूर्त्तियें पुराने खंडवाके किलेमें पद्मकुंड पर मिलती हैं (कनिंघम जिल्द ९ पृ० ११३)

(२) बरहानपुर—यह १६३५ में बहुत बड़ा नगर था Tavernier टेवरनियर यात्री सूरतसे आगरा जाते हुए सन् १६४१ और १६५८में इस नगरमें होकर गया था। वह लिखता है—

" In all the province an enormous quantity of very transparent muslins are made, which are exported to Persia, Turkey, Muscovie, Poland, Arabia, Grand Cairo & other places, some are dyed with various colours and with flowers. "

भावार्थ—सब प्रांतभरमें बहुत महीन मलमलें बहुत अधिक बनती हैं जो यहांसे फारस, टर्की, मस्कौ, पोलेंड, अरब, महानकैरो और दूसरे स्थानोंपर भेजी जाती हैं। कुछमें नाना प्रकारके रङ्ग दिये जाते हैं कुछमें फूल बनाए जाते हैं।

(३) असीरगढ़ किला—तहसील बरहानपुर, खण्डवासे २९ व बरहानपुरसे १४ मील है। चांदनी रेलवे स्टेशनसे ७ मील। यह एक पहाड़ी है जो ८५० फुट ऊँची है। यहां कई राजपूत

वंशोंने राज्य किया है । एक प्राचीन जैन मंदिरका स्तम्भ खोदनेसे मिला है, जिससे प्रगट होता है कि यह शायद उसी जैन वंशके हाथमें था जिनके प्राचीन मकान खण्डवामें बनाए गए थे। इस स्तंभपर पांच राजाओंके नाम हैं। उपाधि वर्मा है, जिनमेंसे दोने गुप्त राजाओंकी कन्याएं १० वीं या ११ वीं शताब्दीके अनुमान विवाही थीं। किलेका नाम आसा या आसापूरणीसे या शायद असी या हैहय राजाओंके वंशकी प्राचीन उपाधिसे निकला हो। ये हैहय राजा इस देशमें महेश्वरसे लेकर नर्वदा तटपर सन् ई० ५००के पहलेसे राज्य करते थे। (Tod's Vol. II. P. 442). इस असीरगढ़की चट्टानों तथा मकानोंपर बहुतसे लेख हैं (C. P. Antiquarian journal No. II)

(४) मानधाता—तालुका खंडवा, यहांसे ३२ मील, मोरटक्का ष्टेशनसे पूर्व ७ मील। पहाड़ीके ऊपर प्राचीन ऐश्वर्ययुक्त वस्तीके चिह्न रूप ध्वंश किले व मंदिर हैं। मुख्य मंदिर सिद्धनाथका है। ओंकारजीका मंदिर हालका बना है परन्तु जो बड़े २ स्तम्भ इसमें लगे हैं कुछ प्राचीन इमारतोंसे लाए गए हैं। नदीके उत्तर तटपर कुछ वैष्णव और जैनके मंदिर हैं। मानधाताके राजा भीलाल हैं जो अपनी उत्पत्ति चौहान राजपूतोंसे बताते हैं। चौहानोंने इसे भील सर्दारसे सन् ११६५ में ले लिया था।

सिद्धवरकूट—पहाड़ीपर प्राचीनकालमें स्थित पुराने जैन मंदिरोंके ध्वंश स्थान हैं। अब जैन जातिने मंदिरोंका नवीन दृश्य प्रगट कराया है। प्राचीन मंदिरमें कुछ मूर्तियोंपर ता० १४८८ हैं। बहुतसी मूर्तियां श्री शांतिनाथ भगवानकी हैं। पर्वतकी चोटीपर

एक पाषाण है जिसको वीरखीला कहते हैं व नीचे भैरोंकी चट्टान् है। यह सिद्धवरकूट जैनियोंका बहुत प्राचीन तीर्थ है। यहांसे गत चतुर्थकालमें दो चक्री दस कामदेव और ३॥ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं।

प्रमाण—प्राकृत—

रेवाणइए तीरे पश्चिम भायम्मि सिद्धवरकूडे।
दो चक्री दहकप्पे आहुट्टयकोड़ि णिव्वुदे वंदे॥ ११ ॥

(प्राकृत निर्वाणकांड)

भाषा—रेवा नदी सिद्धवरकूट, पश्चिम दिशा देह तह छूट।
द्वैचक्री दस काम कुमार, ऊठ कोड़ि वंदों भवपार॥

(भैया भगवतीदासकृत सं० १७४१)

[९] वेतूल जिला।

इसकी चौहद्दी इस भांति है—उत्तर पश्चिम हुशंगाबाद, पूर्व छिंदवाड़ा, दक्षिण—अमरावती। यहां ३८२६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—यहां पहले राजपूतवंशी फिर गोंद लोगोंने राज्य किया। विदनूरसे अनुमान ४ मील खेरलाका किला है। १३०० ई०में मुकुन्दराव स्वामीने विवेकसिंधु नामकी पुस्तक बनाई है उसमें खेरलाके गोंद राजाओंका वर्णन है। किलेमें मुकुंदरावकी समाधि है। यहां गुप्त सं० १९९ या सन् ई० ५१८ का ताम्रपत्र वेतूलके कुरमी जमीदारके पास है, जिसमें नागोदके राजा द्वारा त्रिपुरा (जबलपुर)में एक ग्रामके दानका वर्णन है। 'मुलताईके

किसी गोहाना' के पास तीन ताम्रपत्र सन् ७०९ के हैं, जिसमें राष्ट्रकूट राजा नंदराज द्वारा-एक ब्राह्मणको ग्राम दानका वर्णन है।

(१) कजली कनोजिया—तहसील मुलताई। छिंदवाड़ा जानेवाली सड़कपर विदनूरके पूर्व २४ मील वेल नदीपर मंदिरोंके ध्वंश हैं उनमें जैन मूर्तियां अच्छी कारीगरी की हैं। उनमेंसे कुछ नागपुर म्यूजियममें गई हैं।

(२) श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र—वर्तमानमें जैन यात्रीगण एलिचपुर होकर जाते हैं जहां मुर्तजापुर (बरार प्रांत) से रेल गई है। एलिचपुरसे ६ मीलके अनुमान है। यह पर्वत बहुत मनोहर है पानीका झरना वहता है। ऊपर वहुतसे दिगम्बर जैन मंदिर हैं उनमें बहुतसोंमें प्राचीन मूर्तियें हैं। वार्षिक मेला होता है। यहांसे ३॥ करोड़ मुनि भिन्न २ समयमें इस कल्प कालमें मोक्ष पधारे हैं। जिसका आगम प्रमाण यह है।

प्राकृत—अच्चलपुर वर णयरे ईसाणे भाए मेढ़गिरि सिहरे।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाण गया णमो तेसिं॥ १६॥
(प्राकृत निर्वाणकांड)

अचलापुरकी दिशा ईशान, तहां मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय॥१८॥
(भैया भगवतीदास कृत)

इसके प्रबंधकर्ता सेठ लालासा मोतीसा एलिचपुर हैं। हीरा-लाल बी० ए० कृत सी० पी० लेख पुस्तक १९१६ में सफा ७९ पर दिया है कि यह मुक्तागिरि बदनूरसे ६७ मील है। जैनियोंका पवित्र तीर्थ है। ऊपर ४८ मंदिर हैं जिनमें ८९ मूर्तियां

हैं । नीचे नए बने मंदिरमें २९ मूर्तियां हैं जो सन्. १४८८ से १८९३ तककी हैं। कुछ मंदिरोंमें उनके जीर्णोद्धार किये जानेके लेख हैं । एकमें सन् १६३४ है । हालमें एलिचपुरके बापूशाहने २२०००) खर्चकर सन् १८९६ में जीर्णोद्धार कराया ।

[१०] छिंदवाडा जिला ।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तर हुशंगाबाद, नरसिंहपुर, पश्चिम बेतूल, पूर्व सिवनी, दक्षिण नागपुर—यहां ४६३१ वर्ग मील स्थान है—

इतिहास—इसका शासन दक्षिणके मलखेडमें राज्य करनेवाले राष्ट्रकूट वंशके आधीन था । एक ताम्रपत्र इस वंशका बेतूलके मुलताईमें, दूसरा वर्धाकी देवलीमें मिला है। देवलीका ताम्रपत्र सन् ९४० कृष्ण तृ० महाराजके राज्यका है। इसमें कथन है कि एक कनड़ी ब्राह्मणको तालपूरुनशक नामका ग्राम जो नागपुर नंदिवर्द्धन जिलेमें था भेटमें दिया गया । नागपुर नंदिवर्द्धन जिला छिंदवाडाके दक्षिण भागको कहते थे । छिंदवाड़ामें नीलकंठी पर एक स्तम्भ मिला है, जिसपर लेख है कि यह कृष्ण तृ० राजाके राज्यमें बना । यह नीलकंठी महगांवसे अनुमान ४० मील है इसीके निकट तालपूरनशक ग्राम है । नीलकंठीमें ७वीं व ८वीं शताब्दीके मंदिरोंके ध्वंश है।यह स्तम्भ सड़कके किनारे खड़ा है। छिंदवाड़ाके अशवुर्नर सरोवर पर कुछ प्राचीन पाषाण नीलकंठीसे लाए हुए रक्खे हैं । राष्ट्रकूट वंशी राजा सोमवंश या यदुवंशकी संतान हैं ऐसा दूसरा लेखोंसे प्रगट है ।

देवगढ़—जो छिंदवाड़ासे दक्षिण पश्चिम २४ मील है। वहां छिन्दवाड़ा और नागपुरका प्राचीन राज्यवंशी स्थान था। यह इतना प्रभावशाली हुआ कि इसने मांडला और चांदाको अपने आधीन किया था।

(१) छिन्दवाडा—यहां गोलगंजमें जैन मंदिर हैं।

(२) मोहगांव—ता० सौसर—यहांसे ९ मील, छिंदवाड़ासे ३७ मील। १० वीं शताब्दीके राष्ट्रकूट लेखमें इसका नाम मोहनग्राम है। यहां दो प्राचीन मंदिर हैं।

(३) नीलकण्ठी—ता० छिंदवाड़ा—यहांसे दक्षिण पूर्व १४ मील कुछ मंदिरोंके ध्वंश हैं। एक मुख्य मंदिरके द्वारपर एक लेख सहित स्तम्भ है, जिस मंदिरके कोटकी भीत २६४ फुट लंबी और १३२ फुट चौड़ी है।

नोट—इन स्थानोंमें जैन चिन्होंको ढूंढ़ना चाहिये।

(३) नागपुर विभाग ।

[११] वर्धा जिला ।

इसकी चौहद्दी–उत्तरमें अमरावती, पश्चिममें अमरावती व यवतमाल, दक्षिणमें चांदा, पूर्वमें नागपुर। यहां २४२८ वर्ग मील स्थान है।

यहां तीसरी शताब्दी तक अंध्र राज्यने राज्य किया। सन् ११३ ई०में विलिवायुकुर द्वि० का राज्य बरारमें था।

देवली–वर्धासे ११ मील व देवगांवसे ८॥ मील है। यहां राष्ट्रकूट वंशका एक ताम्रपत्र सन् ९४० का मिला है।

---

[१२] नागपुर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है–उत्तर छिंदवाड़ा, शिवनी। पूर्व भंडारा, दक्षिण पश्चिम चंदा और वर्धा। उत्तर पश्चिम अमरावती। यहां ३८४० वर्गमील स्थान है।

इतिहास–तीसरीसे छठी शताब्दी तक यह जिला वाकातक राजपूत राजाओंके अधिकारमें था जिनके राज्यमें शतपुरा मैदान व बरार भी शामिल था।

(१) रामटेक–नागपुरसे उत्तरपूर्व २४ मील पहाड़ीके नीचे प्राचीन मंदिर हैं। उनमें कुछ जैन मंदिर हैं, एकमें श्री शांतिनाथकी कायोत्सर्ग १८ फुट ऊंची मूर्ति दर्शनीय मनोज्ञ है।

(२) पर सिवनी–ता० रामटेक नागपुरसे उत्तर १६ मील। यहां एक किलेके ध्वंश हैं, यहां श्वेत पाषाणका एक जैन मंदिर है मूर्ति भी श्वेत पाषाणकी है। अभी भी जैन लोग पूजते हैं।

(३) सावरगांव—नागपुरसे ३६ मील, काटोलसे उत्तर १० मील। यहां एक सुन्दर महावीरस्वामीका मंदिर है। नोट—यहां जैन शब्द नहीं है, जांचना चाहिये।

(४) उमरेर नगर—नागपुरसे दक्षिणपूर्व २९ मील। यहां १०००० कुष्टी लोग हैं जो हाथसे रेशमकी किनारी सहित रुईके कपड़े बुनते हैं। यहांसे प्रतिवर्ष २ लाख रुपयेका कपड़ा बाहर जाता है। नोट—इनमें कुछ जैन कुष्टी होंगे जैसा सेन्ससससे प्रगट है तलाश करना चाहिये।

(४) नागपुर—यहां कई जैन मंदिर हैं। यहांके म्यूजियममें जैन मूर्तियें इस तरहपर कौजन साहबकी रिपोर्टके अनुसार सन् १८९७ में थीं।

दो जैन मूर्तियां हुशंगाबादसे, कुछ जैन मूर्तियोंके भाग खंडवासे, कुछ जैन मूर्तियां बरहानपुरसे व कुछ जैन मूर्तियां नीमार, चिचोटी, बाघनदी और हांजीसे लाई हुई थीं।

नोट—बरहानपुरकी मूर्तियां अखंडित व पूज्य थीं जो वहांसे मिल गई हैं और परवारोंके दि० जैन मंदिरमें विराजमान हैं।

[१३] चांदा जिला।

चौहद्दी—उत्तरमें नांदगांव राज्य और भंडारा, नागपुर, वर्धा, पश्चिम और दक्षिणमें येवतमाल और निजाम राज्य, पूर्वमें वस्तर और कंकड़ राज्य व द्रुग। यहां १०१५६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—चन्दाके निकट भांदक ग्राम वाकातक वंशकी राज्यधानी थी जिनका शासन वरार, मध्यप्रांत नर्वदाके दक्षिण वाई गंगातक था। शिलालेखोंसे प्रगट है कि इन राजाओंने चौथीसे

बारहवीं शताब्दी तक राज्य किया फिर गोंद वंशका शासन हुआ। चन्दाके राजाओंको बल्लारशाही कहते थे। गोंद वंशके १९ राजाओंने १७५१ तक राज्य किया। १९ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें नौमा राजा बल्लालशाह हुआ। ११ वां हीरशाह हुआ, जिसने चन्दाका किला बनवाया था। इसका पोता कर्णशाह था जिसने हिंदू धर्म धारण कर लिया था (सं० नोट-मालूम होता है कि पहले ये राजा लोग जैनधर्मी होंगे क्योंकि भांदकमें जैन धर्मके बहुतसे स्मारक हैं)। आईने अकबरीमें कर्णशाहके पुत्रका वर्णन है। यह स्वतंत्र था, अकबरको कर नहीं देता था।

चन्द्राका प्राचीन नाम चंद्रपुर था।

पुरातत्व-यह जिला पुरातत्वकी सामग्रीसे पूर्ण है जिनमें कथनयोग्य जरूरी सामग्री भांदक, चंदानगर और मारकंडी पर हैं। भांदक, विंजवसनी, देवाल तथा घूगुमें गुफाके मंदिर हैं। बल्लालपुरके नीचे वर्धामें पाषाण मंदिर हैं। मारकंडी, नेरी, वर्हा, अरमोरी देवटेक, भटाल, भांदक, वैरगढ़, वघनक, केसलावारी, घोरघे पर प्राचीन मंदिर हैं। नोट-इन सबमें जैन स्मारक होंगे। जांच करनेकी जरूरत है।

(१) भांदक-तहसील वरोरा-यहांसे १२ मील, चन्दासे उत्तरपश्चिम १६ मील। यहां बहुत सुन्दर जैन मूर्तियोंके समूह इधरउधर ग्रामके अंत सरोवरके निकट विराजमान हैं। ग्रामसे दक्षिणपश्चिम १॥ मीलपर वीनासन नामकी बौद्ध गुफा है।

(२) देवलवाड़ा-भांदकसे पश्चिम ६ मील। पहाड़ीके ऊपर प्राचीन मंदिर व चार स्तम्भ हैं। चरणपादुका है, गुफाएं हैं। नोट-इसमें जैन चिन्ह अवश्य होने चाहिये, जांचकी जरूरत है।

[१४] भंडारा जिला।

चौहद्दी यह है। उत्तरमें बालाघाट, सिवनी। पूर्वमें छेरीकदन, खैरागढ़ व नांदगांव राज्य। पश्चिममें नागपुर, दक्षिणमें चांदा।

यहां ३९६९ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—राघोली (जि० बालाघाट) में जो ताम्रपत्र मिला है उसमें शैल वंशके राजाका नाम है। राज्यधानी—श्री वर्द्धनपुर। रामटेकके पास जो नगरधन है वह नंदिवर्द्धनका प्राचीन नाम है। इसे शायद इस वंशके राजाने बसाया हो। सन् ९४० के वर्धाके देवलीके राष्ट्रकूट ताम्रपत्रके अनुसार नगरधन एक प्रसिद्ध स्थान था। १०वीं शदीके अन्तमें भंडाराका एक भाग मालवाके परमार या पंवारके राज्यमें गर्भित था। सीनादल्दी (नागपुरमें) का पाषाण जो सन् ११०४-५ का है बताता है कि उनकी ओरसे नागपुरमें लक्ष्मणदेव अधिकारी थे।

यह बहुत सम्भव है कि नागपुर और भंडारामें जो वर्तमान परवार जाति है वह उन अधिकारियोंकी संतान हों, जिन्हें मालवाके राजाओंने यहां नियत किया हो।

It is possible that the existing Parwar caste of Nagpur and bhandara are a relic of temporary officers in Name of Kings of Malwa.

(See Bhandara Gazetteer (1908).

पुरातत्व—यहां तिह्रोता-खैरानें पाषाणके स्तम्भ हैं। अम-गांवके पास पद्मापुरमें प्राचीन इमारतें हैं। प्राचीन मंदिर अधिकतर हेमड्पंतके अदूयाल, चक्रनेती, करम्बी, पिंगलई व भंडारा नगरमें हैं।

(१) अदूयाल या अदूयार—भंडारासे दक्षिण १७ मील।

यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर प्राचीन है। यहां एक पुरुष प्रमाण कृष्ण पाषाणकी बहुत ही मनोज्ञ जैन मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी एक मकानकी नींव खोदते हुए मिली है।

भंडाराका प्राचीन नाम 'भानार' है ऐसा रतनपुरके सन् ११०८ के लेखसे प्रगट है। यह प्राचीन नगर था।

[१५] बालाघाट जिला।

चौहद्दी—उत्तरमें मांडल, पूर्वमें बिलासपुर, द्रुग। दक्षिणमें भंडारा। पश्चिममें सिवनी। यहां ३१३२ वर्ग मील स्थान है—

इतिहास—यहां लौजी स्थानपर हैहय वंशी राजाओंने राज्य किया था, जिनकी उत्पत्ति संवत् ४१५ या सन् ई० ३५८ के जादोरायसे थी। यह गढ़ाका राजा था। सन् ६३४में १०वां राजा गोपालशाह था जब मांडला प्राप्त हुआ था।

पुरातत्त्व—यहां कटंगीके पास वीसापुरमें, संखर, भीमलाट, भीरीके पास सावरझिरीमें प्राचीन स्मारक हैं।

(१) भीरी—यहां कुछ जैन मूर्तियें हैं।

(२) बाराशिवनी—चुनई नदीपर—यहां परवारोंके सुन्दर जैन मंदिर हैं।

(३) जोगीमढी—ग्राम धीपुर—बैहरसे उत्तर पश्चिम १५ व बालाघाटसे ४१ मील। यहां बौद्ध स्मारक हैं व मंदिर हैं। (शायद जैनके भी हों)

(४) धनमुआ—यहां बौद्ध शिल्पके प्राचीन मंदिर हैं।

(५) धीपुर—बैहरसे उत्तर पश्चिम १२ मील यहां प्राचीन मंदिर हैं।

(४) छत्तीसगढ़ विभाग।

[१६] दुग जिला।

चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें बिलासपुर, पूर्वमें रायपुर, दक्षिण कंकड राज्य व पश्चिममें खेरागढ़ नांदगांव राज्य, चांदा।

यहां स्थान ३८०७ वर्गमील है।

नागपुरा—ता० दुग—यहांसे उत्तर पश्चिम ९ मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर हैं और यह कथा प्रसिद्ध है कि आरंग, देवबलोदा और नागपुरामें एक ही रातको ये मंदिर बनवाए गए थे।

---

[१७] रायपुर जिला।

चौहद्दी यह है कि दक्षिण तरफ महानदीका तट, उत्तर पश्चिम सतपुरा पहाड़ी, दक्षिण पश्चिम महानदी तक खंडित देश।

यहां ११७२४ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—यहां हैहयवंशी, जो कलचूरीके नामसे प्रसिद्ध थे, बहुतकाल राज्य करने रहे। इनका मूल राज्य चेदी देश (चंबल नदी उत्तरपश्चिमसे लेकर चित्रकूटके उत्तरपूर्व कर्वी नदीतक) में था। बुन्देलखंडके दक्षिणपुर्वकी ओर पहाड़ियोंपर इनका आधिपत्य था। रतनपुरमें—इनका शिलालेख सन् १११४ का मिला है। चेदी राजा कोकल्लके अठारह पुत्र थे। पहला त्रिपुराका राजा था। छोटेमेंसे एकने कलिंग राजाका पुत्रत्व पाया। अपना देश छोड़ गया, उस देशको दक्षिण कौशल देश कहा। यहां चेदी वंशने १०वीं सदीसे सन् १७४० तक राज्य किया।

पुरातत्व–यहां बहुत स्मारक हैं। उनमेंसे आरंग, राजिन और सिरपुरके प्रसिद्ध हैं।

बढ़िया मंदिर सिहावा, चिपटी, देवकूट, धंतरी तहसीलमें बलोद जिलेके उत्तर पूर्व खतारी और नरायणपुर, रायपुरनगरके पास देवबलोदा और कुंवार पर हैं।

बौद्धोंके स्मारक द्रुग–राजिना, सिरपुर तथा तुरतुरिया पर हैं।

इस जिलेमें होकर एक बहुत पुरानी व प्रसिद्ध सड़क गंजम और कटकको जाती है। अब उसका पता भांदकके पाससे यहां होकर लगता है। भांदक पहले एक बड़ा नगर था।

(१) आरंग–ता० रायपुर–यहांसे २२ मील। यह जैन मंदिरोंके लिये प्रसिद्ध है। यहांके जैन मंदिरोंके बाहर जैन देवी देवताओंके चित्र हैं। एक मंदिरके भीतर तीन विशाल नग्न मूर्तियां कृष्ण पाषाणकी बहुत स्वच्छ कारीगरीकी हैं। यहां एक बड़ा नगर था व जैनियोंके बहुत मंदिर थे अब यह एक ही रह गया है। यह भी गिरजाता! यदि सर्वे करनेवाले लोहेकी सलाखोंसे रक्षित न करते। यह मंदिर देखने योग्य है। रायपुर गजटियर सन् १९०९के पृष्ठ २९२ पर इस मंदिरका चित्र दिया है। इसको भांददेवल कहते हैं। इस नगरके पश्चिममें एक सरोवरके तटपर एक छोटा मंदिर महामायाका है। यहां बहुतसी खंडित मूर्तियां रक्खी हैं। एक खंडित पाषाण है, जिसमें केवल १८ लाइन लेखकी रह गई हैं। इस मंदिरके वाड़ेके भीतर तीन नग्न जैन मूर्तियां हैं जिनपर चिन्ह हाथी, शंख व गैंडेके हैं जो क्रमसे श्री अजितनाथ, श्री नेमिनाथ व श्री श्रेयांशनाथकी हैं। (सन् १९०९) से पूर्व करीब ६ या ७ वर्ष हुए

यहां एक रत्नकी जैन मूर्ति मिली थी जो ५०००) में दीगई थी। ये सब स्मारक प्रगट करते हैं कि यह आरङ्ग जैनधर्मका वहुत प्राचीन और प्रसिद्ध स्थान था। यहां अग्रवाल बनिये रहते हैं। (आरङ्गके लेखोंके लिये देखो कनिंघम रिपोर्ट १७ सफा २१ यहां आठवीं शदीके दो ताम्रपत्रोंका वर्णन है) तथा देखो (वगलर रिपोर्ट जिल्द ७ सफा १६०)।

(२) वड़गांव—ता० महासमुद्र। यहांसे उत्तर पूर्व १०मील महानदीकी दाहनी तरफ। यहां अब भी रतनपुरके प्राचीन हैहय राजवंशीके वंशज रहते हैं।

(३) कुर्रा या कुंवर—रायपुरके उत्तर १४ मील। मंधर स्टेशनसे ४ मील। दक्षिण तरफ मिचनी सरोवर तटपर अब चार छोटे मंदिर हैं। पहले ग्राममें यहां बहुत वड़े २ मंदिर थे उनमें मुख्य दो जैन मंदिर थे जिनको खूबचन्द जैन वणिकने कुरहान नदीकी घाटी बनानेके लिये रीड कमिशनरको दे दिये थे। कई खुदे हुए पाषाण अब भी पड़े हुए हैं। कुछ जैन मूर्तियां भी रह गई थीं जो ग्रामके इधर उधर विराजित हैं। खूबचंद स्वयं कहते हैं कि उसने स्वयं इस ग्राममें तीन तथा मलकाममें दो जैन मंदिर गिरवा दिये थे।

(४) सिरपुर—(शिलालेखमें श्रीपुर) महानदीके दाहने तटपर। रायपुरसे पूर्व उत्तर ३७ मील। यह कभी एक बड़ा नगर था। यहां नौमी शताब्दीकी बनी हुई सुन्दर ईंटे पाई जाती हैं।

(५) रायपुर—यहां दुधाधारी मठ है, जिस मंदिरके आंगनमें सिरपुरसे लाए हुए पाषाण खंड पड़े हैं। ये बहुत सुन्दर बने हैं

और प्रमाणित करते हैं कि सिरपुरमें बौद्ध व जैनका बहुत ऐश्वर्य था।

(६) डूंगरगढ़–खैरागढ़ राज्यमें–रायपुरसे ९६ मील यह प्राचीन नगर कामंतीपुरका स्थान है। (कनिंघम रिपोर्ट १७वीं सफा २)

(७) मालकम–(देखो कनिंघम रि० ७ सफा १०८)। यहां प्राचीन सड़कका विस्तारसे कथन है। यह सड़क भांदक या देवलवाड़ा (प्राचीन कुंडलपुर) से देवटेक होकर पलासगढ, वंजारी (बड़ा बाजार लगता था) अम्बागढ़ चौकी, वालोद सोरार होती हुई गुरुरको गई है। यहां इसकी दो शाखायें हुई हैं। एक कांकिड़ व सिहावा होती हुई अशोक स्तंभ सहित जौगढ़के बड़े किलेमेंसे होकर गंजम (मदरास)की तरफ गई है। दूसरी शाखा धंतरी, रायपुर होकर महानद्दीके किनारे २ उत्तर तरफ सवारीपुर, सिवरी नारायण आदि होकर कटक गई है। आर० सर्वें जिल्द १७ कनिंघम (१८८४) से नीचेका हाल विदित हुआ—

कलचूरी वंश–मैंने रीवांसे उत्तरपश्चिम १० मील रायपुर और देहामें १२०० कलचूरियोंको पाया। इनके मुखियाओंको ठाकुर कहते हैं। ये अपनेको कालचूली राजपूत कहते हैं, ऐसा ही सर्कारी कागजोंमें लिखा जाता है। इनके मुख्य ठाकुरोंके नाम हैं। सासदूलसिंह, दलप्रतापसिंह व दरवीरसिंह। ये लोग कहते हैं कि ये हैहय वंशज, सहस्रार्जुनके वंशमें हैं। उनके बड़े यहां रायपुर, रतनपुरसे आए थे। दक्षिणमें राजा वज्जालदेव कलचूरी (सन् ११९३में) को काल्जराधिपति कहते हैं। ऐसा ही इधरके चेदी वंशज कलचूरी राजाओंको कहते हैं। इससे सिद्ध है कि दक्षिण

और उत्तरीय कल्चूरी एक ही वंशके हैं। सन् २४९ से लेकर १२वीं शताब्दी तक उन्होंने दाहल या नर्मदा प्रांतमें राज्य किया। उनका चिन्ह सुवर्ण वृषभध्वज था। कर्णदेव राजाकी मोहरपर एक वृषभ है उसके पास चार भुजाकी देवी एक हाथीपर है। हर ओर उसपर अभिषेक होरहा है।

---

[१८] बिलासपुर ज़िला।

चौहद्दी यह है—दक्षिण रायपुर, पूर्वदक्षिण रायगढ़ व सारनगढ़ राज्य, उत्तरपश्चिम शतपुरा पहाड़ी।

यहां ८३४१ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—यहांके शासक रतनपुर और रायपुरके हैहयवंशी राजपूत रहे हैं। जिनका सबसे प्रथम राजा मयूरध्वज हुआ है। इनके पास ३६ किले थे, इसीसे इस प्रांतको छत्तीसगढ़ कहते हैं। वीसवां राजा सन् १०००में सूरदेव व ४६वां राजा कल्याणशाह था जिसने १५३६से १५७३ तक राज्य किया।

पुरातत्व—विलासपुरसे उत्तर १६ मील रतनपुर—हैहयवंशका प्राचीन राज्यस्थान था। बहुत सुन्दर मंदिर जंजगिर, पाली व पेंडरासे ९ मील धनपुरमें हैं।

(१) रतनपुर—इसको १०वीं शताब्दीमें रत्नदेवने वसाया था। इसके ध्वंश स्थान १५ वर्गमीलमें हैं। ३०० सरोवर हैं व अनेक मंदिर हैं। यहां महामायाका मंदिर है जिसके पास बहुतसी मूर्तियोंका ढेर है, उनमें अनेक जैन मूर्तियां हैं।

(२) अदभार—चन्दनपुर राज्यमें विलासपुरसे ४० मील

देवीके प्राचीन मंदिरकी भूमिपर एक झोपड़ा है जिसमें एक जैन मूर्ति बैठे आसन है ।

(३) धनपुर—जमींदारी पेंडरा—यहांसे उत्तर ९ मील । यह भी प्रसिद्ध व प्राचीन स्थान है । धनपुर और रत्नपुर दोनोंको हैहय राजपूतोंने बसाया था । भीतर सरोवरसे उत्तर आध मील जाकर कई छोटे२ टीले हैं जो प्राचीन ध्वंश मकानोंसे ढके हुए हैं । इसके पश्चिम ॥ मीलपर छः मंदिरोंका समूह है । सरोवरके दूसरे तटपर चार बड़े मंदिरोंका समूह है जो देखनेसे जैनके मालूम होते हैं । इससे थोड़ी दूर एक संभवनाथके नामसे सरोवर है, जिसके तटपर बहुतसी जैन मूर्तियोंके खंड हैं । ये सब मंदिर कुछ पाषाणके कुछ ईंट और पाषाण दोनोंके हैं । ईंटें पुरानी रीतिकी बहुत बड़ी हैं जैसी सिरपुरमें मिलती हैं । कुछ प्राचीन वस्तुएं पेन्डरामें लाई गई हैं । यहां ४ वर्गमील तक खंड स्थान हैं । (कनिंघम रि० नं० ७ पत्र २२७)

(४) खरोद—महानदीसे १ मील व अकलतरा सड़कपर सिवरीनारायणसे ६ मील । यहां प्राचीन मंदिर हैं । सबसे बड़ा लक्ष्मेश्वरका है । इसमें चेदी सं० ९३३ या सन् ११८१का पुराना शिलालेख है जिसमें कलिंगराजसे लेकर रत्नदेव तृ०तक हैहय राजाओंके पूर्ण नाम हैं ।

(५) मल्लार या मलतार—ता० बिलासपुर—यहांसे दक्षिण पूर्व १६ मील । यह लीलागर नदीसे ८६० फुट ऊंचा है प्राचीन कालमें प्रसिद्ध स्थान था । बहुतसे प्राचीन मंदिर हैं जहां बड़ी२ नग्न जैन मूर्तियां हैं । उनमेंसे बहुतसी उठा ली गई हैं बहुत

इधर उधर पड़ी हैं। यहां कई शिलालेख मिले हैं, उनमेंसे एक रतनपुरके कलचूरी राजाओंके सम्बन्धका है जिसमें चेदी सं० ९१९ या ११६७ ई० है, नागपुर म्यूजियममें है।

(९) तुमन-ता० विलासपुर-यहांसे ६० मील। जमींदारी लाका रतनपुरसे ४९ मील। हैहय वंशी "जब छत्तीसगढ़ आए तब पहले यहीं वसे" ऐसा सन् १११४ के जजल्लदेव प्रथमके शिलालेखमें कहा है। उसके वड़े कलिंगराजने तुमनमें स्थान जमाया। रत्नदेवने जो जजल्लदेव देवका दादा था रतनपुरमें राज्यधानी स्थापित की थी।

---

(१९) संबलपुर जिला।

यहां पाटना राज्यमें कोन्धनके तोप वर्गनेमें तीतलगढ़ है। ग्रामसे एक मील करीब दूर धवलेश्वरका मंदिर है जिसके बाहर श्री पार्श्वनाथजीकी पाषाणकी मूर्ति है व एक बड़े कमरेके खंश हैं। (देखो सी० पी० कौजिन रिपोर्ट सन् १८९७ जिल्द १२)।

---

(२०) सरगुजा राज्य।

इस राज्यकी लखनपुर जमींदारीमें रामगढ़ पहाड़ी है। यह लखनपुरसे पश्चिम १२ मील है। "रामगढ़ पहाड़ी" यह २६०० फुट ऊंची है। बंगाल नागपुर रेलवेके खरसिया स्टेशनसे १०० मील है। यहां प्रतिवर्ष यात्री आते हैं। पहाड़के उत्तर भागके पश्चिमी चट्टानकी तरफ गुफाएं हैं। इसकी उत्तरी गुफाको सीता-बेंगा और दक्षिणी गुफाको जोगीमारा कहते हैं।

यहां दो लेख अशोककी लिपिके समान ब्राह्मी लिपिमें देखे गए हैं। जो लेख सीतावेंगा गुफामें हैं वह सन् ई० से पहले तीसरी शताब्दीके किसी नाटक काव्यकी प्रशंसामें हैं।

जोगीमाराका लेख मागधी भाषाकी चार लाइनमें है इसमें देवदासी और किसी चित्रकारका नाम है।

इस गुफाकी चौखटपर चित्रकारी है जिसका वर्णन इस प्रकार है—

भाग (१)—एक वृक्षके नीचे एक पुरुषका चित्र हैं, बाईं तरफ अपसराएं व गंधर्व हैं। दाहनी तरफ एक जलूस हाथी सहित है।

भाग (२)—बहुतसे पुरुष, गज, चक्र तथा अनेक प्रकारके आभूषण हैं।

भाग (३)—इसका आधा भाग स्पष्ट नहीं है। उसमें पुष्प, प्रासाद, सवस्त्र मनुष्य हैं। इसके आगे एक वृक्ष है उसपर एक पक्षी है और एक पुरुष, बालक है। इसके चारों ओर बहुतसे मनुष्य हैं जो खड़े है, वस्त्र रहित हैं जैसा बालक वस्त्र रहित है। मस्तककी बाईं तरफ केशोंमें गांठ लगी है।

भाग (४)—एक पुरुष पद्मासनसे बैठा है जो स्पष्टपने नग्न है इसके पास तीन मनुष्य सवस्त्र खड़े हैं इसीके बगलमें ऐसे ही पद्मासन नग्न पुरुष हैं और तीन ऐसे ही सेवक हैं। इसके नीचे एक घर है जिसमें चैत्यकी खिड़की है सामने १ हाथी है और तीन पुरुष सवस्त्र खड़े हैं। इस समुदायके पास तीन घोड़ोंसे जुता हुआ एक रथ है, ऊपर छतरी है। दूसरा एक हाथी सेवक सहित है। इसके दूसरे आधेमें भी पहलेके समान पद्मासन पुरुष

चैत्यखिड़की सहित गृह तथा हाथी आदि चित्रित हैं। (देखो इंडिया आर्किलो सर्वे रिपोर्ट १९०३-४ सफा १२३)।

सं० नोट-इसमें किनहीं महापुरुषोंका दीक्षा लेनेका या भक्तिका दृश्य झलकता है। संभव है ये सब जैन धर्मसे सम्बन्ध रखते हों इसकी पूरी२ जांच होनी चाहिये।

(५) बरार विभाग।

इतिहास-इसका प्राचीन नाम विदर्भ है। जहां कृष्णकी पट्टरानी रुक्मिणीका भाई रुक्मी राज्य करता था। विदर्भके राजा भीमकी कन्या दमयन्ती थी।

सन् ई०से तीन शताब्दी पहलेसे अन्ध्र लोगोंका राज्य था। इस अंध्र वंशका २३वां राजा विलिवायुकुर द्वि० (सन् ११३-१२८) था जिसने गुजरात और काठिआवाड़के क्षत्रपोंसे युद्ध किया था। सन् २३६में यहां क्षत्रपोंने राज्य किया, फिर वाकातक वंशने फिर अभीरोंने फिर चालुक्योंने सन् ७५० तक राज्य किया। फिर सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटोंने। पश्चात् चालुक्योंने फिर देवगिरि यादवोंने फिर मुसल्मानोंका राज्य हुआ।

यहां १७७१० वर्ग मील स्थान है।

चौहद्दी यह है-उत्तरमें सतपुरा पहाड़ी और तापती नदी, पूर्वमें-मध्य प्रांत वर्धा, पश्चिममें बम्बई और हैदराबाद।

(२१) अमरावती जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है-उत्तरमें एलिचपुर ता० वेतुल, पूर्वमें वर्धा नदी, दक्षिणमें येवतमाल, पश्चिममें अकोला।

यहां २७५९ वर्गमील स्थान है।

इतिहास-वाकातक राजाओंने यहां राज्य किया, उनकी राज्यधानी चांदा जिलेमें भांदकमें थी। अजन्टा गुफाओंकी १६वीं गुफामें एक लेख है जिसमें ७ वाकातक राजाओंके नाम आए हैं।

(१) भातकुली-अमरावतीसे १० मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर हैं जिनमें दि० जैन मूर्ति श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी है जो गढ़ी ग्राममें भूमि खोदते मिली थी।

(२) जारद-ता० मोरसी-सकी नदीके तटपर एक जैन मंदिर है।

---

(२२) एलिचपुर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तर तापती नदी, वेतुल जिला, पूर्वमें अमरावती, दक्षिणमें पूर्ण नदी, पश्चिममें निमावर जिला। इसमें २६०९ वर्गमील स्थान है।

(३) एलिचपुर-नगर, यह कहावत प्रसिद्ध है कि इसको राजा एलने बसाया था, जो जैनी था। यह राजा एलिचपुर जिलेके किसी ग्रामसे सं० ११९९ (सन १०५८) में आया था। उस ग्रामको अब संजमनगर कहते हैं।

यह एक बलवान राजा था। उस समय यह जिला सोमेश्वर प्रथम चालुक्य वंशी महाराजका भाग था। यहां १९०१ के

अनुसार २३१ जैनी हैं। जैन मंदिर हैं। यहां होकर श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र (जो वैतुल जिलेमें निकट है) को यात्री जाते हैं।

---

(२३) येवतमाल या ऊन जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें अमरावती पूर्वमें वर्धा, दक्षिणमें पेन गंगा, पश्चिममें पुसड़ व मंगरूल ता०। यहां ३९१० वर्ग मील स्थान है।

(१) कल्म—ता० येवतमाल। इस ग्राममें एक भूमिके नीचे श्री चिंतामणि पार्श्वनाथका प्राचीन जैन मंदिर है।

---

(२४) अकोला जिला।

इसकी चौहद्दी है। उत्तरमें मेलघाट पहाड़ी, पूर्वमें दर्यापुर, मुर्तजापुर, पश्चिममें चिखली, मलकापुर दक्षिणमें मंगरूल वासिम।

यहां २६७८ वर्ग मील स्थान है।

(१) नरनाल—ता० अकोला—एक पहाड़ी ३१६१ फुट ऊँची है। इसपर चार बहुत ही आश्चर्यकारी पाषाणके कुंड हैं। ऐसा समझा जाता है कि इनको मुसल्मानोंके पूर्व जैनियोंने बनवाया था।

(२) पातूर—नगर ता० बालापुर। एक पहाड़ीके उत्तरमें दो गुफाएं हैं, जिनके भीतर एक खण्डित पद्मासन मूर्तिका भाग है और मूर्तियां नहीं हैं। तथा खम्भोंपर लेख हैं जो अभीतक (१९०९) तक पढ़े नहीं गए थे। ये गुफाएं शायद जैनोंकी हों। सं० नोट—जांच होनी चाहिये।

(३) सिरपुर—वासिमसे उत्तरपश्चिम १९ मील। यह जैनियोंका पवित्र स्थान है।

इम्पीरियल गजेटियर बरार सन् १९०९में नीचे प्रकार कथन है " यहां श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर है जो दिगम्बर जैन जातिका है (belongs to Digambor Jain Community) इसमें एक लेख सन् १४०६ का है। इसमें अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ नाम लिखा है। यह मंदिर इस लेखसे १०० वर्ष पहले निर्मापित हुआ था। यह कहावत है कि एलिचपुरके येल्लुक राजाने नदी तटपर इस मूर्तिको प्राप्त किया था और वह अपने नगरको ले जारहा था, परन्तु उसे पीछा नहीं देखना चाहिये था। सिरपुरके स्थानपर उसने पीछा फिरकर देख लिया तब मूर्ति नहीं चल सकी। वहीं बहुत वर्षोंतक यह मूर्ति वायुमें अटकी रही।

अकोला जिलेका गजटियर जो सन् १९११ के अनुमान मुद्रित हुआ होगा उसमें सिरपुरके सम्बन्धमें जो विशेष बात है वह यह है। जैन मंदिरके द्वारके मार्गके दोनों तरफ नग्न जैन मूर्तियां हैं तथा चौखटके ऊपर एक छोटी बैठे आसन जैन मूर्ति है। एलराजा जैनी था। इसको कोढ़का रोग था—वह एक सरोवरमें नहानेसे अच्छा हो गया। राजाको स्वप्न आया कि प्रतिमा है। वह प्रतिमा लेकर उसी तरह चला तब प्रतिमा सिरपुरके वहां न चल सकी तब राजाने उसीके ऊपर हेमदपंथी मंदिर बनवाया। पीछे दूसरा मंदिर बनवाया गया। यह मूर्ति एक कुनबी कुटुम्बके अधिकारमें रही आई है जिसको पावलकर कहते हैं। यह बात कही जाती है कि यह मूर्ति इस वर्तमान स्थितिमें वैसाख सुदी ३ वि०

सं० ५५५को स्थापित हुई थी जिसको करीब १५०० वर्ष हुए।

"Descriptions of list of inscriptions in C. P. & Berar by R. B. Hiralal B. A. 1916"—

नामकी पुस्तकमें सफा १३९ में इस भांति लिखा है "यह अंतरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर दिगम्बर जैन समाजका है। संस्कृतमें एक बड़ा शिलालेख सन् १४०६ का है परन्तु मि० कौशिनसाहब (Cousin's progress report 1902 P. 3) कहते हैं कि यह मंदिर कमसे कम १०० वर्ष पहले बना है। लेखमें अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका तथा मंदिरके बनानेवाले जगसिंहका नाम आया है।"

सं० नोट—ऊपर तीनों लेख पढ़नेसे विदित होता है कि १५०० वर्ष हुए तब भैंरेमें मूर्ति स्थापित की गई थी तथा ऊपर दूसरा मंदिर सन् १४०६में बना है।

(४) तिलहारा—तालुका अकोला, यहांसे पश्चिम १७ मील। यहां श्वेताम्बर जैन मंदिर है जो हालमें बना है। मूर्ति सुवर्णकी पद्मप्रभुजीकी है।

---

(२५) बुलडाना जिला।

चौहद्दी यह है कि—उत्तरमें पूर्णनदी, पूर्वमें अकोला, दक्षिणमें निजाम, पश्चिममें निजाम और खानदेश।

यहां २८०६ वर्गमील स्थान है।

(१) मेहकर—बुलडानासे दक्षिणपश्चिम ४२ मील। यहां बालाजीका एक नवीन मंदिर है, उसमें एक खंडित जैन मूर्ति है उसपर छोटासा लेख है। संवत १२७२ है। इस मूर्तिको आशाधरकी स्त्री पद्मावतीने प्रतिष्ठित कराया था।

(२) सातगांव–बुलडानासे पश्चिम दक्षिण १० मील। खास सड़कपर एक विष्णु मंदिरके उत्तर एक प्राचीन जैन मंदिरके चार खंभे अवशेष हैं तथा दो जैन मूर्तियें हैं। एक श्री पार्श्वनाथजीकी है उसपर शाका ११७३ या सन् १२५१ है। यह दिगम्बर है। इसके उत्तर पश्चिममें थोड़ी दूर एक पीपलके वृक्षके नीचे बहुतसी प्राचीन जैन मूर्तियोंके खंड हैं। तथा एक चबूतरेपर एक खंडित देवीकी मूर्ति है। मस्तकपर फूलोंकी माला बनी है। उसके ऊपर पद्मासन जैन प्रतिमा है। इसलिये यह जैनियोंकी देवीकी मूर्ति है। ऊपर जिस पार्श्वनाथकी मूर्तिका लेख शाका ११७३का दिया है वहांपर यह भी लेख है कि इस मूर्तिकी प्रतिष्ठा तेलुगू जैन कंथतय्या सेठीके पुत्र जैनतय्याने कराई।

दूसरा भाग—

मध्य भारत—प्राचीन जैन स्मारक ।

Imperial Gazetteer of Central India Cal. 1908.

इम्पीरियल गजेटियर मध्य भारत कलकत्ता सन् १९०८के अनुसार तथा भिन्न२ गजेटियरोंके आधारसे नीचेका वर्णन लिखा जाता है—

इस मध्य भारतकी चौहद्दी इस भांति है—उत्तर-पूर्वमें संयुक्त प्रदेश, पूर्वमें मध्यप्रांत, दक्षिण-पश्चिममें खानदेश, रेवाकांठा, पंचमुहाल ।

यहां ७८७७२ वर्गमील स्थान है ।

इतिहास—गौतमबुद्धके समयमें बौद्धमतकी पुस्तकोंके आधारसे भारतवर्षमें सोलह मुख्य राज्य थे। उनमें अवन्ती—राजधानी उज्जैन व वत्सदेश—राज्यधानी कौसाम्बी भी थे। उस समय उत्तरसे दक्षिणतक अर्थात् कौशल देशके श्रावस्तीसे दक्षिणमें पैथन तक पुरानी सड़क थी। बीचमें उज्जैन और महिस्मती (महेश्वर) में ठहरनेके स्थान थे। इस मध्य भारतपर जैनधर्मधारी महाराज चंद्रगुप्त मौर्य व उसके वंशजोंने सन् ई०से ३२१ वर्ष पूर्वसे २३१ वर्ष पूर्वतक राज्य किया। चंद्रगुप्तके पीछे उसके पुत्र विन्दुसारने (२९७ से २७२ पूर्वतक) फिर महाराज अशोकने राज्य किया। अशोकने भिलसाके पास सांचीमें और नागोदके भीतर भारहुतमें स्तूप स्थापित कराए। मौर्योंके पीछे सुंगवंशने राज्य किया, उसकी राज्यधानी पाटलीपुत्र थी। इसी वंशमें अग्निमित्र राजा हुआ है जो मालविकाग्निमित्र नाटकका वीर योद्धा था। इसकी राज्यधानी विदिशा (भिलसा) थी।

सन् ई०के दूसरी शताब्दीपूर्व मध्य एसियाकी बलवान शक जातिका एक भाग मालवामें घुस पड़ा और शक राज वंशावली स्थापित की जिनको पश्चिमी क्षत्रपोंके नामसे जाना जाता है। इन्होंने ३९० सन् ई० तक राज्य किया।

इन शक लोगोंको महाराज चंद्रगुप्त द्वि० (३७५–४१३)ने नष्ट किया। भिलसाके पास उदयगिरि है वहांके शिलालेखसे प्रगट है कि यह चंद्रगुप्त सन् ३८८ और ४०१ के मध्यमें मालवामें घुस पड़ा और क्षत्रपोंको नष्ट किया। गुप्तोंका राज्य भी अनुमान सन् ४८० के समाप्त हो गया।

तब हून लोगोंने ४९०से ५३३ तक राज्य किया। तोरा-मन हून ग्वालियर और मालवामें आया और उन प्रदेशोंको लेलिया। ग्वालियर, एरान और मन्दसोरके शिलालेखोंसे प्रगट है कि तोरा-मन और उसके पुत्र मिहिरकुलने पूर्वीय मालवाको ४० वर्षके अनुमान अपने अधिकारमें रक्खा। स्थानीय राजकुमार उनके नीचे शासन करते रहे। सन् ५२८में मगधके नरसिंहगुप्त बालादित्य और मंदसोरके राजा यशोधर्मन्ने मिहिरकुलको परास्त किया। फिर थानेश्वर (पंजाब) के राजा प्रभाकरवर्द्धनके पुत्र हर्षवर्द्धन (६०६–६४८) ने जिसकी राज्यधानी कन्नौज थी उत्तरभारतको लेलिया। हर्षवर्द्धनके मरणके पीछे गुर्जर, मालवा, अभीर तथा दूसरे वंश स्वतंत्र हो गए। छठी शताब्दीमें कलचूरी वंशजोंने नर्वदाघाटीको लेलिया जिसमें बुन्देलखंड और बघेलखंड शामिल थे। आठवींसे १० वीं शताब्दीतक धारके परमारोंने, ग्वालियरके तोमरोंने, नर्वरके कछवाहोंने, कन्नौनके राठौरोंने तथा कालिंजर और महोबाके

चंदेलोंने राज्य किया। ये सब प्रसिद्ध ऐतिहासिक वंश हैं।

गुर्जर—ये लोग राजपूताना और पश्चिम तटकी भूमि गुजरात पर बसते थे। इन्होंने मध्य भारतको ८ वीं शताब्दीमें ले लिया। इनकी दो शाखाएं थीं उनमेंसे परिहार राजपूतोंने बुन्देलखण्ड पर और परमार राजपूतोंने मालवा पर अधिकार किया।

सन् ८८९ में भोज प्रथमकी मृत्युके पीछे गुर्जरोंकी शक्ति क्षीण हो गई क्योंकि बुन्देलखण्डमें चन्देलवंशी नर्वदाके पास कलचूरी वंशी तथा राष्ट्रकूटोंका प्रभाव बढ़ गया। सन् ९१९ में मालवाके परमार वंशने इन लोगोंकी सत्ता हटा दी। तब मध्यभारतका शासन इस तरह बढ़ गया कि परमार लोग मालवामें जमे। उनकी राज्यधानी उज्जैन और धार हुई; परिहार लोग ग्वालियरमें डट गए; चंदेले बुन्देलखण्डमें जमे—इन्होंने अपनी राज्यधानी महोबा और कालिंजरको बनाया। चेदी या कलचूरी वंशज रीवा राज्यमें राज्य करते रहे। जब महमूद गजनीने भारत पर हमला किया तब बुन्देलखंडका चन्देलराजा धंजा और लाहौरके जयपालने मिलकर लम्घानपर सन् ९८८में सुबुक्तगीनके साथ युद्ध किया था। चौथे हमलेमें महमूदका सामना पेशावरमें लाहोरके आनन्दपालने, ग्वालियरके तोंवरराजाने, चन्देलमहाराज गंदा (सन् ९९९-१०२९) ने मालवाके परमार राजा (यातो भोज हो या उसका पिता सिंधुराज हो) ने युद्ध किया था।

महमूदके १०३०में मरणके पीछे मुसल्मानोंने १२वीं शताब्दीतक मध्य भारतकी तरफ मुख नहीं किया। सन् १२०६ से १५२६ तक पठान फिर मुगल बादशाहोंने अधिकार रक्खा। सन्

१७४३ से मरहटोंने अपना अधिकार जमाया। अहल्याबाईने हुल्कर राज्यपर सन् १७६७से १७९५ तक राज्य किया। इसकी न्यायप्रियता व योग्यता भारतमें उदाहरणरूप है।

पुरातत्त्व—प्राचीन स्मारकके प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे स्थानोंपर हैं—(१) प्राचीन उज्जैन, (२) वेशनगर, (३) धार, (४) मन्दसोर, (५) नर्वर, (६) सारंगपुर, (७) अजयगढ़, (८) अमरकंटक, (९) वाघ, (१०) वरो, (११) बड़वानी, (१२) भोजपुर, (१३) चन्देरी, (१४) दतिया, (१५) धमनार, (१६) ग्वालियर, (१७) ग्यासपुर, (१८) खजराहा, (१९) मांडू, (२०) नागोद, (२१) नरोद, (२२) ओर्छा, (२३) पथारी, (२४) रीवा, (२५) सांची, (२६) सोनागिरि, (२७) उदयगिरि, (२८) उदयपुर।

प्राचीन सिके पहली शताब्दीके सांची और भरहुतके स्तूपोंके समयके मिलते हैं। गुप्त समयके दो लेख मिलते हैं—एक गुप्त संवत ८२ या सन् ४०१ का; दूसरा सबसे पिछला गुप्त सं० ३०२ या सन् ६४० का रतलाममें। मंदसोरका शिलालेख जो मालवाके वि० सं० ४९३ या सन् ४३६का है बहुत उपयोगी है। यह इस बातको प्रमाणित करता है कि विक्रम संवतके साथ मालवाकी शक्तिका क्या प्रभुत्व है? मध्यप्रांतमें चारों तरफ सन् ई०से ३०० वर्ष पहलेसे आजतकके अनेक शिल्प पाए जाते हैं। सन् ई०से ३०० वर्ष पहले बौद्धोंके स्मारक भिलसाके चारों तरफ तथा सबसे बढ़िया सांची स्तूपमें पाए जाते हैं। नागोदमें भरहुतपर जो स्तूप है वह तीसरी शताब्दी पूर्वका है।

जैनियोंके ढंगके बहुतसे मकान व मंदिर थे जो अब लुप्त

हो गए हैं। उनमें प्रसिद्ध ग्यासपुरके मंदिर हैं, प्राचीन मंदिर खजराहाके हैं तथा उदयपुरके मंदिर हैं। जैनियोंके सोलहवीं शताब्दीके मंदिर ओर्छा, सोनागिरि (दतिया) में हैं।

पूर्वी हिन्दी भाषा—इस मध्यप्रांतमें यह भाषा अधिक बोली जाती है। यह उसी प्राचीन भाषाका अपभ्रंश है जिस भाषामें सन् ई०से ५०० वर्ष पूर्व श्री महावीर भगवानके तत्व वर्णन किये जाते थे। यही भाषा बादमें दिगम्बर जैनियोंके मुख्य शास्त्रोंकी भाषा होगई।

इस हिन्दीका अवधी भाग मध्यभारतमें व बघेली भाग बघेलखंडमें पाया जाता है। बघेलीमें बहुत बड़ा साहित्य है जिसकी रक्षा रीवांके राजालोग सदा करते आए हैं। बघेली हिन्दी बोलनेवाले १४०१०१३ हैं।

जैन धर्म—ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दीमें मध्यभारतके उच्च वर्णोंमें जैनधर्म मुख्यतासे फैला हुआ था। उनके मंदिर व मूर्तियोंके शेष ध्वंश इस प्रांतमें सब तरफ पाए जाते हैं। अभी भी प्राचीन मंदिर खजराहामें, सोनागिरिमें है तथा कई यात्राके स्थान हैं जैसे बावनगजाकी मूर्ति बड़वानीमें। सन् १९०१में यहां दिगम्बर जैनी ९४६०९ व श्वे० जैनी ३९६७९ थे।

मध्यमें भारतके विभाग।

(१) बघेलखंड—इस बघेलखंडमें रीवा, बन्देर, कैमूर, खुंजना व सिरबू चट्टानें शामिल हैं। प्राचीन बौद्ध पुस्तकोंमें व महाभारत तथा पुराणोंमें इस बघेलखंडका सम्बन्ध हैहय या कलचूरी या चेदी

जातिसे बताते हैं। इनका संवत् सन् २४९ ई०से शुरू होता है। उनका मुख्य स्थान नर्वदा नदीपर महिस्मती या महेश्वरपर था। यही उनकी राज्यधानी थी।

छट्टी शताब्दीमें ये कलचूरी लोग प्रसिद्ध शासक हो गए, क्योंकि बादामी (बीजापुर) का राजा मंगलिसी लिखता है कि उसने चेदीके कलचूरी राजा बुद्धवर्मनपर विजय प्राप्त की थी। वृहत् संहिता नामा ग्रंथमें चेदी लोगोंको प्रसिद्ध मध्यप्रांतकी जाति बताया है। सातवीं शताब्दीके अंतमें कलचूरी लोगोंने बघेलखंडका सर्व प्रदेश लेलिया था तब उनका मुख्य स्थान कालिंजर पर था। इस समय बुन्देलखंडमें चंदेला, मालवामें परमार, कन्नोजमें राष्ट्रकूट व गुजरात और दक्षिण भारतपर चालुक्य राज्य करते थे। कलचूरी लेख है कि उन राजाओंने चंदेलराजा यशोवर्मा (सन् ९२५-'५५) से युद्ध किया था। इस यशोवर्माने कालिंजर लेलिया। अब भी कलचूरी लोग १२वीं शताब्दीतक राज्य करते रहे।

यहां नागोदपर भरहुत स्तूप सन् ई०से तीसरी शताब्दी पूर्वका है।

(२) बुन्देलखंड—इसमें जिला जालोन, झांसी, हमीरपुर और बांदा गर्भित हैं। ११६०० वर्गमील स्थान है।

इसका इतिहास यह है—पहले गोहरवारोंने, फिर परिहारोंने, फिर चंदेलोंने राज्य किया। जिस चंदेलवंशका स्थापक नानक शायद नौमी शताब्दीके प्रथम अर्धभागमें हुआ है। चंदेलोंका चौथा राजा राहिल (सन् ८९०-९१०) था। इसने महोवामें रोहिल्यसागर नामका सरोवर तथा एक मंदिर बनवाया जो अब नष्ट होगया है।

इनका सबसे पहला लेख राजा धांगा (९५०–९९) का है जो बहुत बलवान राजा था। इसने महमूदके विरुद्ध सन् ९७८में लाहोरके जयपालको मदद दी थी।

फिर राजा गांदा या नंदराय (सन् ९९९–१०२५) ने भी जयपालको महमूदके विरुद्ध मदद दी थी ऐसा मुसल्मान इतिहासकार कहते हैं।

चन्देलोंका ग्यारहवां राजा कीर्तिवर्मा प्रथम था उसका पुत्र सल्लक्षण था, जिसने चन्दी व दक्षिण कौशलके राजा कर्णको जीत लिया था। इसने महोवामें कीरतिसागर नामका सरोवर तथा अजयगढ़में कुछ मकान बनवाए। पंद्रहवां राजा मदनवर्मा (११३०–११६५) बड़ा कठोर राजा था। इसने चेदी राज्यको जीता तथा यह कहा जाता है कि इसने गुजरातको भी विजय किया था।

इसके पीछे परमार्दी देव या वरमाल (११६५-१२०३) हुआ। इसके राज्यमें दिहलीके पृथ्वीराजने सन् ११८२ में बुन्देलखण्डको जीत लिया। कुतबुद्दीनने सन् १२०३ में देशको ध्वंश किया।

चन्देलोंका राज्य इस हदमें था कि पश्चिममें घसान, उत्तरमें जमना नदी, पूर्वमें विन्ध्यापहाड़ी, पश्चिममें वेतवा, कालिंजर, खजराहा, महोबा और अजयगढ़ तक। शिलालेखोंमें इनके देशको जेजक भुक्ति या जिझोती कहते हैं इसीसे जिझोती ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति है।

बुन्देला लोग—यह कहा जाता है कि इनकी उत्पत्ति पंचम या गहर्वासे है। चौदहवीं शताब्दीमें इनका अधिकार जमा हुआ था। ये मऊ, कालिंजर व काल्पीमें वसे। १५०७ ई० में बाबर बाद-

शाहने रुद्रप्रतापको गवर्नर नियत किया था। ओरछाके वीर सिंह-रावने झांसीके किलेको बनवाना शुरू किया था। औरङ्गजेबके समयमें महोवेमें चम्पतराय राज्य करते थे, इन्हींका पुत्र छत्रसाल सन् १८०७ में बुन्देलोंका अधिपति था और वर्तमान वृटिश बुन्देल-खण्डपर राज्य करता था।

छत्रसाल सन् १७३४में मर गया, तब उसने अपने राज्यका तिहाई भाग मरहटोंको दे दिया।

(३) गोंदवाना प्रदेश—यह मध्यप्रदेश और मध्यभारतमें शामिल था। पूर्वमें रतनपुर, छोटानागपुर; पश्चिममें मालवा; उत्तरमें पन्ना; दक्षिणमें दक्षिण। गोंद लोग बहुत प्रसिद्ध द्राविड़ जाति थी। तीन या चार गोंद वंशोंने यहां १४ वींसे १८ वीं शताब्दी तक राज्य किया।

(४) मालवा—इसमें ७६३० वर्गमील स्थान है। यह बहुत उपजाऊ है। दक्षिणमें विंध्यपर्वत, पूर्वमें विन्ध्य पर्वत, उत्तरमें भूपालसे चन्देरीतक, पश्चिममें अंझोरासे चित्तोड़तक, उत्तरमें मुकु-न्दवार पहाड़ी है।

मालवा छः भागोंमें विभक्त है—

(१) कौन्तेल—मुख्य नगर मंदसोर मध्यमें

(२) बागड़— ,, ,, बांसवाड़ा

(३) राढ़—झाबुआ और जोवतराज्य

(४) सोंदवाडा—मध्यमें महिदपुर

(५) उमरवाड़ा—राजगढ़ नरसिंहगढ़ राज्य हैं

(६) खीचीवाड़ा—यह खीची चौहानका है, राघोगढ़ राज्य है।

मालवाके विक्रम संवत सन् ५७ पूर्वके लेख राजपूतानासे प्राप्त हुए हैं। केवल एक लेख मंदसोरमें संवत ४९३ या सन् ४३६ का प्राप्त हुआ है।

बौद्धके समयमें जो भारतमें १६ प्रसिद्ध शक्तियें थीं उनमें अवंति देश भी एक था। उज्जैन बड़ी प्रसिद्ध जगह थी। दक्षिणसे नैपालके मार्गमें उज्जैन पड़ता था। बीचमें महिष्मती तथा विदिशा या भिलसा भी पड़ता था।

पश्चिमी क्षत्रप–सन् ई० के प्रारम्भमें इन लोगोंने मालवा पर राज्य किया था। मुख्य राजा चास्थाना और रुद्रदमन (सन् १५०) थे। फिर गुप्तों तथा सर्कंदहूनोंने राज्य किया। चंद्रगुप्त द्वि०ने सन् ३९०में मालवा लिया। हूनोंमें तुरामन और मिहिर कुल प्रसिद्ध थे, करीब ५०० ई० तक राज्य किया। करीब ६०० सन् ई० के नरसिंह गुप्त बालादित्त्य मगधवासी और मंदसोरके राजा यशोधर्मनने राज्य किया। सन् ६०६से ६४८ तक प्रसिद्ध कन्नौज राजा हर्षवर्धननें मालवा पर शासन किया। ८०० से १२०० ई० तक मालवा पर परमार राजपूतोंने राज्य किया जिनकी राज्यधानी पहले उज्जैन फिर धारपर रही। १० वीं से १३ वीं शदीतक १९ राजा हुए हैं उनमें बहुत प्रसिद्ध राजा भोज (सन् १०१०से १०५३) हुए हैं। यह बड़ा विद्वान और वीर था। अन्तमें इस राजाको अहिलवाड़ाके चालुक्योंने और त्रिपुरीके कलचूरियोंने राज्यसे भगा दिया। १२३८के अनुमान मुसल्मानोंका राज्य होगया।

(१) ग्वालियर रेजिडेन्सी।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें चम्बल नदी, दक्षिणमें भिलसा, पूर्वमें बुन्देलखण्ड और झांसी, पश्चिममें राजपूताना। इसमें ग्वालियर राज्य, राघोगढ़, खरुआ, धानी, पारोन, गढ़ उमरी, भदौरा छोटे राज्य शामिल हैं।

ग्वालियर राज्यमें १७२० वर्गमील उत्तर व ८०२१ वर्ग मील दक्षिणमें कुल २५०४१ वर्गमील स्थान है।

पुरातत्त्व—प्राचीन उज्जैनको खुदवानेकी जरूरत है।

सं० नोट—वास्तवमें इस पुराने उज्जैनमें जैन प्राचीनताके बहुत चिह्न मिलेंगे।

पुराने स्मारक भिलसा, वीसनगर व उदयगिरिमें जहां प्रथम शताब्दीके बौद्ध व ४ या ५ शता०के हिन्दू स्मारक देखे जाते हैं। मधकालीन हिन्दू और जैनकी शिल्पकला वरो, ग्वालियर, ग्यारसपुर नरोद व उदयपुरमें है। यह शिल्प १० से १३ शताब्दी तकका है, परन्तु कुटवार या कामंतलपुरमें (नूरावादसे उत्तरपूर्व १० मील) तथा पारोली और परावली (ग्वालियरसे उत्तर ९ मील) में ५ वीं या छठी शताब्दी व उसके पहलेके भी स्मारक हैं। तेराहीके पास राजापुरमें एक स्तूप है।

तेराही, कदवाहा, शिवपुरके पास दूवकुन्डमें प्राचीन स्थान हैं। ग्वालियरसे उत्तर २५ मील सुहानियोंमें हैं तथा उज्जैन नगरसे उत्तर ५ मील कालियादेहमें प्राचीन स्थान हैं। यह सप्रा नदीकी घाटी है। यहां बहुत प्राचीन स्थान हैं।

मुख्य २ स्थान।

(१) वाघ–जि० अमझेरा। मनावरके पास ग्रामके पश्चिम ४ मील बौद्ध गुफाएं हैं जिनको पांच पांडव कहते हैं। यह अजंटाकी गुफाओंके समान ६ तथा ७ शताब्दीकी हैं।

(२) वरो–(वड़नगर) जि० अमझेरा। यह ग्वालियर राज्यमें बहुत प्राचीन स्थान है। अब छोटा नगर है, परन्तु इसके पास प्राचीन नगरके ध्वंश शेष हैं जो पथारी नगर तक चले गए हैं। यह ग्राम गयानाथ पहाड़ीकी तलहटीमें है। यह पहाड़ी विंध्यका भाग है जो भिलसाके उत्तर तक आती है। सरोवरोंके निकट हिंदू तथा जैनोंके मंदिर हैं। एक विशाल जैन मंदिर है जिसको जैन मंदिर कहते हैं इसमें सोलह वेदियां हैं जिसमें जैन मूर्तियां हैं। मध्यमें किसी मुनिका समाधि स्थान है। पन्नाके राजा छत्रसालने १७ वीं शताब्दीमें इस मंदिरको नष्ट किया।

(३) भिलसा नगर–इसके निकट बौद्धोंके ६० स्तूप सन् ई० से तीसरी शताब्दी पूर्वसे १०० सन् ई० तक हैं। प्रसिद्ध स्तूप-सांची, अन्धेरी, भोजपुर, सातधारा व सोनारी (भोपाल)में हैं।

(४) वीशनगर–भिलसाके उत्तर पश्चिम प्राचीन नगर है। उसको पालीमें चैत्त्यगिरि लिखा है। यहां बौद्धोंके स्मारक हैं। यहां उज्जैनके क्षत्रपोंके, नरवरके, नागोंके व गुप्तोंके सिक्के पाए गए हैं।

जैन शिला लेखोंमें इसको भद्दलपुर कहा है व १०वें तीर्थंकर सीतलनाथका जन्म स्थान माना गया है। वार्षिक मेला होता है। यह नगर सुंग राजा अग्निमित्रका राज्य स्थान था।

(५) चंदेरी—जिला नरवर—नगर व प्राचीन किला। यहांसे ९ मील दूर पुरानी चन्देरी है जो अब ध्वंश स्थानोंका ढेर है। चन्देलोंने इसे बसाया था। इसका सबसे पहला कथन अलबेरूनी (सन् १०३०) ने किया है। यह सुन्दर तनजेबोंके बनानेमें प्रसिद्ध था (कनिंघम रिपोर्ट नं० २ पत्र ४०२)। चन्देरीके किलेके पास पहाडीपर पुरानी कुछ जैन मूर्तियां अंकित हैं। पुराना किला नगरसे २३० फुट ऊंचा है।

कनिंघम रिपोर्ट नं० २में है कि पुरानी चंदेरीको बूढ़ी चंदेरी कहते हैं। यहां चन्देल राजाओंने सन् ७००से ११८४ तक राज्य किया था। यह ३०० फुट ऊंची पहाड़ीपर वसा है। यहां महल है उसके दक्षिण दो ध्वंश मंदिरोंके शेष हैं। इनमेंसे एकमें एक पाषाण है जिसमें १०वीं या ११वीं शताब्दीके अक्षर हैं। इसकी थोड़ी दूरपर छोटा कमरा है जिसमें २१ जैन मूर्तियें हैं उनमें १९ कायोत्सर्ग व दो पद्मासन हैं। ये दोनों सुपार्श्व तथा चन्द्रप्रभुकी हैं। नई चन्देरीकी पहाड़ीके नीचे एक सरोवर है जिसका नाम कीरतसागर है।

(६) ग्वालियरका किला—प्राचीन नगरके ऊपर ३०० फुट ऊँची पहाड़ी है उसपर किला है। यह किला छठी शताब्दीसे भारतके इतिहासमें प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस किलेको सूरजसेनने स्थापित किया था। यहां एक साधु ग्वालिय रहता था उसने सूरजसेनका कष्ट दूर किया था। यह ग्वालियर उसी साधुके नामसे प्रसिद्ध है। शिलालेखमें इसको गोपगिरि या गोपाचल लिखा है। किलेमें राजा तोरामन और मिहिरकुलका शिलालेख

पाया गया है जिन्होंने गुप्तोंके राज्यको छठी शताब्दीमें नष्ट किया था।

नौमी शताब्दीमें यह किला कन्नौजके राजा भोजके आधीन था। इस राजाका लेख सन ८७६ का चतुर्भुज नामके पाषाण मंदिरमें मिला है। कछवाहा राजपूतोंने १० वीं शताब्दिके मध्यसे सन ११२८ तक राज्य किया। फिर परिहारोंने इसपर अधिकार किया। सन ११९६में मुहम्मद गोरीने हमला किया और किलेको ले लिया। सन १२११ में परिहारोंने फिर ले लिया और उसे सन १२३२ तक अपने आधीन रक्खा। फिर मुसल्मानोंने सन १३९८ तक अधिकारमें रक्खा. पीछे फिर तोम्वर राजपूतोंने सन १५१८ तक अधिकारमें लिया। पीछे इब्राहीम लोधीने कबजा किया। तोम्वर राजा मानसिंह (सन १४८६–१५१७)के राज्यमें यह ग्वालियर बहुत प्रभुत्वपर था। इसने पहाड़ीकी पूर्व ओर एक सुन्दर महल बनवाया है। इसकी प्यारी रानी गूजरी मृगनैना थी। तब यह ग्वालियर गान विद्याका केन्द्र था। आइन अकबरीमें जिन ३६ गवैयों और वादित्रोंका वर्णन है उनमेंसे १५ ने ग्वालियरमें शिक्षा पाई थी इनहीमें प्रसिद्ध तानसेन गवैया था।

सन १५२६ में किलेको बाबरने ले लिया। लक्ष्मण दरवाजेके पास चतुर्भुजका मंदिर पहाड़में कटा हुआ ९ मी शताब्दीका है इसीमें कन्नौजके राजा भोजका लेख सन ८७६ का है। राजाको गोपगिरि स्वामी कहा है।

जैन मंदिर और मूर्तियें–(कनिंघम रिपोर्ट नं० २) हाथी दरवाजा और सास बहू मंदिरोंके मध्यमें एक जैन मंदिर है जिसको

मसजिदमें वदला गया है। खुदाई करनेपर एक नीचेको कमरा मिला है जिसमें कई नग्न जैन मूर्तियें हैं और एक लेख संवत ११६५ या सन् ११०८का है। ये मूर्तियें कायोत्सर्ग तथा पद्मासन दोनों प्रकारकी हैं। उत्तरकी वेदीमें सात फण सहित श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन मूर्ति है। दक्षिणी भीतपर पांच वेदियां हैं जिनमें दो खाली हैं। उत्तरकी वेदीमें दो नग्न कायोत्सर्ग मूर्तियां हैं। मध्यमें ६ फुट ८इंच लम्बा आसन एक मूर्तिका है। दक्षिण वेदीमें दो नग्न पद्मासन मूर्तियां हैं।

उरवाही द्वारपर जैन मूर्तियें—उरवाही घाटीकी दक्षिण ओर २२ नग्न मूर्तियां हैं उनमें ६ लेख संवत १४९७से १५१० अर्थात सन् १४४०और १४५३के मध्यके तोमरवंशी राज्यकालके हैं। इनमें नं० १७–२० व २२ मुख्य हैं। नं० १७में श्री आदिनाथकी मूर्ति है, वृषभ चिह्न है, इसपर वड़ा लेख नं० १८ संवत १४९७ या सन १४४० का है—डूंगरसिंहदेवके राज्यमें स्थापित। सबसे वड़ी मूर्ति नं० २० है जो वावरके कथन अनुसार ४० फुट है, परन्तु वास्तवमें ५७ फुट ऊंची है। पग ९ फुट लम्बा है उससे तीनगुणी लम्बाई है। इस मूर्तिके सामने एक स्तम्भ है जिसके चारों तरफ मूर्तिये हैं। नं० २२ श्री नेमिनाथजीकी मूर्ति ३० फुट ऊंची है।

दक्षिण पश्चिम समूह—उरवाहीकी भीतके वाहर एक थंभा तालके नीचे ५ मूर्तियें हैं। नं० २—एक सोई हुई स्त्रीकी मूर्ति ८ फुट लम्बी है जिसका मस्तक दक्षिणको व मुख पश्चिमको है।

सं० नोट—शायद यह श्री महावीरस्वामीकी माता त्रिशलाकी मूर्ति हो। नं० ३—एक मूर्ति है जिसमें स्त्रीपुरुष वैठे हैं, वच्चा गोदमें है। कनिंघम कहते हैं कि मैं समझता हूं कि यह श्री महा-

वीरस्वामी राजा सिद्धार्थ और त्रिशला सहित हैं।

उत्तर पश्चिमी समूह–दोंधा द्वारके उत्तरमें श्री आदिनाथकी मूर्ति है। लेख सं० १५२७ या सन् १४७० का है।

दक्षिण पूर्वी समूह–गंगोलातलावके नीचे यह सबसे बड़ा और प्रसिद्ध समूह है। यहां १८ मूर्तियें २० फुटसे ३० फुट ऊंची हैं तथा बहुतसी ८ फुटसे १५ फुट ऊंची हैं। ऊपरसे लेकर आध मीलकी लम्बाईमें कुलपहाड़ीपर ये मूर्तियें हैं। इनका वर्णन नीचे प्रकार है–

गु नं०	नाम तीर्थंकर	आसन	ऊंचाई	चिह्न	सम्वत्
१	अप्रगट	...	३० फुट		
२	...	...	...		
३	आदिनाथ	कायोत्सर्ग	७ फुट	वृषभ	१५३०
	व ४ और	"	७ "		१५३०
	आदिनाथ	"	१४ "		१५२५
४	नेमिनाथ	"	१४ "	शंख	१५२५
	आदिनाथ	"	१४ "	वृषभ	१५२५
५	...	...	...	...	
६	पद्मप्रभु	पद्मासन	१५ "	कमल	
७	...	कायोत्सर्ग	२० "		
८	आदिनाथ	पद्मासन	६ "		
९	...	कायोत्सर्ग	२१ "		
१०	चन्द्रप्रभु	"	१२ "		१५२६
	२ और	"	१२ "		
११	चन्द्रप्रभु	पद्मासन	२१ "	अर्द्ध चंद्र	१५२७
१२	सम्भवनाथ	"	२१ फुट	घोड़ा	१५२५
	व १ और	कायोत्सर्ग			१५२५
१३	नेमनाथ	"		शंख.	
	सम्भवनाथ	पद्मासन	२१ फुट	घोड़ा	
	महावीर	कायोत्सर्ग		सिंह	

१४	आदिनाथ	पद्मासन	२६ फुट	वृषभ	१५२५
१५	”	”	२८ ”	”	
१६	...	”	३० ”		
१७	कुन्थुनाथ	कायोत्सर्ग	२६ ”	बकरा	१५२५
	शांतिनाथ	”	२६ ”	हिरण	१५२५
	आदिनाथ	”	२६ ”		
	४ और		२६ ”		
१८	...		२६ ”		
१९	...		२६ ”		
२०	आदिनाथ		८ ”		१५२५
२१	...				

ऊपरके समूहमें २१ गुफाएं हैं।

कछवाहा राजा सूरजसेनने सन २७५में ग्वालियरको बसाया था।

ग्वालियरके कछवाहा वंशके राजा।

संवत्	नाम राजा
९८२	लक्ष्मण
१००७	वज्रदाम
१०३७	मंगल
१०४७	कीर्ति
१०६७	भुवन
१०८७	देवपाल
११०७	पमपाल
११४७	सूर्यपाल
११३२	महीपाल
११५२	भुवनपाल
११६१	मधुसूदन

इसी वंशमें राजा मानसिंह सन् १५०६ में हुए।

ग्वालियरके परिहार वंशके राजा।

संवत	नाम राजा
११८६	परमालदेव
१२०९	रामदेव
१२१२	हमीरदेव
१२२९	कुबेरदेव
१२३६	रत्नदेव
१२५१	लोहंगदेव
१२६८	सारंगदेव

१२६९ में गढको अलतमास मुसलमानने लिया।

ग्वालियरके किलेमें जैनियोंके प्रसिद्ध लेख।

नं० ९–संवत ११६९ या सन् ११०८ जैन मंदिरमें
१८– „ १४९७ या सन् १४४० मूर्ति आदिनाथ
डूंगरसिंह राज्य
२१– „ १५२६ या सन् १४६९ मूर्ति चंद्रप्रभु
२७– „ १५३० या सन् १४७३ „ आदिनाथ
कीर्तिसिंहे राज्ये

ग्वालियर गजटियर १९०८में कथन है कि यहां जो तानसेन गवैय्या मानसिंहके स्कूलमें पढ़कर तय्यार हुआ था वह रीवां महाराज राजा रामचंद्रका दर्वार–गवैय्या था और वह सन् १५६२ तक दर्वारमें रहा, तब उसको बादशाह अकबरने बुला भेजा। बादशाहको यह बहुत प्रिय था। आईने अकबरीमें इसको मियां तानसेन व उसके पुत्रको तांतराजखां लिखा है।

ग्वालियर दिगम्बर जैनोंका विद्याका स्थान रहा है। सूरजसेनके वंशमें ८ वां राजा तेजकरण था जिसको परिहारोंने सन् ११२९में हटा दिया।

(७) ग्यारसपुर–भिलसासे उत्तर पूर्व २४ मील। यहां प्राचीन मकान बहुत दूर तक चले गए हैं। सबसे प्रसिद्ध मकान अठखंभा कहलाता है। यह ग्रामके दक्षिण बहुत सुन्दर मंदिर है, स्तंभ बहुत उत्तम नक्काशीके हैं। एक खंभे पर एक यात्रीका लेख सन् ९८२का है। सबसे सुन्दर पुराना जैन मंदिर पहाड़ीकी नोक पर माताका है जो नौमी या १०वीं शताब्दीका है। इसमें वेदीपर एक बड़ी दिगम्बर जैन मूर्ति है व ३ या ४ और जैन मूर्तियें हैं।

कमरेमें वहुतसी जैन मूर्तियें हैं। वज्रनाथ मंदिर भी जैनियोंका है इसमें तीन मंदिर शामिल हैं।

(८) मंदसोर नगर—एक वहुत प्राचीन नगर है। इसका पुराना नाम दशपुर है। नासिकमें सन् ई०के प्रथम भागका क्षत्रपोंका लेख मिला है उसमें इसका नाम है। एक शिलालेख मंदसोरके पास सूर्य्यके मंदिर वनानेका सन् ४३७में कुमारगुप्त प्रथमके राज्यका है। जैन स्मारक वहुत हैं।

यहांसे दक्षिण पूर्व ३ मील सोंदनी ग्राममें दो सुन्दर स्तम्भ हैं जिनके गुम्वज पर सिंह और वृषभ वने हैं। दोनोंपर जो शिलालेख है उसमें यह कथन है कि मालवाके राजा यशोधर्मन्ने शायद सन् ५२८में मिहरकुलको हराया।

(Fleet Indian Antiquary Vol. XV.)

(९) नरोद—जि० नरवर अहिरावती नदीपर। यहां एक पाषाणका वड़ा मठ है इसको कोकई महल कहते हैं, इसकी एक भीतपर एक वड़ा संस्कृतका लेख है जिसमें मठके वनानेका वर्णन है। इसमें राजा अवन्तिवर्मनका वर्णन है, शायद ग्यारहवीं शताब्दीका हो। (कनिंघम रिपो० नं० २ तथा Epigraphica Indica Vol. VII. P. 35)

(१०) नरवर नगर—सिपरी और सोनागिरके मध्यमें—नैषधके नलचरित्रमें इसका वर्णन है। कनिंघम इसको पद्मावती नगर कहते हैं। यहां नागराजा गणपतिके सिक्के पाए गए हैं जिसका नाम अलाहावादके समुद्रगुप्तके लेखमें आया है।

(११) शुजालपुर—जि० सुजालपुर (उज्जैन-भोपाल) रेलवेपर

इस नगरको एक जैन व्यापारीने बसाया था। अभीतक उसके नामसे एक मुहल्ला रायकरणपुर कहलाता है।

(१२) उदयपुर–ग्राम भिलसामें–बरेठ प्टेशनसे सडकपर ४ मील जाकर। तीन प्राचीन मंदिर हैं। एक उदयेश्वरका लाल पाषाणका है जिसके स्तंभ बहुत सुन्दर हैं। इसके चारों तरफ सात मंदिर ध्वंश हैं। यहां यह कहावत है कि इस मंदिरको उदयदित्य परमारने बनवाया था। एक लम्बा लेख है जिसका आधा नष्ट हो गया है। इसमें उदयदित्य तक राजाओंके नाम हैं। मंदिरमें कई लेखोंसे प्रगट है कि यह उदयदित्य सन् १०८०में राज्य करता था। दो लेख बताते हैं कि मालवाको अनहिलवाड़ा पाटनके चालुक्योंने सन् ११६३से ११७९ तक अपने अधिकारमें रक्खा। एक लेखमें धारके राजा देवपालका कथन है।

(Epi : Indica Vol. 1. P. 222. Indian antiquary Vol. XVIII P. 341 and Vol. XX P. 83.)

(१३) उदयगिरि–जि० भिलसामें–बहुत प्राचीन स्थान है। भिलसासे ४ मील पहाड़ीमें कटे हुए मंदिर हैं। यह पहाड़ी ॥। मील लम्बी व ३८० फुट ऊंची है। गुफाओंमें बहुत उपयोगी लेख हैं।

नं० १०की गुफा जैनियोंकी है। यह २३वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजीकी है। इसमें लेख सन् ४२९–४२६का है। इसकी खास खुदाई ५० फुटसे १६ फुट है। इसमें ९ कमरे हैं। दक्षिण कमरेके तीन भाग हैं। यहां बहुतसे बौद्धोंके स्मारक हैं। स्तंभोंपर लेख हैं। एकसे प्रगट है कि मगधके चन्द्रगुप्त द्वि०ने मालवा और

गुजरात विजय किया। एक लेख सन् ४२५-४२६ व दूसरा १०३७का है (कनिंघम रि० नं० १० ।

(Indian antiquary Vol XVIII P. 185 and Vol. XIV P. 61)

(१४) उज्जैन—यह प्राचीन नगर है। यहां जैनी (सन् १९०१ में) १०३९ थे। दूसरी शताब्दीमें यह पश्चिमी क्षत्रपोंकी राज्यधानी थी। राजा चस्थाना थे। टोलिमी (सन् १५०) तथा १०० वर्ष पीछे एरिथियन समुद्रका पेरिप्लस कहते हैं कि यह उज्जैन रत्न, सुन्दर तनजेब, मट्टीके खिलौने आदिके व्यापारका केन्द्र था। माल भरुचके बंदरसे बाहर जाता था। सन् ४०० में मगधके चन्द्रगुप्त द्वि० के हाथमें आया। सातवीं शताब्दीमें कन्नौजके हर्षवर्द्धनने राज्य किया। नौमी शताब्दीमें राजपूतोंके पास आया। १२ वींमें परमारोंके पास, फिर तोमर और चौहानोंने राज्य किया।

नोट—नीचे लिखा वर्णन ग्वालियर गजेटियर सन् १९०८से मालूम हुआ है।

ग्वालियर राज्यमें जैनी सन् १९०१ में २ सैकड़ा अर्थात् ५४०२४ थे जिनमें अधिक दिगम्बर थे।

(१५) अमनचार—पर्गना मुंगौली जि० ईसागढ़—मंगौलीसे उत्तर ७ मील। यह प्राचीन स्थान है। यहां बहुतसी पुरानी जैन मूर्तियें हें।

(१६) अटेर परगना भिंड—चंबल नदीके ध्वंश स्थानोंमें एक किला है जिसमें घुसना कठिन है। यह भदौरिया राजाओंका स्थान रहा है।

(१७) बरई—ग्वालियर गिर्दमें १ मील। यहां रेलवे स्टेश-

नसे पश्चिम जैन मंदिर हैं जो अनुमान ६०० वर्ष हुए बने होंगे। भादोंमें दो मेले होते हैं।

(१८) भैरोंगढ–पर्गना व जिला उज्जैन। यहांसे १॥ मील सिप्रा नदीपर एक भैरोंका मन्दिर है। एक पवित्र स्थानपर एक पाषाण है जिसको जैनी पूज्य मानते हैं। यहां आषाढ़ सुदी ११, वैशाख सुदी १४ व कार्तिक सुदी १४ को मेले होते हैं।

(१९) भोंरासा–पर्गना सोनकच्छ जिला शाजापुर। देवास नगरसे पूर्व १० मील एक ग्राम है जिसमें प्राचीन जैन मंदिरोंके ध्वंश–काले सय्यदकी कब्रके पास पड़े हैं। यहां भुवनेश्वर महादेवका जो मंदिर है उसमें खुदे हुए पाषाण लगे हैं जो पुराने जैन मंदिरोंसे लाकर लगाए गए हैं क्योंकि वहुतोंपर जैन मूर्तियां वनी हैं।

(२०) दूवकुंड–पर्गना और जिला शिवपुर। एक उजाड़ ग्राम है। एक पहाड़में खुदे हुए सरोवरके कोनेपर दो प्राचीन मंदिर हैं जिनमें एक मुख्य जैनका है। यह ८१ फुट वर्ग है। इसमें तीन तरफ आठ वेदियां हैं व पूर्व तरफ सात वेदियां हैं, वहीं दरवाजा है। मंदिर व वेदियोंमें वहुत वढ़िया कारीगरीकी खुदाईके दरवाजे हैं। इनमें नग्न मूर्तियां वनी हैं। यह दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिरको अमर खंड्ड मराठाने नष्ट किया था। एक खम्भेपर ५९ लाइनका बड़ा लेख है। यह लेख कच्छपघट (कछवाहा) वंशके राजाओंका है। इस लेखको महाराज विक्रमसिंह कच्छपघटने लिखाया था। इस लेखके दो भाग हैं। पहलेमें किसी अर्जुनका व उसकी सन्तानोंका वर्णन है जिसकी प्रशंसा धारके राजा भोजने की थी। दूसरेमें मंदिरके स्थापनका कथन है।

यह वि० सं० ११४५ या सन् १०८८ का है। यह लेख बहुत उपयोगी है, क्योंकि इसका सम्बन्ध दूसरे लेखोंसे है।

(Conningham A. S. R. XX P. 99 & Epigraphica Indica II P. 237).

नकल लेख दूबकुंड।

Ep. I. Vol. II P. 237.

Dubkund (Gwalior) Jain Temples.

(१) ओं नमो वीतरागाय। आ–द्रन्टि–‥टना (घत्पा) दपीठं लुठन्मं (दा) रत्न गमं (द) गुंज (द) लि (म) न्निष्ठ्यूत सांराविणम् (त) (२) (त्पा) ‑वद्ध (चः) ‥रसु——‥ (तां) ‥ि द्दे (ग) मिवाकरोत्स ऋषभ स्वामी श्रियेस्तात्सता (म्)। विभ्रा–(३) णोगुण संहतिं हततमस्तापो निज ज्योतिषा, युक्तात्मापि जगंति संगत जयश्चक्रे सरागाणि यः उन्माद्यन्म–(४) करध्वजोर्जित-गजग्रासोल्लसत्केसरी संसारोग्रगदच्छिदेस्तु स मम श्रीशान्तिनाथो जिनः ॥ जाड्यं सत्वदखंडित–(५) क्षयमपि क्षीणाखिलोपक्ष यं साक्षाद्दीक्षितमक्षिभिर्दधदपि प्रौढं कलंकं तथा। चिन्हत्त्वाद्यदुपांतमाप्य मततं जात (६) स्तथा ? नंदकृच्चन्द्रः सर्वजनस्य पातु विपद–श्चन्द्रप्रभोऽर्हन्स नः॥ शोकानोकहसंकुलं रतितृणश्रेणि प्रणश्यद्भ्रम (७) त्माध्वगपूगमुद्गतमहामिथ्यात्त्ववातध्वनि। यो रागादिमृगोपघात-कृतधीर्ध्यानाग्निना भस्मसाद् भावं कर्म्म (८) वनं निनायजयतात्सोयं जिनः सन्मतिः॥ प्रसाधितार्थगुर्भव्यपंकजाकर (भास्करः)। अंतस्तमोपहो वोस्तु गो–(९) तमो मुनिसत्तमः॥ श्रीमज्जिनाधिपति सद्वदनारविंद मुद्गच्छदच्छतरवोध समृद्धगंधम्। अध्यास्य या जगति

पंकजवासिनी–(१०) ति ख्यातिं जगाम जयतु श्रुतदेवता सा ॥
आसीत्कच्छपघातवंशतिलकस्त्रैलोक्यनिर्यद्यशः पांडु श्रीयुवराज-
सूनुर–(११) समद्युद्भीमसेनानुगः । श्रीमानर्जुनभूपतिः पतिरपाम-
प्यापयत्तुल्यतां नो गांभीर्यगुणेन निर्जित जगद्धन्वीधनु–(१२) र्विद्यया
श्रीविद्याधर देव कार्यनिरतः श्रीराज्यपालं हठात्कंठांस्थिच्छिदनेक-
वाणनिवहैर्हत्वामहत्त्याहवे । (१३) डिंडीरावलिचंद्रमंडलमिलन्मुक्ता-
कलापोज्ज्वलैस्त्रैलोक्यं सकलं यशोभिरचलैर्योजस्रमापूरयत् ॥ यस्य
(१४) प्रस्थानकालोत्थितजलधिरवाकारवादित्रशब्दावेगान्निर्गच्छद-
द्रिप्रतिमगजघटाकोटिघंटारवाश्चा संस–(१५) पंतः समंतादहमहमिकया
पूरयंतो विरेमुर्नोरोदोरंध्रभागं गिरिविवरगुरूद्यत्प्रतिध्वानमिश्राः ॥
दिकुच–(१६) क्राक्रमयोग्यमार्गणगणाधाराननेकान् गुणानच्छिन्ना-
ननिशं दधद्विधुकला संस्पर्द्धमानद्युतीन् । सूनु–(१७) च्छिन्नधनुर्गुणं-
विजयिनोप्याजौ विजिष्णोर्जितं, जानो स्मादभिमन्युरन्यनृपतीनाम-
न्यमानस्तृणम् ॥ यस्यात्यद्भुत–(१८) वाहवाहनमहाशस्त्रप्रयोगादिषु,
प्रावीण्यं प्रविकत्थितं प्रथुमति श्रीभोजपृथ्वीभुजा च्छत्रालोकनमात्र-
जात–(१९) भयतोद्दप्तादि भंगप्रदस्यास्य स्याद् गुणवर्ण्णने त्रिभुवने
को लब्धवर्ण्णः प्रभुः ॥ तुरगखरखुराग्रोत्खातधात्री–(२०) समुत्थं
स्थगयदहिमरश्मेर्मंडलं यत्प्रयाणे । प्रचुरतररजोन्याशेषतेजस्वितेजो-
हतिमचिरत–(२१) एवाशंसतीवाॅनिवारम् ॥ शरदमृतमयूखप्रेंख-
दंशुप्रकाशप्रसरदमितकीर्त्तिव्याप्तदिक्चक्रवालः । अजनि विजय–
(२२) पालः श्रीमतो स्मान्महीशः शमितसकलधात्री-मंडलक्लेशलेशः॥
भयं यच्छत्रूणां त्रिदशतरुणी वीक्षितरणे । (२३) क्रमेणाशेषाणां
व्यतरदसदप्यात्मनि सदा। सतोप्यंशन्नादादवनिवलयस्याधिकमतो बुधा-

नामाश्चर्यं व्यतनुत (२४) नरेन्द्रो हृदि च यः ॥ तस्माद्विक्रमकारि विक्रमभरप्रारंभनिर्भेदितप्रोत्तुंगाखिलवैरिवारणघटोद्यन्मांसकुं—(२५) भस्थलः । श्रीमान्विक्रमसिंहभूपतिरभूदन्वर्थनामा समं । सर्वाशा प्रसरद्विभासुरयशः स्फार स्फुरत्केसरः ॥ (२६) वालस्यापि विलोक्य यस्य परिघाकारं भुजं दक्षिणं । क्षीणाशेषपराश्रयस्थितिधिया वीरश्रिया संश्रितम् । सर्व्वांगेष्व—(२७) वगूहनाग्रहमहंकारादहं पूर्व्विका राज्यश्रीरकृताधिगस्य विमुखी सर्वान्यपुंवर्ग्गतः ॥ अत्यंतोद्धत विद्विट् तिमि-(२८) र भरमिदिच्छादितानीति ताराचक्रे विष्वक्प्रकाशं सकलजगदमंदावकाशं दधाने । निःपर्यायं दिगास्यप्रसरदुरु-(२९)—कराक्रांत धात्री धरेंद्रे यस्मिन् राजांशु मालिन्यह हसति वृथैवैषको-न्योंशुमाली ॥ यद्दिग्जये वरतुरङ्गखुराग्रसं-(३०) गक्षुण्णावनीवलय-जन्यरजोभिसर्प्पत् । विद्वेषिणां पुरवरेषु तिरोहितान्यवस्तूत्करं प्रल-यकालमिवादिदे—(३१) श ॥ तस्य क्षितीश्वरवरस्य पुरं समस्ति विस्तीर्ण्णशोभमभितोपि चडोभसंज्ञम् । प्राप्तेप्सितक्रियसमग्रदिगाग-तांगि—(३१) व्य।वर्ण्यमान विपणि व्यवहारसारम् ॥ आसीज्जा-यशपूर्व्विनिर्ग्गतवंणिग्वंशांवराभीशुमान् जासूकः प्रकटाक्षता—(३३) र्थनिकरः श्रेष्ठी प्रभाधिष्ठितः । सम्यग्दृष्टिरभीष्ट जैन चरणद्वंद्वार्चने यो ददौ, पात्रौ घायचतुविधं त्रिविधु—(३४) धो दानं युत श्रद्धया ॥ श्रीमज्जिनेश्वरपदांवुरुहद्विरेफोविस्फारकीर्त्तिधवली-कृतदिग्विभागः । पुत्रोस्य वैभव—(३५) पदं जयदेवनामा सीमाय-मानचरितो जनि सज्जनानाम् । रूपेण शीलेन कुलेन सर्व्वस्त्रीणां गुणैरप्यपरैः (३६) शिरस्सु । पदं दधानास्य वभूव भार्या यशो-मतीति प्रथिता प्रथिव्याम् ॥ तस्यामजीजनद सा दृषिदाहडाख्यौ

पुत्रौ पवि (३७)त्र वसुराजित चारुमूर्त्ती। प्राच्यामिवार्कशशिनौ समयः समस्तसंपत्प्रसाधकजनव्यवहारहेतू॥ प्रोन्माद्यत्सकला-(३८) रिकुंजरशिरोनिर्द्दारणोद्यद्यशोमुक्ताभूपितभूरभूरपि भियान्नोन्मार्गगामी च यः। सोदाद्विक्रमसिंहभूप-(३९) तिरतिप्रीतो यकाभ्यां युगश्रेष्ठः श्रेष्ठिपदं पुरेत्र परमे प्राकारसौधापणे॥ आसीद्विशुद्धतरबोधचरित्रदृ-(४०) ष्टि निःशेषसूरि नतमस्तकधारिताज्ञः। श्रीलाटवागटगणो-न्नतरोहणाद्रि माणिक्यभूत चरितोगुरु देवसेन। (४१) सिद्धांतो द्विविधोप्यवाधितधिया येन प्रमाणध्वनि। ग्रंथेषु प्रभवः श्रियामवगतो हस्तस्थ मुक्तोपमः। (४२) जातः श्रीकुलभूषणोखिलवियद्वासो-गणग्रामणीः सम्यग्दर्शन शुद्धबोधचरणालंकारधारी ततः। रत्नत्रया-भरण-(४३) धारणजातशोभस्तस्मादजायत स दुर्लभसेन सूरिः। सर्व्वं श्रतं समधिगम्य सहैव सम्यगात्मस्वरूपनिरतोभवदिद्ध-(४४) धीर्यः॥ आस्थानाधिपतौ बुधादविगुणे श्रीभोजदेवे नृपे सभ्येष्वंवरसेन पंडित शिरोरत्नादिपूद्यन्मदान्। योने-(४५) कान् शतसो अजेष्ट पटुताभीष्टोद्यमो वादिनः। शास्त्रांभोनिधिपारगो भवदतः श्रीशांतिषेणो गुरुः॥ गुरुचर-(४६) णसरोजाराधनावाप्तपुण्य प्रभ-वदमलबुद्धिः शुद्धरत्नत्रयो स्मात्। अजनि विजयकीर्तिः सूक्तरत्नाव-(४७) कीर्ण्णां जलधि भुवमिवैतां यः प्रशस्तिं व्यधत्त॥ तस्माद-वाप्य परमागमसारभूतं धर्मोपदेशमधिकाधिगत-(४८) प्रबोधाः। लक्ष्म्याश्च बंधुसुहृदां च समागमस्य मत्त्वायुपश्च वपुपश्च विनश्वरत्वं॥ प्रारब्धा धर्मकांतारविदाहः (४९) साधु दाहड़ः। सद्विवेकश्च कूकेकः सूर्पटः सुकृते पटुः॥ तथा देवधरः शुद्धः धर्मकर्मधुरन्धरः। चन्द्रा-लिखि-(५०) तनाकश्च महीचन्द्रः शुभार्जनात्॥ गुणिनः क्षण-

नाशिश्रीकलादानविचक्षणाः। अन्येपि श्रावकः केचिद्-(५१) कृतेंधनपावकाः॥ किं च लक्ष्मणसंज्ञोभू-हदेवस्य मातुलः गोष्ठिको जिनभक्तश्च सर्व्वशास्त्र-(५२) विचक्षणः॥ श्रृंगाग्रोल्लिखितांवरं वरसुधा सांद्रद्रवापांडुरं सार्थं श्रीजिनमंदिरं त्रिजगदानंदप्रदं सुं-(५३) दरं। संभूवेदमकारयन्गुरुशिरः संचारिकेत्त्वंवरप्रांतेनोच्छलतेव वायुविहतेद्यामादिशत्पस्य-(५४) ताम्॥ अथैतस्य जिनेश्वरमंदि-रस्य निप्पादनपूजनसंस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीका-(५५) राथं च महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहः स्वपुण्यराशेरप्रतिहतप्रसरं परमोपचपं चेतसि निधाय (५६) गोणीं प्रति विंशोपकं गोधूमगोणी चतुष्टय वापयोग्यं क्षेत्रं च महाचक्रग्राम भूमौ रजकद्रह पू-(५७) र्व्वदिग्भागवाटिकां वापीसमन्वितां प्रदीप मुनिजनशरीराभ्यंजनार्थं करघटिकाद्वयं च दत्तवान्। तच्चार्च-(५८) द्रार्कं महाराजाधिराज श्रीविक्रमासिंहोपरोधेन वहुभिर्वसुधा मुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य य-(५९) स्य यदा भूमिस्तस्य तदा फलमिति स्मृतिवचनान्नि-जमपि श्रेयं प्रयोजनं मन्यमानैः (६०) भाविभिर्भूमिपालैः प्रतिपाल-नीयमिति लिलेखोदयराजो यां प्रशस्तिं शुद्धधीरियाम्। उत्कीर्ण-वा-(६१) न् शिलाकूटस्तील्हणस्तां सदक्षराम्॥ संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमदिने। मगलं महाश्रीः॥

उल्था।

दूवकुंड (ग्वालियर) का शिलालेख जैन धर्मप्रेमी कच्छपघात वंश राजा विक्रमसिंह तथा जायसवाल श्रावक वि० सं० ११४५।

यह शिलालेख दूवकुंडके मंदिरमें सन् १८६६ में मिला था जो एपिग्रेफिका इंडिका जिल्द दो पृष्ठ २३२-४०में इंग्रेजी भाव

सहित दिया हुआ है। यह कुनू नदीके तटपर ग्वालियरसे दक्षिण पश्चिम ७६ मील है। एक कोटके भीतर यह मंदिर है, चारों तरफ घर हैं व छोटे कई मंदिर हैं। यह लेख संस्कृतमें ६१ लाइनका है। श्लोकमें हैं। यह जिनमन्दिर निर्मापणकी प्रशस्ति है। इस प्रशस्तिको श्री विजयकीर्ति महाराजने रचा था। जिसको उदयराजने पाषाणमें लिखा था और तिल्हाणने खोदा था (लाइन ४६, ६०—६१)।

लेखका भाव।

लाइन १ से १० तक मंगलाचरण है। पहले श्रीऋषभदेवकी स्तुति है। फिर शान्तिनाथ भगवानकी स्तुति है कि प्रभुने गुणसमुदायको प्राप्त किया है, अज्ञानका आताप नाश किया है, अपनी ज्ञान ज्योतिसे युक्त होनेपर भी जिन्होंने रागादि भावोंको जीत लिया है तथा जो मदयुक्त कामदेवरूपी हाथीके नाश करनेको सिंहके समान है ऐसे शान्तिनाथ महाराज हमारे संसारका भयानक रोग नष्ट करें। फिर श्री चन्द्रप्रभुकी स्तुति है कि वे चंद्रनाथ भगवान हमको विपत्तियोंसे बचावें जो सर्व जनोंको आनन्द दाता है इत्यादि (शेष भाव नहीं समझमें आया।) पश्चात् श्री सन्मति नामधारी श्री महावीरस्वामीकी स्तुति है। जिसने महामिथ्यात्वके मार्गमें जाते हुए रागादि मृगोंको ध्यानकी अग्निसे भस्म कर दिया है व कर्मोंके वनको जला दिया है व शोकके वृक्षके समूहको व रतिकी तृण श्रेणीको नाश कर दिया है इत्यादि सो जिनेन्द्र जयवंत हों। फिर श्री गौतम गणधरकी स्तुति है कि जो अपने कार्यको सिद्ध करनेवाले भव्य जीव रूपी कमलोंके समूहके लिये

सूर्यके समान हैं वे तुम्हारे अंतरंग अज्ञान अंधकारको दूर करें। फिर श्री जिनवाणीकी स्तुति है कि जो श्री जिनेन्द्रके मुख-कमलसे निकलकर निर्मल ज्ञानके गंधको विस्तारनेवाली है, इसीसे श्रुतदेवती या सरस्वतीको जगतमें कमलवासिनी कहते हैं।

फिर १० से ३१ लाइन तक महाराज विक्रमसिंह और उनके वंशका वर्णन है।

कच्छपघातवंशका तिलक तीन लोकमें जिनका निर्मल यश व्याप्त था, इससे पवित्र श्री युवराजका पुत्र अर्जुन राजा था जो भयानक सेनाका पति था, जिसकी गंभीरताकी तुल्यता समुद्र भी नहीं कर सक्ता था व जिसने अपनी धनुष विद्यासे पृथ्वीको या अर्जुनको जीत लिया था, जो श्री विद्याधर देवके कार्यमें लीन था व जिसने महान् युद्धमें प्रसिद्ध राज्यपाल राजाको उसके कंठकी हड्डीको छेदनेवाले अनेक बाणोंसे जीत लिया था। जिसने अपने अविनाशी यशसे—जो मोतियोंकी माला व समुद्रका फेन या चंद्र मंडलके समान निर्मल था एकदम तीन लोकको पूर्ण कर दिया था। जिस समय वह प्रस्थान करता था उस समयके उसके बाजोंकी ध्वनि समुद्रकी गर्जनाके समान थी व जिसके साथ शीघ्र जाते हुए पर्वत समान हाथीके समूहोंमें जो घंटोंके शब्द होते थे वे चारों तरफ फैलते हुए एक दूसरेको देखते थे तथा वे आकाश और पर्वतकी गुफाको भी अपने शब्दोंसे भरनेमें चूकते न थे, उनके साथ पर्वतकी गुफाओंसे निकली हुई गूंजें भी मिल जाती थीं।

उसका पुत्र राजा अभिमन्यु था जो रात्रि दिन अनेक अखंडित गुणोंका धारी था, जो गुण चहुं ओरसे आनेवाले शरणा-

गतोंके लिये आधार रूप थे व जिसकी प्रभा चंद्रज्योतिको जीतती थी व जो अन्य राजाओंको तृणके समान गिनता था व जिसने बड़े २ विजयी राजाओंको जीत लिया था व जिसका धनुष-बाण कभी खंडित नहीं होता था।

जो सर्वागता वह घोड़े व रथोंके चलानेमें व शस्त्रोंके प्रयोगादिमें दिखाता था, उसकी महिमा प्रसिद्ध भोजराजाने वर्णन की थी. जिसके छत्रको देखने मात्रसे बड़े २ मानी शत्रु भयसे भाग जाते थे, ऐसे राजाके गुणोंको वर्णन करनेमें तीन लोकमें कौन कवि समर्थ हो सक्ता है।

जब वह प्रयाण करता था मोटे २ रजके बादल पृथ्वीसे उठते थे जब भूमिपर घोड़ोंके खुर पड़ते थे। और वे सूर्यमंडलको आच्छादित करते हुए यह मंदिग्ध वाणी कहते थे कि वास्तवमें अन्य सर्व तेजस्वियोंका तेज इसके सामने नष्ट हो जायगा।

इस प्रसिद्ध राजाका पुत्र कुमार विजयपाल था जिसने शरद्-कालके चन्द्रमाकी किरणके समान प्रकाशमान असर्यादित यशसे चहुंदिशाको व्याप्त कर दिया था और जिसने पृथ्वीमंडलके सर्व क्लेशोंका नाश कर दिया था।

यह राजा विद्वानोंके हृदयमें बहुत आश्चर्य उत्पन्न करता था जब वह देवियोंसे देखने योग्य युद्धमें क्षणसे सर्व शत्रुओंको भय उत्पन्न कर देता था। यद्यपि वह स्वयं उनसे पृथ्वी नहीं लेता था तथापि अपनी पृथ्वीका लेशमात्र भी उनको नहीं लेने देता था। इस राजाका पुत्र प्रसिद्ध विक्रमसिंह हुआ जिसका नाम पराक्रममें सिंहके समान होनेसे सार्थक था, क्योंकि अपने वीर्यके प्रभावसे

इसने अपने सर्व शत्रुओंकी हाथियोंकी सेनाकी कुम्भस्थलीको विदारण कर दिया था व जिसका निर्मल यश सिंहके बालोंके समान चारों तरफ फैला हुआ था।

जब कि वह बालक था तब ही उसकी दाहनी भुजाको वीर लक्ष्मीने और सबका आश्रय त्यागकर आश्रित कर लिया था। यह देखकर जब वह बड़ा हुआ तब राज्य लक्ष्मीने उसकी उच्चताके प्रकाशमें अहंकार युक्त होकर सर्व अन्य मनुष्योंसे घृणा करके उसके सर्व अंगको स्पर्श करनेका संकल्प कर लिया था। वास्तवमें वह सूर्य वृथा ही है जबतक कि यह महाराजरूपी सूर्य बड़े २ मानी शत्रुओंके घोर अन्धकारको हटा रहा है, अनीतिगामी तारावलीको ढक रहा है व सर्व जगतमें प्रकाश कर रहा है तथा अपने महत्वकी भयानक किरणोंसे दिगन्त व्यापी होकर पर्वत समान राजाओंको स्पर्श कर रहा है। जब यह दिग्विजय करता था इसके चुने हुए घोड़ोंके तेज खुरोंसे खण्डित पृथ्वी मंडलसे जो रज उड़ती थी वह उसके शत्रुओंके मुख्य नगरोंपर फैल जाती थी और सर्व पदार्थोंको ढक देती थी जो बतलाती थी कि मानों यह प्रलयकाल ही आगया है। इस महाराजाका नगर चडोभ है जिसकी शोभा चहुंओर व्याप्त है। इसके सुन्दर बाजार और उन्नत व्यापारकी महिमा लोगोंमें प्रसिद्ध है जो यहां सर्व ओरसे अपने पासकी वस्तुओंको वेचने और खरीदनेकी इच्छासे आते हैं।

नोट—इस ऐतिहासिक वर्णनसे यह पता चला है कि कच्छपघात वंशमें महाराजा अवराज थे। उनका पुत्र विद्याधर देवका मित्र राजा अर्जुन था जिसने राज्यपालको युद्धमें मारा था। उसका

पुत्र अभिमन्यु था जिसकी महिमा महाराज भोजने की थी, उसका पुत्र विजयपाल था, विजयपालका पुत्र विक्रमसिंह था। इसीके राज्यमें यह शिला लेख लिखा गया।

इस कच्छपघात वंशके दो शिलालेख और हैं। एक वि० सं० ११५० का ग्वालियरके सासबहु मंदिरपर है जिसमें लक्ष्मण, वज्रदामन, मंगलराज, कीर्तिराज, मूलदेव, देवपाल, पद्मपाल और महीपाल राजाओंका क्रम है।

दूसरा नरवरका ताम्रपत्र है जो वि० सं० ११७७का वीरसिंह देवका है जो गगणसिंहदेव फिर शारदसिंहदेवके पीछे हुआ था। ये भिन्न२ वंश हैं जो ग्वालियरके आसपास राज्य करते थे। इस लेखमें जो राजा विजयपाल हैं यह वही नृपति विजयाधिराज हैं, जिनका वर्णन बयानाके शिलालेख वि० सं० ११०० में है। यह बयाना दूबकुण्डसे ८० मील उत्तर है। यह बयानाका लेख भी जैन शिलालेख है। यहां जो राजा भोजका कथन है वह मालवाके परमार भोजदेव ही हैं। लेखमें जो विद्याधरदेवका कथन है यह चंदेलके राजा हैं जो गंडदेवके पीछे हुआ व इसके पीछे विजयपालदेवने राज्य किया है।

दूबकुण्डका प्राचीन नाम चडोभ था। लाइन ३२से ३९में जैन व्यापारी रिषि और दाहड़की वंशावली दी है। जायसपुरसे आए हुए वणिक वंशरूपी आकाशमें सूर्यके समान प्रसिद्ध धनवान सेठ जासूक था जो सम्यग्दृष्टी था व श्री जिनेन्द्र चरणकी पूजामें व श्रद्धानपूर्वक पात्रोंको चार प्रकारका दान देनेमें लीन था। इसका पुत्र जयदेव था जो जिनेन्द्रकी भक्तिमें भ्रमर

समान था, निर्मल कीर्तिवान था व सज्जनोंके लिये उत्तम चारित्र-वान था। उसकी स्त्री यशोमति थी जो अपने रूपसे, शीलसे, कुलसे सर्व स्त्रीके गुणोंमें शिरमौर थी व पृथ्वीमें प्रसिद्ध थी। उस स्त्रीके दो पुत्र हुए एक ऋषि दूसरे दाहड, जो सुंदर मूर्ति थे तथा पूर्व दिशामें सूर्य चन्द्रके समान शोभनीक थे। ये धनके उपार्जनमें व्यवहारकुशल थे। इन दोनोंमेंसे बड़े भाई ऋषिको अनेक महल व कोटसे शोभित नगरमें राजा विक्रमने श्रेष्ठीपद प्रदान किया था।

फिर लाईन ३९ से ४८ तकमें उस समयके जैन आचार्योंका वर्णन है।

श्रीलाट वागट गणके उन्नत पर्वतके मणि रूप निर्मल दर्शनज्ञान चारित्रके कारण व अनेक आचार्य जिनकी आज्ञाको मस्तक चढ़ाते हैं ऐसे गुरु देवसेन महाराज प्रसिद्ध हुए। जिन्होंने निश्चय व्यवहार रूप दोनों प्रकारके सिद्धांतको निर्बाध बुद्धिसे जानकर प्रमाण मार्गसे ग्रन्थोंमें संकलित किया, जिससे वे परम ऐश्वर्यको प्राप्त हुए व जिनके हाथमें मानो मुक्ति ही आगई। उनके शिष्य कुलभूषण मुनि हुए जो दिगम्बर मुनियोंमें मुख्य थे व सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रके अलंकारसे भूषित थे। उनके शिष्य श्रीदुर्लभसेन आचार्य थे जो रत्नत्रयमई आभरणसे शोभित थे जो सर्व शास्त्रको पढ़कर आत्म स्वरूपमें लीन थे व परम धैर्यवान थे। इनके शिष्य श्री शांतिसेन गुरु थे जिन्होंने अस्थानके स्वामी राजा भोजकी सभामें अपनी वादकलासे सैकड़ों मद-युक्त वादियोंको जीत लिया था जिन्होंने पंडित अम्बरसेन

आदि विद्वानोंपर आक्रमण किया था। यह शास्त्र समुद्रके पारगामी थे। उनके शिष्य श्री विजयकीर्ति थे जो अपने गुरुके चरणकमलकी आरधनाके पुण्यसे निर्मल बुद्धिके धारी थे व शुद्ध रत्नत्रयके पालक थे इन्होंने ही रत्नोंकी मालके समान इस प्रशस्तिको लिखा है। लाइन ४८ से ९२ तक श्री जिन मंदिरके निर्माताओंका वर्णन है।

श्री विजयकीर्ति महाराजसे परमागमका सारभूत उपदेश पाकर कि यह लक्ष्मी, बंधु सुहृद्का समागम व यह आयु या शरीर नाशवंत हैं। इस धर्मस्थानके रचनेका प्रारंभ सज्जन दाहडने और उनके साथी विवेकवान कूकेक, पुण्यात्मा सूर्पट, शुद्ध व धर्म कर्ममें निपुण देवधर व महिचन्द्र व अन्य चतुर श्रावकोंने किया। लक्ष्मण व जिनभक्त गोष्ठिकने भी मदद दी। इन्होंने अमृतके समान श्वेत जिन मंदिर उच्च शिखर सहित तीन जगतको आनंद देनेवाला सुन्दर बनवाया। लाइन ९४ से ६० तक गद्यमें महाराज विक्रमसिंहने जो जिनमंदिरको दान किया उसका कथन है। इन जिन मंदिरके रक्षण, पूजन, सुधार व जीर्णोद्धारके लिये महाराजाधिराज श्री विक्रमसिंहने अपने दिलमें पुण्य राशिके अमर्याद प्रसारको धारणकर हरएक अन्नकी गोणीपर एक विंशोपक नामका कर विठाया व महाचक्र ग्राममें चारगोणी गेहूं वोने योग्य खेत तथा रजकद्रहके पूर्व एक वाग कूपसहित प्रदान किया तथा दीपकादिके लिये कुछ वड़े तेलके प्रदान किये और आज्ञा की कि आगेके राजा वरावर इस आज्ञाको मानें कि जिसकी भूमि है उसीको उसको फल मिलना चाहिये। लाइन ६१में प्रशस्ति लिखनेवाले

उदयराज व खोदनेवाले तील्हणका वर्णन है। संवत ११४९ भादों सुदी ३ सोमवार।

नोट—इससे विदित होता है कि दूबकुंडमें देवसेन दिगंबराचार्य बहुत प्रसिद्ध होगए हैं तथा राजा भोज मालवाधीशके समयमें शांतिसेन मुनिने वाद करके विजय प्राप्त की थी। जायसपुर निवासी ही जायसवाल जातिके लोग हैं। यह जायसपुर अवधका जायस है या दूसरा है सो पता लगाना योग्य है।

जैसवाल जातिके लिये यह लेख बड़े महत्त्वका है। राजा विक्रमसिंह भी जैन भक्त प्रतीत होता है।

(२१) गंढवल—परगना सोनगच्छ जिला शोजापुर। सोनकच्छसे उत्तर ६ मील प्राचीन ग्राम है। यह बहुत प्राचीन स्थान है। बहुतसे पुराने सिक्के मिलते हैं। बहुतसे मंदिर ध्वंश पड़े हैं। जैन मूर्तियें बहुतसी हैं जिनमें एक ९ फुट लम्बी है व दूसरी १४ फुट लम्बी है, परन्तु इसके पग खंडित हैं।

(२२) खिलचीपुर—जि० मंदसोर ग्रामके उत्तर एक कूएंपर सूवतेहून मिहिरकूलके विजयिता राजा यशोधर्मनका कथन है। सन् ९३३–९३४। इस कुएको किसी दक्षने संवत ९८० में बनवाया था।

(२३) कोटवल या कुटवार—पर्गना नूराबाद जिला तोंबरगढ़। नूराबादके उत्तर–पूर्व १० मील एक पहाड़ीपर बसा है। प्राचीन नाम कमंती भोजपुर या कमंतलपुर है। बहुत प्राचीन स्थान है। पुराने सिक्के मिलते हैं। एक वर्ग मील तक ध्वंश स्थान हैं। एक महावीरजीके मंदिरके बाहर कुआं १२० फुट गहरा है।

(२४) मउ–परगना महगांव जि० भिंड–महगांवसे १६ मील। यहां श्री पार्श्वनाथजीके नामसे कुंआरमासमें एक बड़ा जैन धार्मिक मेला हुआ करता है।

(२५) पानविहार–पर्गना उज्जैन–यहांसे उत्तर ८ मील। यहां ग्राममें पुराने जैनमंदिरोंके ध्वंश हैं। बहुतसे खुदे हुए पत्थर जो पहले जैन मंदिरोंमें लगे थे बहुतसे मकानोंकी भीतोंपर लगे देखे जाते हैं।

(२६) राजापुर या मायापुर–पर्गना पिछार जि० नरवर। महुअर नदी पर ग्रामके उत्तरपूर्व करीब १ मीलपर एक पाषाणका बौद्धस्तूप है जो ४९॥ फुट लम्बा है। इसको कोठिलामठ कहते हैं। यह दर्शनीय है।

(२७) सुहानियां (सोंनियां या सिहोनिया) पर्गना गोहड़ जिला तोंवरघार। यह बहुत ही प्राचीन ऐतिहासिक ग्राम है।

लश्करसे पूर्व ३८ मील कटवरसे उत्तर पूर्व १४ मील है। असनी नदीके बाएं तटपर है। इसको ग्वालियरके संस्थापक सूरजसेनके बुजुर्गोंने स्थापित किया था। कनिंघम साहबने यहां शिलालेख वि. सं. १०१३, १०३४ व १४६७के पाए हैं। ग्रामके पश्चिम एक स्तम्भ हैं जिसको भीमकीलाट कहते हैं दक्षिणकी ओर कई दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं। इस नगरको कन्नौजके विजयचंदने सन् ११७०में ले लिया था। यहां किलेके दक्षिण आध मील पर एक बडी जैन मूर्ति १९ फुट ऊंची है। जिसपर सं० १४६७ है। इसके पास दो जैन मूर्तियें छः छः फुट ऊंची हैं। सर्व ही नग्न कायोत्सर्ग हैं। श्रावक लोग पूजते हैं।

(२८) सुन्दरसी--पर्गना सोनकच्छ जि० शोजापुर। शोजापुरसे पश्चिम १९ मील। यहां सन् १०३२ में राजा सुदर्शन राज्य करते थे। एक जैन मंदिर है जिसमें लेख सं० १२२१का है।

(२९) सुसनेर-पर्गना सुसनेर जि० शोजापुर--शोजापुरसे उत्तर ३६ मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर है।

(३०) तेरही-पर्गना व जि० ईसागढ़। नरोदसे दक्षिण पूर्व ८ मील। यहां बढ़िया पुरातत्व है। दो प्राचीन मंदिर हैं। एकमें बढ़िया खुदाई है। यहां दो खम्भे पड़े हैं उनपर भी लेख हैं। एकमें यह कथन है कि यहां मधुवेनी नदी (जो अब महुअर कहलाती है) हैं। एक युद्ध महा सामंताधिपति उंदभट्ट और गुणराजके मध्यमें हुआ था जिसमें प्रसिद्ध वीर चांडियाना भाद्र वदी ४ सं० ९६० शनिश्चारको मारा गया था। यह लेख बहुत उपयोगी है क्योंकि उदंभट्टका नाम ९६४ संवतके सय्यादरीके लेखमें आता है। यह कन्नोजके राजाके आधीन था।

(३१) उनचोड-पर्गना सोनकच्छ-यहांसे दक्षिण पूर्व २८ मील एक पाषाण भीत है। एक द्वार जैन मंदिरोंके ध्वंशोंसे बनाया गया है।

(३२) उन्दास-पर्गना उज्जैन-इसको जबरावाद कहते हैं। यह उज्जैनसे पूर्व ४ मील है। यहां एक बड़ा सरोवर है जिसको रत्नागरसागर कहते हैं। उसका तट जैन मंदिरोंके अंशोंसे बनाया गया है।

(३३) सारंगपुर-भिलसासे पश्चिम ८० मील व आगरसे पूर्व दक्षिण ३४ मील। यहां सन् ई० से १०० से ५०० वर्ष पूर्वके पुराने सिक्के पाए जाते हैं।

(२) इन्दौर रेजिडेन्सी।

इन्दौर राज्य—इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें ग्वालियर, पूर्वमें देवास धार और नीमाड, दक्षिणमें खानदेश, पश्चिममें बड़वानी और धार। यहां ९५०० वर्गमील स्थान है।

इतिहास—इन्दौरको मल्हारराव हुलकरने बसाया था जो धनगर जातिमें सन् १६९४ में पैदा हुए थे। यहां सन् १७६७ से १७९५ तक अहल्याबाईने राज्य किया। यह नमूनेदार शासक थी। लिखा है—

"Her toleration, Justice, and careful management of all departments of state were soon shown in increased prosperity of her dominions and peace in her days. Her charities are proverbial."

भावार्थ—उसकी मध्यस्थवृत्ति, न्यायपरायणता और राज्यके सर्व विभागोंकी चतुरताके साथ व्यवस्था ऐसी थी जिससे शीघ्र ही उसके राज्यमें ऐश्वर्यकी वृद्धि और शांतिकी वृद्धि होगई थी। उसके दानोंका वर्णन तो आदर्श रूप है।

पुरातत्व—यहां दो स्थान बहुत प्रसिद्ध हैं, एक धमनेर दूसरा ऊन। इसके सिवाय बहुतसे प्राचीन स्थान मालवामें हैं जिनमें विशेषकर १० वींसे १३ वीं शताब्दीके जैन और हिन्दू मंदिर हैं। कुछ मंदिर पुराने मंदिरोंको तोड़कर बनाए गए हैं, जैसे मोरी, इन्दोक, झारदा, भकला आदिपर—

यहां सन् १९०१ में १४२९५ जैनी थे।

महेश्वरका रुईका सूत प्रसिद्ध है।

रामपुर–भानपुर जिला–यहां २१२३ वर्गमील स्थान है। बहुतसे प्राचीन स्थान यहांपर हैं जो इसे महत्वका स्थान प्रगट करते हैं। सातवींसे ९ मी शताब्दी तक यह बौद्धोंका स्थान रहा है। धमनेर, पोलादनगर और खोलवींमें बौद्ध गुफाएं हैं। नौमीसे १४ वीं शताब्दी तक यह परमार राजपूतोंका एक भाग था जिनके राज्यके बहुतसे जैन मंदिर अवशेष हैं। इस वंशका एक शिला-लेख हालमें मोरी ग्राममें मिला है जो गरोट पर्गनामें है। शामगढ़ स्टेशनसे ६ मील है।

निमाड़ जिला–यहां ३८७१ वर्गमील स्थान है। प्राचीन बौद्धकालमें यह उपयोगी ऐतिहासिक जगह थी। यहां दक्षिणसे उज्जैन तक मार्ग एक तो महिष्मती या महेश्वर होकर जाता था दूसरा पश्चिममें ८ चीकलदा और ग्वालियर राज्यमें बाघ होकर जाता था। सराऐं पाई जाती हैं। तीसरी शताव्दीमें इसके उत्तरीय भागपर हैहय वंशवालोंका राज्य था जिन्होंने महिष्मतीको राज्य-धानी बनाया था। नौमी शताब्दीमें मालवाके परमारोंने राज्य किया था। उनके राज्यके चिह्न जैन व अन्य मंदिरोंमें मिलते हैं जैसे ऊन, हरसुद, सिंधाना और देवलापर।

इन्दौरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) धमनेर–गुफाऐं–झालरापाटनसे दक्षिण पश्चिम ५० मील। चन्दवाससे पूर्व २ मील, शामगढ़ स्टेशनसे १३ मील है। यहां बौद्ध और ब्राह्मणकी गुफाएं हैं। १४ वीं बौद्ध गुफा प्रसिद्ध है। इसको बड़ी कचहरी कहते हैं। भीमका बाजार नामकी गुफा

बहुत ही सुन्दर है जिसमें ५वीं, छठी शताब्दीके मध्यकी बौद्ध मूर्तियां हैं। ब्राह्मण गुफाएं ८ वीं और ९ शताब्दीके मध्यकी हैं। नं० १३की गुफाको छोटाबाजार कहते हैं। यहां १५ मूर्तियां हैं जो जैन या बौद्धकी होंगीं। ऐसी गुफाएं पोलाद नगर (गरोटके पास), खोलवी, आवर, वेंनैगा (झालावार), हातीगांव, रैणगांव (टोंक) में हैं। ये सब २० मीलकी चोड़ाईमें हैं। धमनेरकी पहाड़ी १४० फुट ऊंची है। घेरा २ या ३ मीलकी है। सबसे बड़ा दर्शनीय एक पाषाणका मंदिर धर्मनाथजी पहाड़ीपर है। यह एलूरांके कैलास मंदिरके समान है। यह जैनका होना चाहिये, जांचकी जरूरत है।

(२) महेश्वर—नीमाड़ जिला, नर्मदानदीके उत्तर तटपर प्राचीन नगर है। इसको चोली महेश्वर कहते हैं। चोली इसके उत्तर ७ मील पर है। इसका नाम रामायण, महाभारत व बौद्ध साहित्यमें आया है। यह दक्षिण पैथनसे श्रावस्ती जाते हुए मार्गमें पड़ता है। उस मार्गमें मुख्य ठहरनेके स्थान हैं। महिष्मती, उज्जैन, गोणद्ध, भिलसा, कौसम्बी व साकेत इस नगरीका हैहयवंशी राजाओंसे जो चेदीके कलचूरी राजाओंके बुजुर्ग थे प्राचीन सम्बन्ध रहा है। कलचूरियोंके अधिकारमें मध्य भारतका पूर्व भाग नौमीसे बारहवीं शताब्दी तक था। इस वंशका प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्यार्जुन इस नगरीमें रहता था ऐसा माना जाता है। पश्चिमी चालुक्य राजा विनयदित्यने सातवीं शताब्दीमें यहांके हैहय वंशियोंको पराजित किया तब महिष्मती उसके अधिकारमें आगया। इसके नीचे हैहय राजाओंने गवर्नरके रूपमें कार्य किया। कात्यायनने पाणिनी व्याकरणकी टीकामें इस नगरीका नाम लिखा है। यह नगरी रंगीन

सारी व रेशमी पाड़की धोतीके बनानेके लिये प्रसिद्ध था।

सं० नोट—यहां पोरवाड़ दि० जैनियोंका मुख्य स्थान रहा है।

(३) ऊन—परगना खड़गांव—यहांसे ११ मील। नीमाड़ जि० बहुत प्राचीन स्थान है। यहां १२ वीं शताब्दीके जैन मंदिर हैं। एक मंदिरमें धारके परमार राजाओंका लेख है। यह नरमदाके दक्षिण सनावद स्टेशनसे ६० मील है। खजराहाके मंदिरोंके समान यहां भी विशाल मंदिर जैन और हिन्दू दोनोंके हैं। जैन मंदिरोंको विना सम्हालके छोड़ दिया गया है। ये मंदिर दिगम्बर जैनियोंके हैं जिनके माननेवाले इस प्रदेशमें बहुत कम रह गए हैं परन्तु हिन्दू मंदिरोंमें अब भी पूजा पाठ जारी है। ग्रामकी उत्तरी हद्दकी ओर जैन मंदिर हैं जिनमेंसे दो मंदिरोंको चौबारादेरा कहते हैं। चौबारा देहरा नं० २ का शिखर कुछ गिर गया था। यह बहुत ही उपयोगी मंदिर सर्व समूहके मध्यमें है क्योंकि इसमें मंदिरोंके बननेकी मितीका पता लगता है। इस मंदिरके अन्तरालमें तीन शिलालेख हैं, जिनसे प्रगट होता है कि मुसलमानोंके अधिकारके पहले यह मंदिर बच्चोंके लिये विद्यालयके काममें आता था। एक छोटे वाक्यमें मालवाके उदयदित्य राजाका नाम है जिससे प्रमाणित होता है कि ये मंदिर उसके समयसे पहले बने थे। दूसरे लेखमें मात्र संस्कृत व्याकरणके कुछ सूत्र हैं, तीसरा लेख एक सर्पके ऊपर सर्पबन्ध रचनामें अंकित है, इसमें स्वर और व्यंजन अक्षर दिये हैं। चौबारा देहरा नं० १ में जैन मूर्तियां नहीं रही हैं किन्तु चौबारा देहरा नं० २ और ग्वालेश्वरके जैन मंदिरमें दिगम्बर जैनोंकी बड़ी २ मूर्तियां हैं। दोनों ही मंदिर मध्यका-

लीन भारतीय शिल्पकलाके सुन्दर नमूने हैं, यद्यपि ग्वालेश्वरके मंदिरका नकशा चौवारा देहरा नं० २ से बहुत बढ़िया है। ये दोनों ही मंदिर खड़गांवसे ऊन जानेवाली सड़कपर हैं। इस चौवारा देरा नं० २ के गर्भग्रहमें तीन दिगम्बर जैन मूर्नियां एक आसनपर खड़ी हैं। इनमेंसे एक पर विक्रम सं० १३ मालूम होता है। ग्वालेश्वर मंदिरके गर्भग्रहमें एक पहाड़ीपर तीन वड़ी दिगम्बर जैन मूर्तियां एक आसनपर हैं। प्रछाल करनेको मस्तक तक पहुंचनेके लिये सीढ़ी वनी हैं जैसे खजराहामें श्री ऋषभदेवके मंदिरमें हैं। चौवारा देरा नं० १ और खड़गांव ऊन सड़कके मध्यमें और भी मंदिर हैं (A. S. R. 1918-19 P. 17), चौवारा देहरामें एक बड़ी मूर्तिपर वि० सं० १९८२ है। जैनाचार्य रत्नकीर्ति हैं। ग्वालेश्वर मंदिरमें एक दि० जैन मूर्ति १२॥ फुट ऊंची है। कुछ मूर्तियोंपर सं० १२६३ है।

(४) विजवार या विजावड–पर्गना कटाफोर जिला नीमाड। इंदौरसे पूर्व ४९ मील व नीमावरसे पश्चिम ३३ मील। यहां कई जैन मंदिरोंके खण्डहर हैं। वंदेर पेखान नामकी पहाड़ीपर बहुतसी जैन मूर्तियां स्थापित हैं। इन मंदिरोंके सुन्दर खुदाईके पाषाणोंको महादेवके मंदिरके वनानेमें काममें लाया जारहा है। ग्रामके उत्तर १०वीं या ११वीं शताब्दीके वहुत वड़े जैन मंदिरके शेष हैं। इन ध्वंशोंमें तीन वड़ी दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं (१) ९ फुट ३ इंच ऊँची (२) ६ फुट ३ इंच ऊंची, नासिका और भुजा नहीं है (३) ८ फुट ३ इंच ऊंची २ फुट १० इंच आसनपर चौड़ी, हाथ नहीं हैं। यह शांतिनाथजीकी मूर्ति है। आसनके लेखमें

सं० १२३४ फागुन वदी ६ है। एक त्रिकोण पाषाण पड़ा है जो ४ फुट ३॥ इंच लम्बा २ फुट ४ इंच ऊंचा है। ऊपर १ मूर्ति हैं। ऊपर छत्र दुंदुभीवाजे व गंधर्वदेव हैं। यहां दतोनी नामकी धारा है जिसके घाट और सीढ़ियोंपर जैन मंदिरके पाषाण लगे हैं। जो पहाड़के नीचे बीजेश्वर महादेवका मंदिर है उसकी भीतोंमें पद्मासन और खड्गासन जैन मूर्तियां लगी हैं तथा जैन मंदिरके शिखरको तोड़कर इस मंदिरका शिखर बनाया गया है।

(५) चोली-पर्गना महेश्वर जि० नीमाड़-महेश्वरसे उत्तर पूर्व ८ मील-यहां कुछ प्राचीन जैन मंदिरोंके ध्वंश हैं।

(६) देहरी-पर्ग० चिकल्दा जि० नीमाड़-चिकल्दासे उत्तर १४ मील। यहां श्री पार्श्वनाथका एक जैन मंदिर है।

(७) देपालपुर-इन्दौरसे उत्तर पश्चिम २० मील। इस नगरको धार वंशके देवपाल परमार (सन् १२१८-१२३०) ने बसाया था। कई जैन मंदिर हैं जिनमेंसे दोमें वि० सं० १५४८ और १६३९ है।

देपाल और बनदियाके मध्यमें एक कई मीलका बड़ा सरोवर है। इसको राजा देवपालने बनवाया था जिसके तटपर एक प्राचीन बड़ा जैन मंदिर है जो बनदिया ग्राममें है। जिसमें लेख है कि श्री आदिनाथकी मूर्ति वैसाख सुदी ३ मंगलवार सं० १५४८ को स्थापित की गई थी।

(८) ग्वालनघाट-जि० नीमाड़, मंडवा किलासे १० मील। यहां आधमील जाकर बीजासन देवीका मंदिर है। चैतमें मेला भरता है।

(९) झारदा-जि० महिदपुर-यहांसे उत्तर ८ मील। इस नगरको मांदलजी अंजनाने संवत १२०९ में वसाया था। यह गुजरातसे आया था। एक वडी सड़कके मध्यमें जहां अब पीरकी कब्रके खुदाई करनेसे प्राचीन मूर्तियें मिली हैं, इससे प्रगट है कि यहां पुराना मंदिर था। दो मूर्तियोंमें संवत १२२६ और १२२७ है। तीसरी मूर्ति स्पष्ट जैन तीर्थंकरकी है।

(१०) कथोली-पर्गना भानपुर-जिला रामपुर भानपुर। भानपुरसे उत्तर पूर्व १२ मील। यहां जब जैन समाजने सं० १६९२ में मंदिर वनवाया था तव यह नगर वहुत उन्नतिपर था। इसको गगरोनी ठाकुरोंने सन् १८६७ में लूटा था। तव फिर इसका जीर्णोद्धार किया गया। ग्रामके बाहर प्राचीन जैन मंदिरोंके खंडहर हैं।

(११) कोहल-पर्गना भानपुर-यहांसे पश्चिम ६ मील। यह नगर पहले चंद्रावतोंकी राज्यधानी था। ग्रामके पास लक्ष्मीनारायणके मंदिरके पूर्व दो जैन मंदिरके अवशेष हैं जिनको सासबहुका मंदिर कहते हैं। सासके मंदिरके मध्यमें कृष्ण पाषाणके श्री महावीरस्वामी सं० १६९१ हैं। दो मूर्तियें श्री पार्श्वनाथजीकी हैं। वेदीके नीचे भौंरा है। दूसरे मंदिरमें 'जो पहलेके दक्षिण है' अब भी पूजा होती है। यहां दो सुन्दर खुदे हुए खंभे हैं। मंडपमें १२ खंभे हैं, वेदी पुरानी है, परन्तु मूर्ति नवीन प्रतिष्ठित है। उत्तरकी कोठरीमें श्री आदिनाथ हैं, दक्षिणमें शास्त्रभंडार है।

(१२) कोथड़ी-पर्गना सुनेल जि० रामपुरा-भानपुरा। भानपुरासे ३० मील व सुनेलसे १० मील। यहां ग्राममें कई जैन मंदिर हैं। एक मंदिरके इतिहाससे माल्रम होता है कि जैन और

ब्राह्मणोंमें द्वेष था। एक जैन मंदिरको अब रामका मंदिर ब्राह्मणोंने मान लिया है और रामको "जैन भंजन जवरेश्वर राम" कहते हैं। यह स्थानीय कहावत है कि १४वीं शताब्दीमें कोथड़ीमें बहुत जैनलोग रहते थे उनके बनाए हुए मंदिर थे। जैनियोंमें और सर्कारी अफसरोंमें कुछ गैर समझ होगई तब उन्होंने नगरको छोड़ दिया और थोड़ी दूर जाकर बसगए, उसको भी कठोदिया नाम दिया। हिन्दुओंने जैन मूर्तियें मंदिरसे हटा दीं और उनके स्थानपर राम लक्ष्मण सीताकी मूर्तियें रख दीं।

अभी भी जैन लोग कोठड़ीमें पूजाके लिये आते हैं, परन्तु जबतक कोठड़ी परगनेमें रहते हैं वे कुछ खाते पीते नहीं हैं, पूजाके पीछे वे पिरावा ग्राममें जाकर भोजन करते हैं।

(१३) माचलपुर—पर्गना जीरापुर जि० रामपुर—भानपुरा काली संबसे पूर्व ६ मील। सरोवरपर दो जैन मंदिर हैं जिनमें अच्छी कारीगरी है।

(१४) मोरी—पर्ग० भानपुर जिला रा० भा०। यहां कई बहुत सुन्दर जैन मंदिरोंके अवशेष हैं। एकमें लेख १२ वीं शताब्दीका है। इन मंदिरोंको मांडूके घोरी बादशाहोंने नष्ट किया था।

(१५) नीमावर—पर्ग० नीमावर—नर्मदा नदीपर, अलेबरूनीने ११ वीं शताब्दीमें इसका नाम लिया है। यहां परमारोंके समयका लाल पाषाणका एक सुन्दर जैन मंदिर है।

(१६) रायपुर—पर्ग० सुनेल जि० रा० भा०—झालरापाटनसे दक्षिण १२ मील। यहां ग्राममें प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(१७) संदलपुर-डि० नीमावर-यहांसे उत्तर १९ मील। ग्राममें मंदिर मूलमें जैनका था उसको हिन्दुओंने सन् १८४१ में महादेवका मंदिर बनां लिया।

(१८) सुन्दरसी-जि० महीदपुर-यहां कई प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(१९) पुरा गिलन-वलियासे कोठड़ी जाते हुए सड़कपर एक ग्राम। यहां १ सरोवरपर ११ वीं या १२ वीं शताब्दीका एक प्राचीन जैन मंदिर है। द्वारके ऊपर तथा मंदिरकी वांई ओर कुछ जैन मूर्तियें हैं। पहली मूर्तिमें श्री महावीर स्वामीके माता पिता हैं जो वृक्षके नीचे वैठे हैं उनके हरएक दासी हैं। आसनपर घुड़सवारोंकी पंक्ति है। वृक्षके ऊपर तीन जैन मूर्तियें हैं। दूसरी मूर्ति खड़े आसन श्री पार्श्वनाथजीकी है। दो मूर्तियें शासनदेवीकी हैं जिनमें लेख है। उसमें महन्तारिकादेवी लिखा है। प्रतिष्ठाकारिका रूपिणी दोनोंमें मस्तक नहीं है। देवी सिंहासनपर वैठी है, एक पग फैला हुआ है। चार हाथ हैं, दाहने हाथमें वच्चा है। नीचे सिंह हैं। सरोवरके पास वहुत जैन मूर्तियें हैं।

(२०) चैनपुर-भानपुराका चंद्रावत किला जो एक वड़े टीलेके नीचे है। ग्रामसे दूर व भानपुरसे नवली जाते हुए गाड़ीके मार्गके पास एक वड़ी दि० जैन मूर्ति भूमिपर विराजित है। यह १३ फुट ३ इंच ऊँची व ३ फुट ८ इंच चौड़ी है।

(२१) संधारा-नीमचसे झालरापाटन जाते हुए पुरानी फौजी सड़कसे ३ मील। यहां वहुत प्राचीनता है। यहां दो जैन मंदिर

हैं उनको तम्बोलीके मंदिर कहते हैं। खुदे हुए खम्भे हैं। वड़ा मँडप है। वेदीघरका पाषाण द्वार स्वच्छ है। वेदीमें एक पद्मासन जैन मूर्ति है। वेदीकी कोठरीकी छतमें तीन छोटे खुदे हुए आले हैं, मध्यका सबसे बड़ा है वे आदिनाथजी भक्तिमें हैं। दोनों मंदिर दि० जैनोंके हैं। अव भी पूजा होती है, दोनोंमें वड़ा श्री आदिनाथका प्राचीन है। दूसरा भी आदिनाथका है। इसका जीर्णोद्धार हुआ है। अव मूर्तियें नवीन स्थापित हैं।

(२२) किथुली—जिस टीलेपर नवली और तक्षकेश्वर ग्राम हैं उसके नीचे एक प्राचीन जैन मंदिर है। इस मंदिरका मण्डप जैन चित्रकारीका दर्शनग्रह है। मंडपमें जिनकी मूर्तियें धातुकी व सफेद, काले व पीले पाषाणकी हैं। गर्भ गृहमें वड़ा कमरा है जिसमें तीन आले हैं, मध्यमें पद्मासन श्रीमहावीरस्वामी हैं व अगल बगल खड़गासन दि० जैन मूर्तियें हैं। वेदीमें बहुतसी दि० जैन मूर्तियें हैं। मूलनायक एक बड़ी मूर्ति श्री पार्श्वनाथ भगवानकी है।

(२३) कुकदेश्वर—रामपुरासे पश्चिम १० मील। नीमचसे झालरापाटन जाते हुए सड़कपर। ग्रामके मध्यमें एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है कृष्ण पाषाणकी मूर्ति है और भी नवीन जैन मूर्तियें हैं।

(२४) राजोर—नर्मदा नदीपर—नीमावरसे ५ मील। यहां पुरातत्त्वके स्मारक हैं। एक प्राचीन जैन मंदिर है, एक खण्डित जैन मूर्ति अवशेष है।

———०———

(३) भोपाल एजन्सी—भोपाल राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—दक्षिण पूर्व मध्य प्रांत, उत्तरमें राजपूताना और ग्वालियर, पश्चिममें कालीसिंध। यहां ११६५३ वर्ग मील स्थान है।

भोपाल राज्य—में ६९०२ वर्ग मील है।

पुरातत्व—यहां सांचीमें स्तूप सुन्दर है। यहां भोजपुरमें एक सुन्दर जैन मंदिर है। एक वड़ी मूर्ति महिलपुरमें है, चारों तरफ मंदिर है। इसमें खुदाई सुन्दर है। समसगढ़में—जो भोपालसे १० मील है—खंडित मंदिर हैं वहां तीन वड़ी मूर्तियें अभी भी खड़ी हुई हैं। नरवर ग्राम सांचरके मंदिरोंके मसालेसे वना है। जामगढ़में एक १२वीं शताब्दीका मंदिर है। यहांके मुख्यस्थान नीचे प्रकार हैं—

मुख्य स्थान।

(१) भोजपुर—तहसील ताल—यहां एक वड़ा शिव मंदिर है उसमें ४० फुट ऊंचे चार खंभे हैं। इसके पास एक जैन मंदिर १४ से ११ फुट है जिसमें तीन जैन तीर्थंकरकी मूर्तियां हैं उनमेंसे एक वहुत वड़ी मूर्ति श्री महावीरस्वामीकी २० फुट ऊंची है दूसरी दो श्री पार्श्वनाथजीकी हैं। यह मंदिर १२वीं या १३वीं शताब्दीका होगा। भोजपुरके पश्चिम एक वड़ी झील है जिसको धारके राजा भोजने (१०१०—५३) शायद वनवाया है।

(R. A. S. Vol. VIII. P. 80 and Indian antiquary Vol. XVIII P. 348).

(२) आसापुरी—तह० ताल। एक ध्वंश जैन मंदिरमें श्री शांतिनाथकी मूर्ति १६' फुट ऊंची है।

(३) जामगढ़—तह० बरेली। प्राचीन जैन मंदिर १२ या १३ शताब्दीका है।

(४) महलपुर—तह० गढ़ी—जंगलमें, ग्रामके पास एक बड़ी खड़े आसन जैन मूर्ति है, मंदिर नष्ट होगया है, मूर्ति भी बिगड़ गई है, परन्तु उसपर कारीगरी सुन्दर है। यहां एक ध्वंश किला है जिसकी भीतोंमें जैन स्मारक हैं।

(५) नरवर—ता० रायसिन—यहां एक समय एक सुन्दर जैन मंदिर था जिसका सामान और मकानोंमें लगाया गया है। एक सुन्दर मूर्ति ४ फुट ऊंची है।

(६) शमसगढ़—तह० चिलकिसगंज—भोपालसे १० मील। यहां दो जैनमंदिरोंके स्मारक हैं। एक भोजपुरके मंदिरके समान २६ फुटसे १५ फुट है, भीतें नष्ट होगई हैं। तीन विशाल तीर्थंकरकी मूर्तियें स्थापित हैं। और भी बहुतसे पाषाण खुदे हुए पड़े हैं।

(७) सुल्ला—तह० रायजिन—यहांसे ५॥ मील। ग्राममें बहुतसे सुन्दर व खंडित जैन स्मारक पड़े हैं।

(८) सांची—प्राचीन नगर—बौद्धोंके प्राचीन स्मारक हैं। ३०० फुट ऊंची पहाड़ीके मध्यमें लाल पाषाणका स्तूप है जिसका नीचेका व्यास ११० फुट है, पूरी ऊंचाई ७७॥ फुट है। दो स्तम्भ अशोक समयके दक्षिण उत्तर १५ फुट ऊंचे हैं। यहां सन् ई० से २५० वर्ष पहलेकी ध्यानमई बौद्ध मूर्तिये हैं।

इनके पास गुप्त समयके चौथी शताब्दीके छोटे मंदिरके

ध्वंश हैं, इसके पास बौद्धोंके स्मारक हैं। यहां कई पिटारे व ४०० लेख मिले हैं जो सन् ई०से २०० वर्ष पूर्वसे १० वीं शताब्दी तकके हैं।

(४) पथारी राज्य (भोपाल एं०)।

यह राज्य सागर और खुरईके मध्यमें है, यहां बहुतसे मंदिर व मूर्तियोंके अवंशेष हैं। पथारी नगरके पूर्व एक सुन्दर स्तम्भ है जो ४७ फुट ऊंचा है, सुन्दर श्वेत पाषाण है—इसके पास एक मंदिर है जिसमें अब लिंग स्थापित है। इस खंभेके उत्तर ओर ३८ लाइनका लेख है जो सन् ८६१ का है। इस मंदिरको राष्ट्रकूट वंशी राजा परबलीने बनाया था। इस लेखका सम्बन्ध मुनिगिरिके ताम्रपत्रसे है जिसमें देवपालका जन्म राजा परबलीकी पुत्री रामदेवीसे बताया है।

(I. A. S. Vol. XVII. P. II P. 305 cunnimgham Vol. VII. P. 64 and Vol X P. 69. Indian antiquary Vol. XXI P. 256.)

(५) टोंक राज्यका सिरोजनगर।

यहां सिरोजनगर जो टोंक नगरसे दक्षिणपूर्व २०० मील है। इस नगरका सम्बन्ध जी० आई० पी० रेलवेके केथोरा स्टेशनसे है। यूरुपका यात्री टेवरनियर जिसने १७ वीं शताब्दीमें यहां यात्रा की थी कहता है कि यह नगर व्यापारी व शिल्पकारोंसे भरा हुआ है व तंजेब और छींटके लिये प्रसिद्ध है। यहां इतनी बढ़िया तनजेब बनती थी कि उससे शरीर बिना ढकासा मालूम

होता था। ऐसी तनजेबको व्यापारी लोग बाहर नहीं भेज सक्ते थे किंतु सब तनजेब बादशाह मुगल और उनके दरबारियोंके वास्ते भेजी जाती थी। अब यह सब शिल्प नष्ट होगया है।

---

(६) देवास राज्य (मालवा एजन्सी)

मालवा एजन्सीमें ८८२८ वर्गमील स्थान है। हद्द है—उत्तर और पश्चिम राजपूताना, दक्षिणमें भोपावर और इंदौर, पूर्वमें भोपाल।

इसमें ४४ राज्य शामिल हैं। देवासका वर्णन यह है—

पुरातत्त्व—सारंगपुरमें है व देवाससे दक्षिण २ मील नागदा ग्राममें है। यह पहले राज्यधानी रहा है। यहां बहुतसे जैन मूर्तियोंके और हिंदू मंदिरोंके अवशेष हैं।

(१) **सारंगपुर**—कालीसिंध नदीके पूर्वीय तटपर मकसी ष्टेशनसे ३० मील व इन्दौरसे ७४ मील। यह बहुत प्राचीन स्थान है। यहां उज्जैनके घोड़ा चिन्हके पुराने सिक्के सन् ई० से १००० से ५०० वर्ष पूर्वके पानीमें बहते हुए मिले हैं। बहुतसे जैन और हिन्दू मंदिरोंके खण्ड भीतोंमें लगे हैं। यह सुन्दर तनजेबोंके लिये प्रसिद्ध था। यहां पहले एक किला हिन्दू और जैन खण्डहरोंसे बनाया गया था। ये खँडहर इन्दौरके सुन्दर्सी पर्गनेके तुङ्गजपुरसे लाए गए थे। अब दीवाल व द्वार शेष है उसपर एक लेख जीर्णोद्धारका सन् १५७८ का है।

बहुतसे जैन प्राचीन स्मारक हैं जिनमें एक तीर्थंकरकी मूर्तिपर सं० ११७८ है। एक जैन मंदिरके भीतर संवत १२१९ की मूर्ति है।

सुजातखांका पुत्र बाज बहादुर सन् १५६२के करीब स्वतंत्र होगया। इसकी रूपवान स्त्री रूपमती मालवामें अपनी गानविद्या व कविताके लिये प्रसिद्ध होगई है। बहुतसे उसके बनाए गीत अब भी गाए जाते हैं। बाज़ भी गान विद्यामें चतुर था।

(२) मनासा–पर्गना बगौड़–तोमरगढ़के नीचे बसा है।

(३) नागदा–प० देवास–यहांसे ३ मील। यहां पुराने कोट व पुराने मंदिरोंके शेष हैं। पालनगरमें बहुतसी जैन मूर्तियें देखी जाती हैं। यह पहले बहुत प्रसिद्ध स्थान था।

(७) सीतामउ राज्य।

यह इंदौरसे १३२ मील है। मन्दसोरसे इसका सम्बन्ध है। यहां तींतरोदमें–जो सीतामऊसे ६ मील पूर्व है–एक श्री आदिनाथजीका श्वे० जैन मंदिर है।

[८] पिरावा ष्टेट (टोंक सम्बन्धी)।

उत्तर पश्चिममें इन्दौर, दक्षिणपूर्व ग्वालियर है। यहां सन् १९९१में १९ सैंकड़ा जैनी थे। नगरके मंदिरोंमें जो शिलालेख हैं उनसे प्रगट है कि यह पिरावानगर ११वीं शताब्दीसे प्रसिद्ध है।

(९) नरसिंहगढ़ ष्टेट।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें राजगढ़, इन्दौर; दक्षिणमें ग्वालियर, भोपाल; पूर्वमें भोपाल; पश्चिममें ग्वालियर और देवास। यहां ७४१ वर्गमील स्थान है।

(१) विहार—प्राचीन नाम भद्रावती—पर्गे० नरसिंहगढ़-यहांसे दक्षिण ७ मील।

यह जैनधर्मका एक समय मुख्य केन्द्र था। वर्तमान ग्रामके ऊपर जो पहाड़ी है उसपर बहुतसे जैन स्मारक मिलते हैं, उनहीमें एक विशाल जैन मूर्ति है जो गुफाके पाषाणमें कटी हुई है। यह ८॥ फुट ऊँची है, मस्तक नहीं रहा है। आसनपर वृषभका चिन्ह है इससे यह श्री आदिनाथजीकी है। पर्वतपर गुफाके पास एक शतखम्भा महल है यह १९ खन ऊँचा है। इसको संवत १३०४में करणसेनने बनवाया था।

(४) छपेरा—प० छपेरा—नरसिंह०से पश्चिम ४६ मील। यहां श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है जिसमें चार मूर्तियें हैं। उनमेंसे तीनमें संवत १९४८ व एकमें संवत १७९७ है।

(३) पाचोर—प० पाचोर। नरसिंह०से पश्चिम २४ मील आगरा बम्बई सड़कपर। इसका प्राचीन नाम पारानगर है। यह बहुत प्राचीन जगह है, क्योंकि जब यहां खुदाई की जाती है तब खंडित जैन मूर्तियोंके शेष मिलते हैं।

---

(१०) जावरा राज्य।

यहां मन्दसोरसे थारोद जाते हुए बाईखेड़ा ग्राम है, इसमें एक मध्यकालीन श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है। इसमें १२ स्तम्भ हैं। मध्यमें पद्मासन जैन मूर्ति है। लेख १२वीं शताब्दीका है। द्वारपर श्रीमाल जातिके ग्रामदेव वणिकका नाम है।

(११) राजगढ राज्य।

विहार ग्रामसे ३ मील कोटरा ग्राम है जहां एक गुफामें मस्तक रहित जैन मूर्ति है।

---

(१२) सैलाना राज्य।

सैलाना—नामली ष्टेशन (राजपूताना मालवा रे०) से १० मील उत्तर है। नगरमें ३ जैन मंदिर हैं।

---

(१३) भोपावर एजन्सी—धार राज्य।

भोपावर एजन्सीमें ७६८४ वर्ग मील स्थान है। चौहद्दी है—उत्तरमें रतलाम, इन्दौर; दक्षिणमें खानदेश; पूर्वमें नीमाड़, भूपाल; पश्चिममें रेवाकांटा। यहां २६ राज्य शामिल है।

धार राज्य—यहां ७७९ वर्ग मील स्थान है। यह परमारोंकी प्रसिद्ध राज्यधानी है। परमारोंने यहां नौमीसे तेरहवीं शताब्दी तक राज्य किया था।

(१) धारानगर—यह प्राचीन नगर है। पहले राज्यधानी उज्जैन थी। पांचवे राजा वैरीसिंह द्वि०ने नौमी शताब्दीके अंतमें धारमें राज्यधानी स्थापित की। महाराज मुंज वाक्पतिके राज्य (९७४–९९९) में सिंधुराजके राज्य (९९९–१०१०) में और राजा भोजके राज्य (१०१०–१०९३) में धार विद्याका केन्द्र था। ये राजा स्वयं साहित्य व काव्यके रचनेवाले थे और साहित्यके

महान रक्षक थे। धारपर सन् १०२०में अनहिलवाड़ाके चालुक्य राजा जयसिंहने तथा सोमेश्वर चालुक्य राजाने १०४०में चढ़ाई की तव राजा भोजको भागना पड़ा।

धारमें वहुतसे प्रसिद्ध मकान हैं। सन् १४०५में जैन मंदिरोंको तोड़कर दिलावरखांने लाट मसजिद बनवाई और उसका नाम लाट इस लिये रक्खा कि एक लोहेका खम्भा या लाट अभी तक वाहर पड़ा हुआ है। यह ४३ फुट ऊंचा था पर अव इसके टुकड़े हो गए हैं। इसकी ठीक उत्पत्तिका पता नहीं है, परन्तु यह ख्याल किया जाता है कि यह अर्जुनवर्मन परमार (सन् १२१०–१८) के समयमें शायद किसी युद्धकी विजयकी स्मृतिमें वना होगा।

यहीं अलाउद्दीनके समयमें (१२९६–१३१६) मुसल्मान साधु निजामुद्दीन औलिया हो गया है। राजा भोजका एक विद्यालय था उसको भी १४ वीं या १५ वीं शताव्दीमें और हिन्दुओंके ध्वंश मकानोंको लेकर मसजिद बना लिया गया है। वहुतसे पाषाण उसमें ऐसे लगे हैं जिनमें संस्कृत व्याकरणके सूत्र लिखे हैं। यह मसजिद पुराने मंदिरोंके स्थानपर है। यहीं एक मंदिर सरस्वतीका था। जिसको धारानगरीका भूषण माना गया था। दो स्तंभोंपर एक सर्पवन्धमें संस्कृत काव्य लिखा है—

(A S. R. 1902–3, A. S. R. W. I. 1904-6 B. R. A. S. Vol. XXI P. 339. 54).

नव सहशांक चरित्र पद्मगुप्त कविने रचा है उसमें भोजके पिता सिंधुराजका जीवनचरित्र है, उसमें धारका वर्णन एक श्लोकमें अच्छा दिया है।

" विजित्य लंकामपि वर्तते या।
यस्याश्च नोयात्यलकापि साम्यम् ॥
जेतुः पुरी साप्यपरास्ति यस्या।
धारे ति नाम्ना कुलराजधानी ॥"

भावार्थ—यह नगरी लंकाको भी जीतती है। स्वर्गपुरी भी इसके समान नहीं है न और कोई नगरी है। यह धारा राजधानी है।

यहां जैनियोंके दो मंदिर हैं।

आरकालांजिकल सर्वे पश्चिम भाग सन् १९१८ में यह कथन है कि भोजशालाके स्तम्भोंपर जो सर्पवन्ध काव्य है उसमें कातंत्र सं० व्याकरणके १ अ० से लिये हुए सूत्र हैं। इस कातंत्र व्याकरणके कुछ पूर्वके अध्याय अभी भी मालवा, गुजरात और दूसरे भारतीय प्रांतोंमें सिखाए जाते हैं। यहां मालवाके परमार नरवर्मन व उदयदित्यका नाम है—(सन् १०५०) उदयदित्यकी आज्ञासे खुदाई हुई है। यह कातंत्र व्याकरण जैनाचार्यकृत है।

(२) मान्दोर (मान्दोगढ़)—धारसे २२ मील। यह धारराज्यमें ऐतिहासिक जगह है। इस पहाड़ीकी चोटी २०७९ फुट ऊंची है। गढ़ी दरवाजेके पीछे सड़क एक सुन्दर मकानोंके समुदायकी तरफ जाती है जिनको मालवाके खिलजी बादशाहोंने बनवाए थे। ये सब एक भीतके घेरेमें हैं, इसमें मुख्य महल हिंडोल महल है। इस घेरेके उत्तर सबसे पुरानी मसजिद मलिक मुगलकी है जो जैन मंदिरोंके खंडहरोंसे दिलावरखांने सन् १४०५ में बनवाई थी, बहुत ही सुन्दर है।

(I. R. A. S. Vol. XXI P. 353-91.)

(३) कडोद—पर्ग० धार—यहांसे १४ मील उत्तर पश्चिम जैन मंदिर हैं।

(४) सादलपुर—पर्ग० धार—यहांसे १२ मील प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(५) तारापुर—पर्ग धरमपुर—यहां ग्राममें एक जैन मंदिर है जिसको किसी गोपालने सन् १४७४में वनवाया था।

---

[१४] वडवानी राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें धार, उत्तर पश्चिममें अलीराजपुर, पूर्वमें इन्दौर, दक्षिण पश्चिम खानदेश। यहां ११७८ वर्ग मील स्थान है। यहां सेसोदिया राजाओंका राज्य है जिनका सम्बन्ध उदयपुरके राणाओंसे है।

वडवानी नगर—ष्टेशन मऊ छावनीसे ८० मील। नगरसे पांच मील वावनगजा पहाड़ी है। यह जैनियोंका बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। पर्वतकी चोटी पर एक छोटा मंदिर पुराने मंदिरोंके खंडोंसे वनाया गया है। और भी मंदिर हैं। श्री ऋषभदेवकी मूर्ति पहाड़पर कोरी हुई है इसको वावनगजा कहते हैं, यह ८४ फुट ऊंची है। पर्वत पर नीचे और भी मंदिर हैं। पौष सुदी पूर्णिमाको मेला भरता है। वहुत दि० जैन यात्री आते हैं। यह पर्वत २१११ फुट ऊंचा है। वड़वानीका प्राचीन नाम सिद्धनगर है। यहां एक पुराना मंदिर है जो सिद्धनाथका मंदिर प्रसिद्ध है। यह मूलमें जैन था। अब महादेव पधरा दिये गये हैं।

यह वडवानी तीर्थ दिगम्बर जैनियोंका पूज्यनीय तीर्थ है। उनके शास्त्रोंमें यह प्रमाण है कि रावणके भाई कुंभकरण और रावणके पुत्र इन्द्रजीतने यहां मुक्ति पाई। इनके चरणचिह्न पर्वतकी चोटीके मंदिरमें अंकित हैं।

प्रमाण—

वडवाणी वरणयरे दक्खिण भायम्मि चूलगिरि सिहरे।
इन्दजीद कुम्भयणो णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥ १२ ॥
(प्राकृत निर्वाणकांड)

भाषा—

वडवाणी वडनयर सुचंग, दक्षिण दिश गिरिचूल उत्तंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भजुकर्ण, ते वन्दौं भवसायर तर्ण ॥१३॥
(भाषा निर्वाण कांड)

पश्चिम विभागकी रिपोर्ट सन् १९१६ में बावनगजाजीकी मूर्तिके सम्बन्धमें इंजीनियर मि० पेजने लिखा है कि बावनगजाकी मूर्ति कहीं कहीं खण्ड होगई है इसलिये इसकी रक्षार्थ यह उचित है कि जो भाग मूर्तिके ठीक हैं उनपर नीचे लिखा मसाला लगा देना चाहिये जिससे पाषाण बना रहे—" Szerebuey's fluid stone preservative " जहां २ मध्यमें खण्ड होकर चट्टान निकल आई है वहां Portland Cement चारकोलके साथ लगाना चाहिये। जिस तरह होसके मूर्तिकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि यह मूर्ति बहुत प्राचीन है।

---

[१५] झाबुआ राज्य।

थॉरी—झाबुआसे १६ मील। यहां ग्राममें एक जैन मंदिर है।

[१३] ओरछाराज्य [बुंदेलखंडएजंसी]

बुन्देलखंड एजंसीमें ९८५२ वर्ग मील स्थान है। इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें जालान, हमीरपुर, बांदा; दक्षिणमें सागर, दमोह; पूर्वमें बघेलखंड; पश्चिममें झांसी, ग्वालियर। इसमें २४ राज्य हैं, सन् १९०१में यहां जैनी १२२०७ थे।

ओरछाराज्य—इसमें २०८९ वर्गमील स्थान है। उत्तर पश्चिममें झांसी है, पूर्वमें चरखरी है, दक्षिणमें सागर, बीजावर और पन्ना है।

बनारसके गोहवारोंकी संतान बुन्देला राजपूत हैं। पहला बुन्देला राजा सोहनपाल हुआ जो १३वीं शताब्दीमें था। यह अर्जुनपालका पुत्र था। सन् १२६९से १५०१तक आठ राजाओंने राज्य किया। १५०१में राजा रुद्रप्रताप हुए। १५३१में उसके पुत्र भारतीचंद्र हुए। फिर इसका भाई मधुकरशाह हुआ, इसका पुत्र रामशाह था (१५९२–१६०४) इसीके भाई वीरसिंहदेवने ग्वालियरमें अनत्रीके पास अबुलफजलको मारडाला था (आईने अकबरी) और १६०५ से १६२७ तक राज्य किया था। यह बहुत ही प्रसिद्ध था। फिर झुझारसिंहने फिर उसके पुत्र पहाड़सिंहने १६४१से १६५३ तक, फिर सुजानसिंहने (१६५३–७२) फिर इन्द्रमणिने (१६७२–५) फिर जसवंतसिंहने (१६७५–८४) फिर भागवतसिंहने (१६८४–८९) फिर उद्योतसिंहने (१६८९–१७३५) फिर पृथ्वीसिंहने (१७३५–५२) फिर सावंतसिंहने (१७५२–६५) इसकी उपाधि महेन्द्र थी फिर हातीसिंहने

(१७६९–६८) फिर मानसिंहने (१७६८–७९) फिर भारतीचंदने (१७७९–७६) फिर विक्रमजीतने (१७७६–१८१७) फिर धरमपालने (१८१७–३४) फिर तेजसिंहने (१८३४–४१) फिर सुजानसिंहने (१८४१–१८५४) फिर हमीरसिंहने (१८५४ –१८७४) पीछे उसके भाई प्रतापसिंह राज्य कर रहे हैं। सन् १९०१में यहां जैनी ९८८४ थे।

(१) ओरछानगर–झांसीके पास–वीरसिंहदेवका बड़ा मकान व किला है, तथा जहांगीर महाल है। बहुतसे मंदिर फैले पड़े हैं जिनमें सबसे बढ़िया चतुर्भुज मंदिर है।

(२) अहार ता० बलदेवगढ़–यह किसी समय जैनियोंका प्रसिद्ध स्थान था। बहुतसी खंडित जैन मूर्तियें इसके चारों तरफ छितरी हुई हैं।

(३) जटारिया–ता० जटालिया–वर्तमानमें जो यहां जैन मंदिर है उसमें बहुतसी मूर्तियें १२ वीं शताब्दीकी है। ये सब दिगम्बर जैन हैं। उनमें मुख्य श्री आदिनाथ, पारशनाथ, शांतिनाथ, चन्द्रप्रभु भगवानकी हैं।

(४) पपौनी–ता० टीकमगढ़–यहांसे उत्तरपुर्व ८ मील। इसका प्राचीन नाम पम्पापुर है यह प्राचीन स्थान है। जैनी तीर्थ मानते हैं। बहुतसे मंदिर हैं।

---

(१७) दतिः

इसकी चौहद्दी, है–उत्तरमें ग्वालियर, जालान; दक्षिणमें ग्वालियर झांसी; पूर्वमें संथार, झांसी, पश्चिममें ग्वालियर।

सन् १६२६ में वीरसिंहरावने दतिया अपने भाई भगवानरावको दी थी ।

(१) सोनागिरि या श्रमणगिरि—दतियासे ९ मील । यह पहाड़ी जैनियोंका तीर्थ है । पर्वतपर व नीचे करीब १००के दि० जैन मंदिर हैं । बहुतसे प्राचीन हैं । पर्वतपर श्री चन्द्रप्रभुकी मूर्ति बहुत प्राचीन है । दि० जैन शास्त्रोंके प्रमाणसे यहां श्री नंग अनंग कुमार और साढ़े पांच करोड़ मुनि इस कल्पमें इस पर्वतपर तप करके मोक्ष पधारे हैं ।

प्रमाण—

णंगाणंग कुमारा, कोडी पंचद्ध मुणिवरा सहिया ।
सुवणागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ९ ॥
(प्राकृत निर्वाण कांड)

भाषा निर्वाण कांड भगवतीदास कृत

नंग अनंग कुमार सुजान, पंच कोडि अरु अर्ध प्रमाण ।
मुक्ति गए सिहुनागिरिसीस, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईस ॥१०॥

---

[१८] पन्ना राज्य ।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें बांदा, अजयगढ़, भैसौंदा; पूर्वमें कोठी, नागोद, सुहावल, अजयगढ़; दक्षिणमें जबलपुर, दमोह, पश्चिममें छत्रपुर, चरखारी ।

पन्नाके राजा ओरछा वंशके बुन्देले राजा हैं । १६७१ में छत्रसाल बुन्देलखंडका राजा था । राज्यधानी कालिंजर थी । सन् १६७९ में पन्नामें बदली गई ।

यहां हीरेकी खानें प्राचीनकालसे १७ वीं शताब्दी तक प्रसिद्ध रहीं।

(१) नयनागिरि या रेशिंदेगिरि-ता० मलहरा-वरवाहोसे १२ मील। यहां पहाड़ीपर ४० दि० जैन मंदिर हैं। कुछ सं० १७०२ में बने हैं। वार्षिक मेला होता है, जहां वहुत दि० जैनी एकत्रित होते हैं। सन् १८८६ में १ लाख जैनी एकत्रित हुए थे। यह तीर्थ है। दि० जैन शास्त्रोंमें प्रमाण है कि यहां श्री पार्श्वनाथजीका समवशरण आया था व वरदत्त आदि पांच मुनियोंने मुक्ति पाई है।

प्रमाण—

पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्त मुणिवरा पंच।
रिस्सिंदेगिरिसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं॥१९॥

भाषा प्रमाण—

समवशरण श्री पार्श्वजिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम जहाज॥

(२) सिंगोरा—ता० पवई—यहांसे १४ मील। यहां पांच विशाल जैन मूर्तियें हैं जिनको ग्रामीण पंच पांडव कहते हैं।

---

(१९) अजयगढ़ राज्य।

यह मेहरके पास है-यहां ७७१ वर्गमील स्थान है। यहांके राजा छत्रसालके वंशज बुन्देला राजपूत हैं। अजयगढ़के किलेके सिवाय पुरातत्व सम्बन्धी दो और स्थान हैं (१)—ग्राम वच्छोन—अजयगढ़से उत्तर पूर्व १९ मील। यहां एक वड़े नगर व दो

सरोवरोंके शेषांश हैं। यह कहावत है कि इसको परमालदेव या परमार्दीदेव चंदेल राजा (११६५–१२०३) के मंत्री वच्छराजने वसाया था। यहां भितारिया ताल प्रसिद्ध है। सन् १३७६ का शिलालेख मिला है जिसमें नगरको वच्छुम लिखा है। (२) नाचना यह गंजसे २ मील। प्राचीन नाम कुथारा है। यह १३वीं शताब्दीमें सोहालपालके राज्यमें प्रसिद्ध था। यहां गुप्त समयके दो ध्वंश पुराने हिन्दू मंदिर हैं।

(१) अजयगढ–नगर व गढ़–जिस पर्वतपर यह किला है उसको केदार पर्वत कहते हैं। यह १७४४ फुट ऊँचा है। शिलालेखमें नाम जयपुर दुर्ग है। यह किला नौमी शताब्दीके अनुमान बना था। बहुतसे प्राचीन जैन मंदिरोंकी सुन्दर शिल्प कारीगरी मुसल्मानोंके बनाए मकानोंकी भीतोंपर दिखलाई पड़ती है। पर्वतपर बहुतसे सरोवर हैं। तीन जैन मंदिरोंके ध्वंश अभी तक खड़े हैं। इनकी रचना १२ वीं शताब्दीकीसी है और खजराहाके मंदिरोंसे मिलते जुलते हैं। पाषाणोंपर बहुत बढ़िया खुदाई है। ये मंदिर किसी समय बहुत ही सुन्दर होंगे। अनगिनती खँडित मूर्तियें, खम्भे, आसन पड़े हुए हैं। यहांके मकानोंमें सन् ११४१ से १३१५ तकके चंदेल राजाओंके कई लेख मिले हैं।

(Cunnimgham A. S. R Vol. VII P. 46 and XXI P. 46).

(२०) छत्तरपुर राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है–उत्तरमें हमीरपुर। पूर्वमें केननदी, पन्नाव; पश्चिममें बीजावर और चरखारी। दक्षिणमें बिजावर और पन्ना व दमोह। इसमें ११**१८** वर्गमील स्थान है। इसको १८वीं शता-

ब्दीके पिछले भागमें कुंवर सोनशाह पोंवार या पमारने वसाया था।

यहां बहुत प्रसिद्ध पुरातत्त्वके स्मारक खजराहामें व राजगढ़के पास केननदीके पश्चिम मनियागढ़में हैं। राजगढ़ पुराना किला है इसको अठकोट कहते हैं। जंगलमें बहुतसे ध्वंश स्थान हैं।

(१) खजराहा—छत्रपुरके पास। यह मंदिरोंके लिये प्रसिद्ध है। शिलालेखोंमें इसका प्राचीन नाम खर्ज्जूरवाहक है। चांद भाटने इसे खजूरपुर या खज्जिनपुर कहा है। नगरके द्वारपर दो सुवर्ण रंगके खजूरके वृक्ष हैं। प्राचीन कालमें यह बहुत प्रसिद्ध जगह थी। यह जिझोती राज्यकी राज्यधानी थी जिसको अब बुन्देल-खण्ड कहते हैं। हुईनसांग चीन यात्रीने भी इसका वर्णन किया है। यहांके मंदिर सन् ९५० से १०५० तकके हैं। यहांके लेख बहुत उपयोगी हैं। इन मंदिरोंके तीन भाग हैं—(१) पश्चिमीय—यहां शिव और विष्णुके मंदिर हैं। (२) उत्तरीय—एक बड़ा और कुछ छोटे मंदिर हैं। सब विष्णुके हैं व कई खंड या ढेर हैं। (३) दक्षिण पूर्वीय भाग बिलकुल जैन मन्दिरोंसे पूर्ण है। इनमें चौसठ योगिनी घनटाईका मंदिर सबसे पुराना है। इसमें बड़े सुन्दर खम्भे हैं। इसके शेषांश छठी या ७ वीं शताब्दीके हैं जो ग्यारसपुरके मंदिरोंके समान हैं। एक चंदेललेख सन् ९५४ का है।

(Cunnimgham Vol. II P. 412 & Vol. VII P. 5, Vol. X P. 16, Vol. XX P. 55 and Epigraphica Indica Vol. I P. 121.)

कनिंघम जिल्द दोमें है कि यह खजराहा महोवासे दक्षिण ३४ मील है। घंटाई जैन मंदिर नं० २१ में बहुतसी खंडित जैन मूर्तियें हैं। एकपर लेख है संवत ११४२ श्री आदिनाथ, प्रतिष्ठाकारक श्रेष्ठी वीवनशाह भार्या सेटानी पद्मावती। नं० २२

का जैन मंदिर प्राचीन छोटा श्री पार्श्वनाथजीका है । तीन लाइन मूर्तियोंकी हैं । ऊपर १ मूर्ति पद्मासन है । नीचे दो लाइनमें खड़े आसन मूर्तियें हैं । नं० २३-२४ श्री आदिनाथ और पार्श्वनाथ-जीके क्रमसे हैं । मंदिर नं० २५ सबसे बड़ा व सबसे सुन्दर है यह ६० फुटसे ३० फुट है । एक जैन साहूकारने इसका जीर्णो-द्धार कराया था । मध्यवेदीके कमरेके द्वारपर नग्न पद्मासन जैन मूर्ति है। इसके बगलमें दो नग्न खड़े आसन हैं । द्वारके बांई तरफ ११ लाइनका लेख है जिसमें है कि धंग राजाके राज्यमें संवत् १०११ या सन् ९५४ में भव्यपाहिलने जिननाथके इस मंदिरको एक बाग दान किया । इस खजराहाका वर्णन संयुक्त प्रांतके प्राचीन जैन स्मारक पृष्ठ ४१ से ४३ तकमें दिया है । घंटाईके मंदिरमें श्री शांतिनाथकी मूर्ति १४ फुट ऊंची है । इसपर "सं० १०८५ श्रीमान् आचार्य पुत्र श्री ठाकुर श्री देवधरसुत सुतश्री, शिविश्री, चंद्रेयदेवाः श्रीशांतिनाथस्य प्रतिमा कारितेति" है । नकल एक लेखकी—

खजराहाका लेख ।

(Ep. Indica Vol. I Ins. No. III of a Jain Temple on left door Jumb of temple of Jain Nath at खजराहा of 1011 Samvat.)

(१)—ओं ॥ संवत १०११ समये ॥ निजकुलधवलोयं (२) दिव्यमूर्ति स्वशील, शमदमगुणयुक्त सर्व्व—(३) सत्त्वानुकंपी । स्वजनजनित तोषो धांगराजेन (४) मान्य, प्रणमति जिननाथो यं भव्य पाहिल (५) नामा ॥ १ ॥ पाहिलवाटिका १ चंद्रवाटिका २, (६) लघुचंद्रवाटिका ३, शंकरवाटिका ४, पंचाई (७) तलवाटिका ५, आम्रवाटिका ६, धंगवाड़ी, (८) पाहिलवंशे तु क्षये क्षीणे अपरवंशो

यः कोपि (९) तिष्ठति तस्य दासस्य दासोऽयं मम दतिस्तु पाल (१०) येत् ॥ महाराज गुरु श्रीवासवचंद्रः वैशाख (११) सुदी ७ सोम दिने ॥

उल्था।

संवत १०११ में—पवित्रकुली सुंदरमूर्ति, शील, शम, दम युक्त, दयावान, स्वजन परिजनका उपकारी, भव्य पाहिल जो धांगराजासे मान्य है सो श्री जिननाथको नमस्कार करता है। मैंने पाहिलबाग, चंद्रबाग, लघुचंद्रबाग, शंकरबाग, पंचाइलबाग, आमबाग तथा धांगवाडी दान की है, पाहिलवंशके नाश होनेपर जो कोई वंश रहे उसके दासोंका मैं दास हूं सो मेरे इस दानकी रक्षा करे। महाराज गुरु श्री वासवचंद्रके समयमें वैशाख सुदी ७ सोमवार।

लेख नं० ८ (ए० ई० पृष्ठ १५३)

एक जैन मूर्तिपर—"ओं संवत १२१५ माघ सुदी ५ श्रीमन् मदनवर्म्मदेव प्रवर्द्धमान विजयराज्ये गृहपतिवंशे श्रेष्ठिदेदू तत्पुत्र पाहिल्लः पाहिल्लांगरुह साधुसाल्हे तेनेयं प्रतिमा कारितेति। तत्पुत्राः महागण, महीचंद्र, सिरिचंद्र, जिनचंद्र, उदयचंद्र प्रभृति। संभवनाथं *प्रणमति नित्यं मंगलं महाश्रीः रूपकार रामदेवः।"*

उल्था।

भावार्थ—मदनवर्मदेवके राज्यमें संवत १२१५ में गृहपति कुलधारी देदू उसके पुत्र पाहिल, पाहिलके पुत्र साल्हेने प्रतिमा कराई उसके पुत्र महागण आदि नमस्कार करते हैं।

नोट—गृहपतिकुल शायद परिवार वंश हो।

(२) छत्रपुर नगर—बांदासे ६४मील। यहां बुन्देलखाल और अमरसिंह चौधरीके बनाए जैन मन्दिर हैं।

(२१) बीजावर राज्य ।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें छत्रपुर । दक्षिणमें पन्ना व सागर । पूर्वमें छत्रपुर, पश्चिममें ओर्छा ।

यहां ९७३ वर्गमील स्थान है ।

(१) सिद्धपा या द्रोणगिरि—ता० गुलगंज—यह जैन तीर्थ-स्थान है । द्रोणागिरि पर्वतपर बहुत सुन्दर दि० जैन मंदिर हैं । वार्षिक मेला होता है तब बहुत दि० जैनी एकत्र होते हैं । दि० जैन शास्त्रानुसार यहांसे श्री गुरुदत्त आदि मुनींद्र मोक्ष पधारे हैं ।

प्रमाण—

फलहोडीवरगामे, पच्छिम भायम्मि दोणगिरि सिहरे ।
गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १४ ॥
(प्राकृत निर्वाणकांड)

भाषा भगवतीदास कृत—

फलहोडी बडगाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप ।
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहां, मुक्ति गए वंदौं नित तहां ॥

---

(२२) रीवां राज्य (बघेलखंड एजंसी) ।

बघेलखंड एजंसीकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें मिरजापुर, अलाहाबाद, बांदा । दक्षिणमें विलासपुर, मांडला, जब्बलपुर । पश्चिममें जब्बलपुर । पूर्वमें—छोटा नागपुर । यहां १४३२३ वर्गमील स्थान है ।

रीवां राज्य—यहांके राजा बघेल राजपूत सोलंकी वंशसे उत्पन्न हैं जो गुजरातमें १० वीं से १३ वीं शताब्दी तक राज्य

करते थे। गुजरातके राजाका भाई व्याघ्रदेव १३ वीं शताब्दीके मध्यमें यहां आया और कालिंजरसे दक्षिण पूर्व १८ मील मरफेका किला प्राप्त किया। इसका पुत्र करणदेव था जिसने मांडलाकी कलचूरी (हैहय) राजकुमारीको व्याहा और दहेजमें सन् १२९८ में वांधोगढ़का किला प्राप्त किया। करणदेव वादशाह अलाउद्दीनके नीचे राज्य करता था। सन् १४९४ में पन्नाका राजा भीर मारा गया तब उसका पुत्र सालिवाहन राजा हुआ। फिर उसका पुत्र वीरसिंह देव हुआ जिसने पन्ना राज्यमें वीरसिंहपुर बसाया। फिर उसका पुत्र वीरभानु फिर रामचन्द्र राजा हुआ, यह वादशाह अकवरका समकालीन था। रामचन्द्रके दरवारमें तानसेन प्रसिद्ध गवैय्या था। फिर क्रमसे वीरभद्र, विक्रमादित्य, अनूपसिंह (१६४०-६०) अणुरुद्धसिंह (१६९०-१७०९), उद्भूतसिंह (१७००-९५) हुए सन् १८१२ में राजा जयसिंह रीवांमें राज्य करते थे। इसने कई पुस्तकोंका सम्पादन किया है। यह विद्वान् था। १८५४में राजा रघुराज हुए। सन् १८८०में महाराज वेंकट रामन गद्दीपर बैठे।

पुरातत्त्व—मुख्य स्मारक माघोगढ़, रामपुर, कुंडलपुर, अमरपाटन, मझौली व कक्कोनसिंह पर हैं। केवती कुंडपर महानदी ३३१ फुटकी ऊंचाईसे गिरती है। इसको वहुत पवित्र माना जाता है। इसीके पास सन् ई० से २०० वर्षका प्राचीन एक शिलालेख है जैसा उसके अक्षरोंसे प्रगट है।

रीवांसे १२ मील पूर्व गूर्गीमसौनमें वहुतसे प्राचीन स्मारक हैं जिनसे प्रगट होता है कि यह बहुत प्रसिद्ध स्थान था। यह

खयाल किया जाता है कि प्राचीन कौसाम्बी नगरका यही स्थान है। यहां एक सुन्दर किला है जिसको रेहुत कहते हैं। इसको करणदेव चेदो (१०४०–७०) ने बनवाया था। इसका २॥ मीलका घेरा है। भीतें ११ फुट मोटी हैं व मूलमें २० फुट ऊंचीं थीं। इसके चारों तरफ खाई थी जो ५० फुट चौड़ी व ५ फुट गहरी थी। यहां मंदिर अधिकतर ब्राह्मणोंके हैं, यद्यपि कुछ दिगम्बर जैन मूर्तियां चंद्रेहीके पास मिलती हैं। सोननदीके पूर्व एक बड़ा स्थान है व सुन्दर मंदिर हैं। मोरापर तीन समुदाय गुफाओंके हैं जिनको वुरादन, छेवर व रावण कहते हैं। ये चौथीसे नौमी शताब्दीकी हैं। कुछोंमें मूर्तियें हैं।

यहांके मुख्य स्थानोंका वर्णन—

(१) अमरकंटक—सहडोलसे २५ मील एक ग्राम। यह मैकाल पहाड़ीका (जो ३००० फुट ऊँची है) पूर्वीय कोना है। यहांसे नर्वदानदी निकली है ऐसा प्रसिद्ध है। यहां कपिलधाराका जलपतन है। पांडव भीमके चरणचिह्न हैं। यहां खजराहाके समान बहुत ही बढ़िया मंदिर हैं जिनको करणदेव चेदी (१०४०–७०) ने बनवाया था। १४ दूसरे मंदिर हैं।

(Cunn: A. S. R. Vol. VII. P. 22).

(२) बांधोगढ़—कटनीके पास तालुका रामनगर—यहां पुराना किला है। यह प्राचीन ऐतिहासिक जगह है। जिस पहाड़ी पर यह किला है वह २६६४ फुट ऊंची है। उसीमें वमनिया पहाड़ी शामिल है। १३ वीं शताब्दीमें करणदेव कलचूरी राजकुमारीके साथ वघेलाको मिला (Cunni. Vol. VII P. 22)

(३) सुहागपुर—सहडोलसे २ मील एक ग्राम। यहां एक बड़ा महल है जो पुरानी इमारतोंसे बना है। बहुतसे खम्भे मंदिरोंसे लिये गए हैं। उनमें बहुतसे जैन मुर्ति व पाषाणोंके स्मारक हैं। यह प्राचीन जैनियोंका स्थान था। बहुतसी जैन तीर्थंकरोंकी मूर्तियां चारों तरफ दिखलाई देती हैं। इस ग्रामसे दक्षिण पुर्व १ मील पुरानी वस्तीके खंडहर हैं।

यह बिलासपुरके पास घाटीके कौनेमें है। चेदी राजाओंके बिल्हारीके शिलालेखमें इसका नाम सौभाग्यपुर है। स्थानीय ठाकुरके घरमें बहुतसे प्राचीन पाषाण हैं उनमें नीचे प्रकार भी पाषाण हैं।

(१) जैन देवी सिंहासनपर बैठी, भुजाओंमें एक जैन बालक है, एक आम्रवृक्षके नीचे बैठी है। वृक्षके ऊपर एक पद्मासन जैन मूर्ति है। उसके ऊपर सिंहासन पर दूसरी पद्मासन जैन मूर्ति है इसके हरतरफ बगलमें एक खड़े आसन जिन हैं व खड़े इन्द्र हैं। (२) एक बैठे आसन शासनदेवी है जिसकी १२ भुजाएं हैं। ऊपर पद्मासन मूर्ति श्री पार्श्वनाथकी है। (३) एक सुन्दर मूर्ति ऋषभदेवकी है। बैलका चिह्न है।

(४) रीवांनगर—गुर्गीमसौन नामके पुराने नगरसे एक बहुत सुन्दर खुदाईका द्वार यहां लाया गया है। यह नगर यहांसे पूर्व १२ मील है।

(५) अल्हाघाट—ता० हूजूर—यह प्रसिद्ध स्थान है। इसमें नरसिंहदेव कलचूरी राजाका लेख वि० सं० १२१६ का है।

(६) भूमकहर—ता० रघुराजपुर—सतनासे उत्तर पश्चिम ७ मील। यहां एक पुराना किला है जिसको बघेलोंने बनवाया था।

अब ध्वंश है। पानीके झरनेके पास बहुतसे जैन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियोंसे अंकित पाषाण हैं। इनको लोग पांच पांडव कहते हैं।

(७) गूर्गीमसौन—ता० हुजूर (गढ़) रीवांसे १२ मील। यहां कुछ दि० जैन मूर्तियां चारों ओर मिलती हैं। प्राचीन कौसाम्बीका स्थान है (ऊपर देखो)

(८) मुकुन्दपुर—ता० हुजूर—रीवांसे दक्षिण १० मील पुराने किलेके ध्वंश हैं। खजराहाके समान यहां बहुतसी जैन मूर्तियां चारों तरफ मिलती हैं।

(९) मार या मूरी—ता० वरडी। यहां ४ थी से नौमी शताब्दीकी कुछ गुफाएं हैं।

(१०) पाली—ता० सुहागपुर—हिन्दुओंके मंदिरोंमें प्राचीन जैन मूर्तियोंके बहुतसे स्मारक देखे जाते हैं।

(११) पियावान—ता० रघुराजनगर—सेमरियासे ७ मील। यहां दाहालुके कलचूरी राजा गांगेयदेवका लेख चेदी सं० ७८९ या सन् १०३८ का मिलता है।

---

(२३) नागोद राज्य या उंछहरा राज्य।

यह राज्य सतनासे पूर्व है। यहां ५०१ वर्गमील स्थान है। यहां परिहार राजपूतोंके वंशज राज्य करते हैं। सन् १३४४में यहां राजा धारासिंह थे व सन् १४७८में यहां राजा भोज थे। यहां प्राचीन स्मारक बहुत हैं परन्तु उनकी अभीतक खोज नहीं की गई है। यहांपर होकर मालवा और दक्षिण भारतसे कौसाम्बी और श्रावस्तीको मार्ग गया था। भरहुतके पास एक सुन्दर बौद्ध स्तूप पहले मौजूद था

जिसके अंश कलकत्ता म्यूजियममें गए हैं। यहां सांची स्तूपके समान था। इसके एकद्वारपर सन् ई०से पहली या दूसरी शताब्दी पहलेका लेख संग वंशका था। दूसरे मुख्य स्थान लालपहाड़ पर हैं जो इस स्तूपके पास एक पहाड़ी है। यहां बड़ी गुफा है व सन् ११५८ का कलचूरी वंशका शिला लेख है। संकरगढ़ और खोली पर भी कई उपयोगी लेख सन् ४७५ से ५५४ तकके पाए गए हैं। भूमारा, मझगावां, करीतलाई व पटैनी देवी पर भी स्मारक हैं। पटैनीदेवी पर चौथी या पांचमी शताब्दीका गुप्त वंशीय समयका एक छोटा सुरक्षित मंदिर है इसमें १०वीं या ११ वीं शताब्दीके कुछ जैन स्मारक हैं। (देखो वर्णन जिला जबलपुर)

पश्चिम भाग अर्कीलाजिकल सरवे रिपोर्ट सन् १९२०में विशेष कथन यह है कि पटैनीदेवीके मंदिरके ऊपर तीन आले हैं। हरएकमें जैन मूर्तियां हैं। भीतर मंदिरमें देवीकी मूर्ति और पीछे पाषाणमें १२ वीं शताब्दीकी जैन मूर्तियां अंकित हैं। मुख्य मूर्तिके हर तरफ नौ हैं। पहली लाइनमें मध्यमें श्री नेमिनाथ हैं। इसके हरतरफ २ खड़े आसन जिन हैं अन्तमें एक जिन बैठे हुए आलेमें हैं। बाएंसे दाहनेको जो लाइन है उसमें ये नाम देवियोंके हैं (१) बहुरूपिणी (२) चामुंड (३) सरस्वती (४) पद्मावती (५) विजया (६) अपराजिता (७) महामनुसी (८) अनंतमती (९) गांधारी (१०) मानुसी (११) ज्वालामालिनी (१२) भानुसी (१३) वज्र-संकला (१४) भानुजा (१५) जया (१६) अनन्तमती (१७) वैरोता (१८) गौरी (१९) महाकाली (२०) काली (२१) बुध-दाधी (२२) प्रजापति (२३) वाहिनी।

(२४) जसो या जस्सो राज्य।

यह नागोदके पास है। यहां ७८९ वर्गमील स्थान है। यह जसोस्वरी नगरका अपभ्रंश है। यहांके महलको महेन्द्रनगर कहते हैं। यहां अम्बरपुरी और इटौनगरमें बहुतसे जैन और हिन्दुओंके स्मारक फैले पड़े हैं। (C. A. S Vol. XXI P. 99) इस महलके पुराने द्वारपर बहुतसी जैन मूर्तियां लगी हैं।
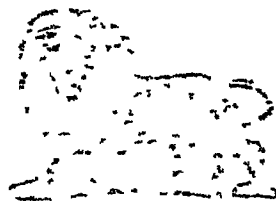
तीसरा भाग।

प्राचीन जैन स्मारक–राजपूताना–

राजपूतानाकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

पश्चिममें सिंध। उत्तर पश्चिममें पंजाब, वहावलपुर। उत्तर और उत्तर पूर्वमें पंजाब। पूर्वमें संयुक्त प्रदेश, ग्वालियर। दक्षिणमें मध्य भारत और बम्बई।

इसमें १३०४६२ वर्गमील स्थान हैं इसीमें अजमेर, मड़वाड़ा भी शामिल हैं जो २७११ वर्गमील है।

इसकी व्यवस्था यह है कि:–राज्य जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर पश्चिम और उत्तरमें हैं। शेखावाटी (जैपुरका भाग) और अलवर उत्तर पूर्वमें हैं। जैपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बूंदी, कोटा, झालावाड़ पूर्व और दक्षिण पूर्वमें हैं। परतापगढ़, वांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर दक्षिणमें और सिरोही दक्षिण पूर्वमें हैं। मध्यमें अजमेर, मडवाड़ा प्रांत, किशनगढ़, शाहपुर, लावा और टोंकका एक भाग है।

यहां आबू पहाड़ ५६५० फुट ऊंचा है।

इतिहास–यहां भी बौद्धोंका राज्य था। महाराज अशोकके शिलालेखके दो पाषण वैराटमें हैं जो राज्य जैपुरमें है। सन् ई० से दूसरी शताव्दी पहले वैकटीरियाके ग्रीक या यूनान लोग उत्तर और उत्तर पश्चिमसे आए। उनके विजय प्राप्त देशोंमें यहां प्राचीन शहर नगरी (इनको माध्यमिक भी कहा है) था जो

चित्तौड़के निकट है तथा कालीसंघ नदीके चारों ओरका देश है। ग्रीक बादशाहोंमेंसे अपोलोदस और मिनैन्दर इन दोके सिके उदयपुर राज्यमें पाए गए हैं। दूसरीसे चौथी शताब्दी तक सीदिया या शक लोग दक्षिण और दक्षिण पश्चिममें बलवान रहे। गिरनार पर्वतके पास जो १९० सन् ई० का शिला लेख है उसमें वर्णित है कि रुद्रदमन मारु (माड़वाड़) और साबरमती नदीके चहुंओर देशका शासक था। मगधके गुप्त वंशने चौथीसे छठीं शताब्दी तक राज्य किया जिसको राजा तोरमानके आधिपत्त्यमें श्वेत हूनोंने नष्ट किया। सातवीं शताब्दीके प्रथम अर्द्धमें थानेश्वरके राजपूत हर्षवर्द्धन और कन्नौनके वैश्य हर्षवर्द्धनने देशमें शासन किया और नर्बदा तक विजय प्राप्त की, उसमें राजपूताना भी शामिल था। हुइनसांग चीन यात्री (६२९–४५) के समयमें राजपूतानाके चार विभाग थे।

(१) गुर्जर–जिसमें बीकानेर, पश्चिम राज्य और शेखावाटीका भाग शामिल था। (२) बैराट–जिसमें जैपुर, अलवर और टोंकका भाग था। (३) मथुरा–जिसमें तीन पूर्वीय राज्य भरतपुर, धौलपुर और करौली थे। (४) बदरी–जिसमें दक्षिण और कुछ मध्यभारतके राज्य शामिल थे।

सातवीं और ग्यारहवीं शताब्दीके प्रारम्भके मध्यमें राजपूतानामें बहुतसे वंश उठ खड़े हुए। गहलोट या सेशाद्री वंशज गुजरातसे आए और मेवाड़के दक्षिण पश्चिम भागको ले लिया। उनका सबसे प्राचीन लेख ता० ६४६ का राजपूतानामें मिला है। पीछे [illegible] राज्य किया जिन्होंने अपना शासन जोधपुरके मांडोरमें

प्रारम्भ किया। फिर आठवीं शताब्दीमें चौहान और भाटियोंने राज्य किया जो क्रमसे सांभर और जैसलमेरमें बसे। दशवीं शताब्दीमें परमार और सोलंकी दक्षिण पश्चिममें बलवान हुए। अब राजपूतानामें तीन वंश प्रसिद्ध हैं—सेसोदिया, भाटिया और चौहान। इनमेंसे पहले दो तो अपने मूलस्थानोंमें जमे रहे जब कि चौहान सिरोही बूंदी, कोटामें फैल गए। जादोवंशजोंने ११वीं शताब्दीमें करोलीमें स्थान जमाया। कछवाहा वंशज ग्वालियरसे जैपुरमें सन् ११२८ में आए। राठौर वंशज कन्नौजसे माड़वाड़में १३ वीं शताब्दीमें आए।

पुरातत्व—जैपुरके वैराटमें दो अशोकके शिलालेख हैं तथा सन् ई० से तीसरी शताब्दी पहलेका लेख चित्तौड़के पास नगरी स्थानपर है। झालावाड़में खोलवीपर पहाड़में कटे मंदिर तथा गुफाएं सन् ७००से ९०० तककी हैं। ये बौद्धोंका पुरातत्व है। जैनियोंके बहुत प्रसिद्ध कारीगरीके मंदिर ११ वीं व १३ वीं शताब्दीके आबू पहाड़में दिलवाड़ेपर हैं तथा इसी कालके अनुमानका एक जैन कीर्तिस्तम्भ चित्तौड़में है, तौभी सबसे पुराने जैन मंदिर परतापगढ़में सुहागपुराके पास हैं। बांसवाडामें कांलिंजरामें हैं तथा जैसलमेर और सिरोहीके कई स्थानोंपर हैं, और पुराने जैन स्मारकोंके शेष भाग उदयपुरके पास अहारमें तथा राजगढ़में और अलवर राज्यके पारनगरमें हैं।

हिन्दुओंका पुरातत्त्व बयाना (भरतपुर) में एक पाषाणका स्तंभ सन् ३७२ का है। मुकुन्दद्वारामें पांचवी शताब्दीका ध्वंश स्थान है। ११ वीं शताब्दीके ध्वंश मंदिर झालरापाटनके पास

चन्द्रावतीमें हैं खुदे हुए मंदिर उदयपुरमें वरोली पर व नागदा पर क्रमसे नौमी और ग्याहरवीं शताब्दीके हैं तथा चितौड़में एक जय-स्तम्भ १९ वीं शताब्दीका है।

जैनियोंकी संख्या—सन् १९०१ में ३॥ फीसदी थी अर्थात् कुल जैनी ३४२९९९ थे जिनमें ३२ सैकड़ा दिगम्बरी, ४९ सैकड़ा श्वेताम्बरी मूर्तिपूजक तथा शेष स्थानकवासी थे।

[१] उदयपुरराज्य (उदयपुर रेजिडेन्सी)

उदयपुर रेजिडेंसी या मेवाड़में ४ राज्य हैं। उदयपुर, बांसवाडा, डूंगरपुर और परतापगढ़।

इसकी चौहद्दी—उत्तरमें अजमेर, मरवाडा और शाहपुर, उत्तर पूर्वमें जैपुर और बुंदी। पूर्वमें कोटा, और टोंक; दक्षिणमें मध्यभारत पश्चिममें अरावली पहाड़।

सन् १९०१ में यहां जैनी ६ फी सदी थे।

उदयपुर राज्य—इसकी चौहद्दी—उत्तरमें अजमेर मड-वाडा और शाहपुर, पश्चिममें जोधपुर और सिरोही। दक्षिण-पश्चिममें ईडर राज्य; दक्षिणमें डुंगरपुर, बांसवाडा, परतापगढ़। पूर्वमें नीमच। उत्तरपूर्वमें जैपुर। यहां १२६९१ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—मेवाडके महाराणा अपने दर्जेमें बहुत ऊंचे हैं। इनकी उत्पत्ति श्रीरामचन्द्रके पुत्र कुशसे है। इस वंशने अपनी कन्या किसी मुसलमानको नहीं विवाही, किन्तु उनसे भी सम्बन्ध बन्द किया जिन्होंने कन्या मुसलमानोंको दी थी। कुशके वंशजोंका अंतिम राजा अवधमें सुमित्र हुआ है। इसकी

कुछ पीढ़ी पीछे कनकसेनसे काठियावाड़में वल्लभीका राज्य स्थापित किया गया। वर्वर आक्रमणकारोंके सामने वल्लभीके राजाओंका पतन हुआ उनका मुखिया शिलादित्य मारा गया। उसकी गर्भवती रानीसे उत्पन्न गुहादित्यने ईडर और मेवाड़में राज्य किया। इससे गोहलट वंश उत्पन्न हुआ। गुहादित्यके पीछे छठा राजा महेन्द्र द्वि० था जिसका नाम बापा प्रसिद्ध था। इसकी राज्यधानी उदयपुरके उत्तर नागदापर थी। इस बापाने चित्तौड़पर चढ़ाई की जहां मोरी जातिके मानसिंह तब राज्य कर रहे थे। बापाने इसको हटा दिया और वहां सन् ७३४ में अपना राज्य स्थापित किया तथा रावलकी उपाधि धारण की।

इनका समाचार १४वीं शताब्दीके प्रारम्भ तक विदित नहीं हुआ। इस १४वीं शताब्दीके प्रारम्भमें रतनसिंह प्रथम महाराणा था तब बादशाह अलाउद्दीनने सन् १३०३में चढ़ाई की। रतनसिंह युद्धमें मारा गया और चित्तौड़का किला ले लिया गया। पीछे राणा हमीरसिंहने चित्तौड़को फिर हस्तगत किया। यह सन् १३६४ में मरा। राणा लक्षसिंह या लाखा (१३८२—९७) के समयमें जावरमें चांदीकी खानें मिलीं। पीछे प्रसिद्ध राणा कुंभ (१४३१—६८) हुआ जिसने गुजरातके मुहम्मद खिलजी कुतुबुद्दीनको हरा दिया और चित्तौड़में अपनी विजयकी स्मृतिमें जयस्तम्भ स्थापित किया। इसने बहुतसे किले बनवाए जिनमें मुख्य कुंभलगढ़ है। राणा रायमलने १४७३ से १५०८ तक राज्य किया फिर राजा संग्रामसिंह या राना सांगा हुए। इनके समयमें मेवाड़ बहुत ऐश्वर्य्ययुक्त था। राणा सांगाने बाबर बादशाहसे सन् १५२७में

युद्ध किया और उसे जखमी किया। इसका पुत्र रतनसिंह द्वि०या विक्रमादित्य हुआ इसको इसके भाई वणवीरने १५३५में मार डाला। इसके पीछे उदयसिंहने १५३७से ७२ तक राज्य किया। इसीने १५५९में उदयपुर वसाया। १५६७में अकबरने चित्तौड़पर चढ़ाई की और उसे लेलिया। पीछे उसका वड़ा पुत्र प्रतापसिंहराणा राजा हुआ इसने १५७२से ९७ तक राज्य किया। बीचमें अकबरने इसे १५७६में हरा दिया तब यह सिंधकी तरफ भाग गया। उस समय उसके मंत्री प्रसिद्ध भीमासाह जैनने अपनी एकत्रित सर्व सम्पत्ति राणाकी मददको देदी। इसके बलसे प्रतापसिंहने अपना खोया हुआ राज्य फिर प्राप्त कर लिया। उसके पीछे उसके पुत्र अमर-सिंह प्रथमने राज्य किया तब बादशाह जहांगीरने उसे कष्ट दिया, सन् १६१४में दोनोंमें संधि होगई सो इस शर्तपर कि राणा स्वयं दर्बारमें हाजिर हो परन्तु उसने अपने पुत्रको ही भेजा। पीछे राणा करमसिंह (१६२०–२८) हुआ। फिर उसका पुत्र जगतसिंह राणा (१६२८–५२) हुआ इसके समयमें बहुत शांति रही। फिर राणा राजसिंह प्रथम (१६५२–१६८०)हुआ। उस समय बादशाह औरंगजेबने चढ़ाई की और चित्तौड़के मंदिरोंका नाश किया। इसीके समयमें सन् १६६२में दुर्भिक्ष पड़ा तब प्रजाको कष्टसे बचानेके लिये इसने सरोवरका तट बनवाया जिससे प्रसिद्ध झील कंकरोली पर हो गई जिसको राजसमन्द कहते हैं। उसके पुत्र जयसिंहने १६९८ तक राज्य किया। इसने प्रसिद्ध धेबार झील बनवाई जिसको जयसमन्द कहते हैं। फिर अमरसिंह द्वि०ने १६९८से १७१०तक राज्य किया। फिर नीचे प्रमाण राणा हुए. संग्रामसिंह

द्वि० (१७१०–३४), जगतसिंह (१७३४–५१), प्रतापसिंह द्वि० (१७५१–५४), राजसिंह द्वि० (१७५४–६१), अरिसिंह द्वि० (१७६१–७३), हमीरसिंह द्वि० (१७७३–७८), भीमसिंह द्वि० (१७७८–१८२८), जवानसिंह (१८२८–३८), सरुपसिंह (१८३८–६१), संभूसिंह (१८६१–७४), सज्जनसिंह (१८७४–७६), राणा फतहसिंह अब विद्यमान हैं (१८८५)।

पुरातत्त्व–मेवाड़में पाषाणके लेख सन ई०से तीनसौ वर्ष पहलेसे लेकर अठारहवीं शताब्दी तकके बहुत पाए जाते हैं, परन्तु ताम्रपत्र कोई १२वीं शताब्दीके पहलेका नहीं मिलता है, इमारतोंमें सबसे प्राचीन इमारतके दो स्तूप हैं जो नगरीमें हैं। प्रसिद्ध इमारत चित्तौड़का १२वीं या १३वीं शताब्दीका कीर्तिस्तंभ व १५वीं शताब्दीका जयस्तंभ व बहुतसे मंदिर हैं। खुदे हुए पुराने मंदिर बरोली, भैंसरोरगढ़, बिजोलिया, मेनाल (बेगूनके पास), एकलिंगजी व नागदा (उदयपुर शहरसे दूर नहीं) पर हैं।

जैन संख्या–सन् १९०१में ६४६२३थी। भीलोंकी सख्या यहां ११८००० या ११ सैकड़ा है।

उदयपुरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) अहार–अहार नदीपर एक ग्राम–उदयपुरसे पूर्व २ मील। पूर्वकी ओर प्राचीन नगरके अवशेष हैं जिस नगरको कहावत है कि आसादित्यने उसी जगह बसाया था जहां उससे भी प्राचीन नगर तांबवती नगरी थी जहां विक्रमादित्यके तोंवर वंशीके बड़े लोग रहते थे। विक्रमादित्य उज्जैन जानेके पहले यहीं रहता था। इस नगरका नाम पहले आनंदपुर हुआ वही बिगड़कर अहार हो

गया। ध्वंश स्थानोंको धूलकोट कहते हैं। यहां १०वीं शताब्दीके चार लेख तथा सिके मिले हैं। कुछ पुराने जैन मंदिर अभी भी मिलते हैं। पुराने हिन्दू मंदिरोंके अवशेष भी मिलते हैं जिनमें बढ़िया खुदाई है।

(See I. Todd antiquities to Rajputana Vol. II 1832. Fergusson architecture 1848).

(२) विजोलिया—यह बूंदीके कोनेपर है। उदयपुर शहरसे ११२ मील उत्तर पूर्व है व कोटासें पश्चिम ३२ मील है। इसका प्राचीन नाम विन्ध्यावली है। यहां श्री पार्श्वनाथ भगवानके पांच जैन मंदिर हैं, एक मध्यमें व चार चार तरफ हैं। १२ वीं शताब्दीके एक महलके अवशेष हैं। १२ वीं शताब्दीके दो पाषाण लेख भी हैं। एकमें अजमेरके चौहानोंकी वंशावली चाहमानसे सोमेश्वर तक दी है। श्री पार्श्वनाथ मंदिरके सरोवरके उत्तरओर भीतके पास महुवा वृक्षके नीचे पाषाण पर यह लेख है। इसमें यह लेख है कि पृथ्वीराजके पिता सोमेश्वरदेवने एक ग्राम खेना भेट किया। लेख लिखाया महाजनने संवत १२२६ या सन् ११६९में (I. A. S. Sengul Vol. LV P. I P. 40). तथा दूसरेमें एक जैन काव्य है जिसका नाम उन्नतशिपरपुराण, है, यह अभी प्रगट नहीं है।

(Tod. Raj. Vol. II Cunningham A. S. of N. India Vol. VI P. 234-52).

यहां जो जैन मंदिर हैं उनको अजमेरके चौहान राजा सामेश्वरके समयमें सन् ११७० में एक महाजन लोलाने बनवाए थे। इनमेंसे एकके भीतर एक छोटा मंदिर और है। पाषाणलेखका सन् भी ११७० है।

Archeolgy progress report of W. India 1905 में विशेष वर्णन यह है कि मध्य मंदिरके सामने दो चौकोर स्तम्भ हैं जिनमें जैनाचार्योंके नाम हैं। तथा खास मंदिरके सामने एक खंभेवाला कमरा है जिसको नौचौकी कहते हैं। इसीके उत्तर चट्टानोंमें ऊपर कहे दो लेख हैं। पहला लेख ११ फुट छ इंच व ३ फुट ६ इंच है। दूसरा १९ फुट और ९ फुट है। लोला महाजनने या तो पार्श्वनाथका मंदिर बनवाया हो या जीर्णोद्धार किया हो। इसने सात छोटे मंदिर और बनवाए थे। ये मंदिर इनसे भिन्न होंगे। मध्य मंदिरमें एक लेख किसी यात्रीका है जो वि. सं. १२२६ चाहपान राज्यका है। A. P. R. W. India 1906 में यहांके लेखोंकी नकल दी है। नं. २१३७–३८ में जैन दि० आचार्योंके नाम इस तरह हैं–मूलसंघ सरस्वती गच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वयी वसंतकीर्तिदेव विशालकीर्तिदेव, दमनकीर्तिदेव, धर्मचंद्रदेव, रत्नकीर्तिदेव, प्रभाचंद्रदेव, पद्मनंदि, शुभचंद्रदेव। इनमेंसे पहले लेख पर सं० १४८३ फागुण सुदी ३ गुरौ निपेधिका जैन आर्य्या बाई आगमश्री।

(सं. नोट–यह आर्यिका आगमश्रीकी स्मृतिमें है।) दूसरेपर फागुण सुदी २ बुधौ सं. १४६९ निपेधिका शुभचन्द्र शिष्य हेमकीर्तिकी। जिनपर ये दो लेख हैं उसी खंभेपर किसी साधुके चरणचिन्ह हैं व एक तरफ भट्टारक पद्मनंदिदेव तथा दूसरी तरफ भट्टारक शुभचन्द्रदेव अंकित है। इस लेखका नं. २१३९ है। नं. २१४१ पार्श्वनाथ मंदिरके द्वारपर लेख है–महीधरका पुत्र मनोरथका नमस्कार हो सं० १२२६ वैसाख वदी ११।

(३) चित्तौड़–यह प्रसिद्ध किला है, एक तंगपहाड़ी पर है

जो ५०० फुट ऊंची है तथा ३। मील लम्बी व आध मील चौड़ी है। चित्तौड़का प्राचीन नाम चित्रकूट है, जो मोरी राजपूतोंके सर्दार चित्रंगके नामसे प्रसिद्ध है। इन मोरी राजपूतोंने सातवीं शताब्दीके अनुमान यहां राज्य किया था जिनका ध्वंश महल अब भी दक्षिण भागमें है। बापा रावलने सन् ७३४में इसे मोरियोंसे लेलिया। यह मेवाड़की राज्यधानी सन् १५६७ तक रहा फिर राज्यधानी उदयपुर नगरमें बदली गई। जर्नलने एसिया सोसायटी बंगाल नं० ५५ पृष्ठ १८में है कि चित्तोरगढ़के महलकी भीतरी सहनमें एक लेख नं० ५ है जो कहता है कि वैशाखसुदी ५ गुरुवार सं० १३३५को रावल तेजसिंहकी धर्मपत्नी जैतल्लदेवीने श्यामपार्श्वनाथजीका मंदिर बनवाया, इसके लिये उसके पुत्र रावल कुमारसिंहने भूमि प्रदान की। कनिंघम रिपोर्ट नं० २३में सफा १०८में है कि गणेशपोलपर एक खंभेके ऊपर एक लेख सं० १५३८का है जिसमें जैन यात्रियोंका लेख है। प्रसिद्ध जैनकीर्तिस्तंभके विषयमें लिखा है कि यह ७५॥। फुट ऊंचा है, ३२ फुटका व्यास नीचे व १५ फुट ऊपर है। यह बहुत प्राचीन है। इसके नीचे एक पाषाणखंड मिला था जिसमें लेख था—श्री आदिनाथ व २४ जिनेश्वर, पुंडरीक, गणेश, सूर्य और नवग्रह तुम्हारी रक्षा करें सं० ९५२ वैसाख सुदी ३० गुरुवार ॥

यहां सबसे प्राचीन मकान जैन कीर्तिस्तम्भ है जो ८० फुट ऊंचा है जिसको बघेरवाल महाजन जीजाने १२वीं या १३वीं शताब्दीमें जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथकी प्रतिष्ठामें बनवाया। यहां प्रसिद्ध जयस्तम्भ भी है जो १२० फुट ऊंचा है

इसको राणा कुंभने सन् १४४२ और १४४९के मध्यमें अपनी मालवा और गुजरातकी विजयकी स्मृतिमें बनवाया।

रामपाल द्वारके सामने एक जैन मठ है जिसको अब पहरे-वालोंका कमरा Guard Room कर लिया गया है। इसमें एक लेख सन् १४८१ का है जो कहता है कि कुछ जैन प्रतिष्ठित पुरुषोंने यहां दर्शन किये थे।

दक्षिणकी तरफ नौलखा भंडार और बड़े२ स्तम्भोंका कमरा है जिसको नौ कोठा कहते हैं। इन इमारतोंके बीचमें बड़े सुन्दर खुदे हुए छोटे जैन मंदिर हैं जिनको सिंगारचौरी कहते हैं। इनमें कई शिलालेख हैं। एक लेख कहता है कि इसको राणा कुंभके खजांचीके पुत्र भंडारी वेलाने श्री शांतिनाथजीकी प्रतिष्ठामें बनवाया था। दरवारके महलके पास एक पुराना जैन मंदिर है जिसको सतत्रीस देवरी कहते हैं। इसके आंगनमें वहुतसी कोठरियां हैं। Archealogical ourvey of India for 1905-6 में पृष्ठ ४३—४४ पर जो वर्णन दिया है वह यह है कि जैन कीर्तिस्तम्भ बहुत पुरानी इमारत है जो शायद सन् ११०० के करीब वनी थी। यह स्तंभ दिगम्बर जैनियोंका है। वहुतसे दिगंबर जैनी राजा कुमारपालके समयमें (१२वीं शताब्दीका मध्य) पहाड़ीपर रहते होंगे ऐसा मालूम होता है। इंग्रेजी शब्द हैं—

It belongs to the Digambar Jains, many of whan seem to have been upon the hill in Kumarpal's time.

राजा कुम्भके जयस्तम्भके नीचे जो पुराना मंदिर है उसके लेखसे प्रगट है कि गुजरातके सोलंकी राजा कुमारपालने इस पर्वतके दर्शन किये थे। राजा कुंभके राज्यके समयमें यद्यपि श्वेताम्बर जैन

थोड़े होंगे तौभी उस समयके बने जैन मंदिर श्वेताम्बरों द्वारा बनाए गए थे।

कीर्तिस्तम्भ चौमुख मूर्तिको धारताहुआ एक महत्वशाली स्तम्भ है। जो पुराने खुदे हुए पाषाणोंका ढेर इस स्तम्भके नीचे है उसमें ऐसी चौमुख मूर्तिका भाग है कि जो इस स्तम्भके शिखर पर अच्छी तरह विराजित होगी (देखो चित्र १ चौमुख मूर्ति पृष्ठ ४४) इसको समवशरणके ऊपरी भागसे मुकाबला किया गया है। (देखो चित्र १८ B)—ऐसे स्तम्भ जिनको कीर्तिस्तम्भ कहते हैं व जो जैन मंदिरके सामने स्थापित किए जाते हैं उनमें चौमुख मूर्तिके ऊपर १ छतरी होती है। यदि इस कीर्तिस्तम्भका सम्बन्ध मूलमें किसी मंदिरसे होगा तो यह मंदिर शायद उस स्थानपर होगा जहां वर्तमानमें पूर्व ओर अब पाषणका ढेर है।

जो श्वेताम्बर जैन मंदिर अब इस स्तम्भके पास दक्षिण पूर्वमें है उसका सम्बन्ध इस स्तंभसे नहीं है, क्योंकि वह २५० वर्ष पीछे बना था। इस मंदिरके शिखरके भीतर देखनेसे मालूम होता है कि इस शिखरके भीतरी भागमें जो खुदे हुए पाषाण हैं वे प्रगट करते हैं कि यहां पासमें पहले कोई दूसरा मंदिर होगा। इस कीर्तिस्तम्भकी मरम्मत सर्कारने सन् १९०६ में की थी जिसके लिये महाराणा उदयपुरने २२०००) खर्च किया। जीर्णोद्धारके पहले ऊपर तोरण न थे सो फिरसे बनादिये गए हैं। पृष्ठ ४९ पर है कि डा० जी० आर० भंडारकरके कथनानुसार दक्षिण कालेज लाइब्रेरीमें एक प्रशस्ति है जिसको "श्री चित्रकूट दुर्ग महावीरप्रसाद प्रशस्ति" कहते हैं जिसको चारित्रगणिने वि०

सं० १४९९में संकलन किया व जिसकी नकल वि० सं० १५०८ में की गई। यह प्रशस्ति कहती है कि यह कीर्तिस्तम्भ मूलमें सन् ११०० के अनुमान रचा गया था, किन्तु राणा कुंभके समयमें सन् १४५०के अनुमान इसका जीर्णोद्धार हुआ। इस लेखमें किसी शिलालेखकी नकल है जो श्री महावीरस्वामीजीके जैन मंदिरमें मौजूद था तथा कीर्तिस्तम्भ उसके सामने खड़ा था। यह लेख कहता है कि इस मंदिरको उकेशा जातिके नेजाके पुत्र चाचाने वनवाया था। यह लेख यह भी कहता है कि गणराज साधुके पुत्रोंने इस मंदिरका जीर्णोद्धार किया और नवीन प्रतिमाएं स्थापित कीं। इस कामको उनके पिताने वि०सं० १४८९ (सन् १४२८)में मोकलजी राणाकी आज्ञासे शुरु किया था। यह लेख यह भी कहता है कि धर्मात्मा कुमारपालने यह ऊंची इमारत कीर्तिस्तम्भ नामकी वनवाई। मंदिरकी दक्षिण ओर यह कैलाशकी शोभाको छिपाता है।

स० नोट—जो मूर्तियां इस क़ीर्तिस्तम्भपर वनी हैं वे सव दि० जैन हैं। यदि कुमारपालने वनाया हो तो यह मानना पड़ेगा कि कुमारपाल या तो दिगम्बर जैन होगा या दि० जैन धर्मका प्रेमी होगा।

पृष्ट ४४ में १७ नं.के चित्रमें इस स्तम्भका फोटो है। यह फोटो २ वालिस्तका है। नीचेसे आधवालिस्त जाकर खड़े आसन दि० जैन मूर्ति है दोनों तरफ दो इन्द्र हैं। इसके ऊपर ३ वैठे आसन मूर्ति हैं। उसके ऊपर एक मंदिरके मध्यमें तीन खडे आसन जैन मूर्तियें उनके ऊपर और वगलमें ७ लाइन पद्मासन मूर्तियोंकी हैं वे

सात लाइनकी मूर्तियें क्रमसे २४—२४-२१—१८—१२—१२—१२ हैं। ऊपर दो शिखर हैं। १॥ वालिस्त ऊपर शिखरकी ऊपरी भागके नीचे आठ बैठे आसन मूर्तियें हैं, ये सब मूर्तियें दि०जैन हैं।

हमने इस चित्तौड़गढ़की यात्रा ता० २९ अप्रैल १९२३को डाकटर पदमसिंह जैनीके साथ की थी उससे जो विशेष हाल विदित हुआ वह इस प्रकार है—

ऊपर जाकर सिंगारचवरीके वहां व आसपास जो जैन मंदिर हैं उनका हाल यह है:—१ जैन मंदिर जो पहले ही दिखता है इसके द्वारपर बीचमें पद्मासन पार्श्वनाथजीकी मूर्ति है व यक्षादि हैं, भीतर वेदीमें प्रतिमा नहीं है—शिखर पाषाणका बहुत सुन्दर है। इस मंदिरके स्तम्भमें यह लेख है—" सं० १५०५ वर्षे राणा श्री लाषा पुत्र राणा श्री मोकल नंदण राणा श्री कुंभकर्णकोष व्यापारिणा साहकोला पुत्ररत्न भंडारी श्री वेलाकेन भार्या वील्हण-देवि जयमान भार्या रातनादे पुत्र भं० मूंधण्ड भं० धनराज भं० कुरपालादि पुत्रयुतेन श्री अष्टापदाह्व श्री श्री श्री शांतिनायक मूलनायक प्रासादकारितं श्री जिनसागर सूरि प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे...रं राजंतु श्री जिनराजसूरि श्री जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचंद्र-सूरि श्री जिनसागरसूरि पट्टांभोजाकनंदात् श्री जिनसुंदरसूरि प्रसा-दतः शुभं भवतु। उदयशील गणिनं नमीति। यह लेख श्वेताम्बरी है। इसके थोड़ा पीछे जाकर एक जैन मंदिर है जो पुराना है व पड़ा है तथा दिगम्बरी मालूम होता है। भीतर वेदीके कमरेके द्वार-पर पद्मासन मूर्ति पार्श्वनाथ व यक्षादि, भीतर प्रतिमा नहीं। शिषर बहुत सुन्दर है। इसकी फेरीमें पीछे तीन मूर्ति पद्मासन प्राति-

हार्य सहित अंकित हैं। इसकी एक बगलमें एक खड़गासन दि० जैन मूर्ति है, दूसरी बगलमें १ खडगासन १ हाथ ऊंची है। ऊपर पद्मासन हैं।

आगे जाकर सत्तवीसदेवरीके नामका बड़ा जैन मंदिर है, द्वार पर पद्मासन छोटी मूर्ति है, छतपर कमल आबूजीके मंदिरके अनुसार हैं। भीतर दूसरे द्वारपर पद्मासन मूर्ति फिर वेदीके द्वारपर पद्मासन वेदी खाली है। छतपर कमल व देवी आदि हैं। यह तीन चौकेका मंदिर है। इसके १ बगलमें दूसरा जैन मंदिर है, द्वार पर पद्मासन भीतर द्वार पर पद्मासन पासमें खड़गासन मूर्ति है। दूसरी बगलमें जैन मंदिर द्वारपर पद्मासन। पीछे १ मंदिर शिखरमें खड़-गासन व पद्मासन व द्वारपर पद्मासन। यह मंदिर श्वेताम्बरी मालूम होता है। पासमें दूसरा श्वे० जैन मंदिर द्वारपर पद्मासन, वेदीके द्वारपर पद्मासन। आगे चलकर श्रीकृष्ण राधिकाका मीराबाईका मंदिर है, जैन मंदिरके पाषाण खंड लगे हैं उनमें पद्मासन जैन मूर्ति है।

आगे जाकर जो जयस्तम्भ राजा कुंभका है उसके भीतर ऊपर जानेको मार्ग है जिसमें ११३ सीढ़ी हैं भीतर सब तरफ अन्य देवोंकी मूर्तियां कोरी हुई हैं। ९ खन हैं, दो शिलालेख हैं। आगे जाकर जो प्रसिद्ध जैन कीर्तिस्तंभ या मानस्तंभ आता है यह सात खनका है, चारों तरफ खड़गासन और पद्मासन दि० जैन मूर्तियां अंकित हैं। भीतर चढ़नेको ६७ सीढ़ी हैं। ऊपर छत तोरण द्वार सहित है। हरएक तोरणमें पांच पांच खड़गासन दोनों तरफ ऐसे चार तरफ चार तोरण हैं। छतके कोनेमें चार मूर्ति हैं। इस मानस्तंभमें पाषाणकी कारीगरी देखने योग्य है। 'यह दि० जैनोंका मुख्य

स्मारक है। इसके नीचे एक तरफ जैन मंदिर है, द्वार व आलेंपर पद्मासन मूर्तियें हैं।

इस प्रसिद्ध कीर्तिस्तम्भमें Imperial Gazetteer of India (Rajputana) 1908 में तो यह लिखा है कि इसको एक बघेरवाल महाजन जीजाने बनवाया जब कि Archeological survey of India 1905-6 पृष्ठ ४९में चित्रकूट दुर्ग महावीरप्रसाद प्रशस्तिके आधारसे यह लिखा है कि राजा कुमारपालने इस कीर्तिस्तंभको बनवाया। दोनोंमें कौनसी बात ठीक है इसकी खोज लगानी चाहिये। परंतु A. P. R. of W. India 1906 में इस जैन कीर्तिस्तंभ सम्बन्धी पांच पाषाणोंके लेखका भाव दिया है नं० २२०५से २३०९ तकके कि इनमें जैन सिद्धांतोंकी प्रशंसा है व एक प्रगटपने कहता है, कि इस स्तम्भको बघेरवाल जातिके किसी जीजा या जीजकने बनवाया। हमारी रायमें यह बात ठीक मालूम होती है।

ऊपरके कथनानुसार श्री महावीर स्वामीके मंदिर पर लिखी हुई प्रशस्तिकी नकल संस्कृतमें पूना भंडारकर ओरियन्टल इंस्टिट्यूटमें देखनेको मिली नं० ११३२। १८९१-९५ है॥ इसमें १०२ श्लोक हैं। मंगलाचरण है-

जिनवदनसरोजे या विलासं विशुद्ध, द्वयनयमयपक्षाराजहंसीव धत्ते।
कुमतसुमतनीरक्षीरयोर्द्व्यक्तिकर्त्री, जनयतु जनतानां भारतीं भारती सा॥ १॥

अंतमें है "इति श्री चित्रकूटदुर्गमहावीरप्रासाद प्रशस्तिः चचारुचक्रचूड़ामणि महोपाध्याय श्री चारित्ररत्नगणिभिर्विरचिताः। संवत १५०८ प्रजापति संवत्सरे देवगिरौ महाराजधान्यां इदं प्रशस्ति

लेखि। यह प्रशस्ति मनोहर काव्योंमें है नकल छपने योग्य है। इसका भाव यह है कि राजा मौकल सुपुत्र कुम्भकरणके राज्यमें गुणराज सेठ थे उनके वड़ोंमें धनपाल सेठ थे जिन्होंने आशापल्लीमें मंदिर वनवाया था। गुणराजने सं० १४५७में संघ सहित यात्रा गिरनार व सेत्रुं-जयकी की व १४६८में दुर्भिक्ष पड़ा था तव खूब दान किया। १४७०में सोपारक तीर्थकी यात्रा की। इसके ५ पुत्र थे उनमें तीसरा निलय था। इसको राजा मोकल वहुत मानता था। इसने इस चित्रकूट दुर्गपर जिन मंदिर वनवानेका प्रवन्ध किया। तव वहां चंद्रगुच्छीय देवेन्द्रसूरिके शिप्य सोमप्रभसूरि उनके सोमतिलक उनके देवसुन्दर गुरु उनके सोमसुंदर गुरु थे उनसे उपदेश पाकर गुणराजने मंदिर राजा मोकलकी आज्ञासे वनवाया। गुणराज केश-वंश तिलक था। सोमसुंदरके शिप्य चारित्ररत्नगणिने इस प्रशस्तिको १४९५ संवतमें रचा। प्रतिमा स्थापनका श्लोक है "तत्र श्री जिन-शासनोन्नतिकरैरत्युद भुतैरुत्सवैर्नद्यां श्रीवरसोमसुंदरगुरु प्टैः प्रतिष्ठा-पितां। वर्पे श्रीगुणराजसाधुतनयाः पंचाष्ठरत्नप्रभो न्यास्यं तत्प्रतिमा-मिमामनुपमां श्रीवर्द्धमानप्रभोः ॥ ९० ॥

(४) नगरी—चित्तौड़से उत्तर करीव ७ मील वेराच नदीके दक्षिण तटपर। यहां वेदलाके रविका राज्य है, वहुत ही पुरानी जगह है। यह किसी समयमें वहुत प्रसिद्ध नगर था—प्राचीन नाम माध्यमिक है। यहां सन् ई०से पहलेके सिक्के व खंडित लेख मिले हैं। कुछ लेख विकटोरिया हॉल लाइव्रेरी उदयपुरमें हैं। यहां दो वौद्ध स्तूप हैं व एक पत्थरकी वौद्धोंकी इमारत है जिसको हाथीका पारा कहते हैं।

(Cunnimgham report Vol. XXIII P. 101 and I. P. Statton's Chitor and Mewar family Allahabad 1896).

(५) घेवार झील—उदयपुरके दक्षिण पूर्व ३० मील। यह ९ मील लम्बी व १ से ५ मील चौड़ी है।

(६) कंकरोली—उदयपुर शहरसे उत्तरपूर्व ३६ मील। यह एक राज्य है। नगरके उत्तर राजासमंद झील है जो ३ मील लम्बी व १॥ मील चौड़ी है। पहाड़ीपर उत्तरपूर्वकी तरफ एक जैन मंदिरके अवशेष हैं जिसको राणा राजसिंहके मंत्री दयाल साहने वनवाया था (सन् १६७०-१ के करीव) इस मंदिरका शिपर कुछ मराठोंने नष्ट कर दिया था उसके स्थानमें गोल गुम्वज वनाया गया है तौभी यह मंदिर वहुत वढ़िया प्राचीनताको दिखाता है। Forgusson architecture 1848

(७) कुंभलगढ़—उदयपुरसे उत्तर ४० मील। ३५६८ फुट ऊंची पहाड़ीपर एक किला है जिसको राणा कुम्भने सन् १४४३ और १४५८के मध्यमें उसी ही पुराने स्थानपर वनाया था जहां पहले वहुत पुराना महल राजा सम्प्रतिका था जो दूसरी शताब्दी पूर्वमें जैन राजा था ऐसी कहावत है। किलेके वाहर कुछ दूर एक सुन्दर जैन मंदिर है जिसमें चौकोर वेदीका कमरा है जिसमें वहुत सुन्दर खंभे हैं व शिपर है। इसीके पास तीन खनका दूसरा जैन मंदिर है जो कि अद्‌भुत नकशेको रखता है। हरएक खनमें वड़े मोटे छोटे२ खंभे हैं (Cunn: Vol VI and XXIII Rajputana Gazetteer Vol. III 1880 and V. A. Smith early history of India 1904) A. P. R of W. India 1909 है—कि यहां फतया तलावके पास एक भामादेवका मंदिर है। यह वास्तवमें चौमुख जैन मंदिर था

पीछे राणाकुंभने वि० सं० १५१६में यहां ब्राह्मण मूर्तियें स्थापित करदीं। इस भामादेवके मंदिरके पूर्व वहुतसे प्राचीन मकानोंके ध्वंश हैं। एक समवशरण मंदिर है उसके पश्चिमी द्वारके पास पड़े हुए पाषाण हैं उनमें एकमें सं० १५१६, गोविन्दने रिषभदेवका सिंहासन बनवाया ऐसा लेख है। एक गोवरा नामका जैन मंदिर है जिसके चारों तरफ कोट है, इसके पास बावन देवल जैन मंदिर है जिसमें ४४ जैन देहरी अभी मौजूद हैं। यहां और भी वहुतसे जैन मंदिर हैं। यहांकी कोई२ कारीगरी वहुत प्राचीन है यहां तक कि सन् ई० से २०० वर्ष पूर्वकी है।

(८) नाथद्वारा–उदयपुर शहरसे ३० मील उत्तर व मावले ष्टेशनसे उत्तर पश्चिम १४ मील। यहां जो कृष्णकी मूर्ति है उसके सम्बन्धमें कहा जाता है कि यह सन् ई०से पहले १२वीं शताब्दीकी है व इसको वल्लभाचार्यके वंशज यहां मथुरासे १५० वर्षके करीब हुए लाए थे। यहांकी मालगुजारी २ लाख वार्षिक है व वार्षिक चढ़ावा चार या पांच लाखका होजाता है। हरवर्ष मेला लगता है।

(९) रिषभदेव–उदयपुरनगरसे दक्षिण ४० मील। यह एक परकोटेदार ग्राम मगरा जिलेमें है। यहां प्रसिद्ध जैन मंदिर श्री आदिनाथ या ऋषभनाथ देवका है जिसका दर्शन राजपूताना और गुजरातके हजारों यात्री प्रतिवर्ष किया करते हैं। यह मंदिर कब बना इसकी तिथि निश्चय करना कठिन है, परंतु यहां तीन शिला-लेख हैं जिनसे प्रगट है कि इसका जीर्णोद्धार १४वीं और १५वीं शताब्दीमें हुआ था। मुख्य मूर्ति कृष्ण पाषाणकी है जो बैठे आसन ३ फुट ऊंची है। यह कहा जाता है कि यह तेरहवीं

शताब्दीमें गुजरातसे लाई गई थी। भील लोग इसको कालाजी कहते हैं (Indian Intiquary Vol. I) यह मूर्ति खास दिगम्बरी है। आसपास और वेदियोंमें भी चारों ओर दि० जैन मूर्तियें हैं। जीर्णोद्धारके लेखोंमें भी दि० महाजनोंका वर्णन है।

(१०) उदयपुर शहर—यहां कुल ४६९७६ की वस्तीमें ४५२० जैनी हैं।

(११) नागदा—यहांसे उत्तर १४ मील एकलिंगजीके पास एक जैन मंदिर है जिसको अद्भुतजीका मंदिर कहते हैं। यह इसलिये प्रसिद्ध है कि यहां सबसे वड़ी श्री शांतिनाथजीकी मूर्ति ६॥ फुटसे ४ फुट है। सं० १४९४ है। इस ग्रामका प्राचीन नाम नागहृरिद है।

(H. Cousin A. S. of Western India 1905) में है कि इस शांतिनाथकी मूर्तिको राजा कुम्भकरणके राज्यमें सारंग महाजनने प्रतिष्ठा कराई थी। भीतके सहारे भूमिपर तीन वड़ी मूर्तियां श्री कुंथनाथ, अभिनन्दननाथ व अन्य १ है। इस मंदिरके पास दूसरा मंदिर श्री पार्श्वनाथ भगवानका है इसमें मूल मंदिर, गर्भमंडप, सभामंडम, फिर दूसरा वड़ा मंडप, सीढ़ियां व चौथा मंडप है। मंडपके पास कई छोटी मंदिरकी गुमटियां हैं जिनमें जो दाहनी तरफ हैं, उनको राणा मोकलके राज्यमें सं० १४८६में एक पोड़वाड़ महाजनने वनवाया था। इस पार्श्वनाथ मंदिरके उत्तरमें दूसरा एक प्राचीन ध्वंश मंदिर राजा कुमारपालके समयका है। एक लिंगकी पहाड़ीके नीचे एक मंदिर जैनियोंका पद्मावतीके नामसे है, भीतर तीन छोटे मंदिर हैं, दाहनी तरफ

चौमुखी मूर्ति है, शेष खाली हैं। लेख सं. १३९६ और १३९१ के हैं। यहां पार्श्वनाथकी मूर्ति होनी चाहिये। यह दिगम्बर जैनोंका है। मंडपमें एक मुर्ति श्वे० रक्खी है जो कहीं अन्यत्रसे लाई गई है। इसपर राजा कुंभकरण व खरतरगच्छका लेख है। एक वेदीपर एक पाषाण है जिसके मध्यमें एक ध्यानाकार जिन मूर्ति है, ऊपर व अगलबगल शेष तीर्थंकरोंकी मूर्तियां हैं।

A. P. R. of W. India 1906 में यहांके कुछ लेखोंकी नकल दी है।

नं. २२४३में–३ लेख हैं (१) ओं संवत् १३९१ वर्षे चैत्र वदी ४ रवौ देवश्री पार्श्वनाथाय श्री मूलसंघ आचार्य शुभचंद्र चोद्यागान्वये गुणधरपुत्र कोल्हा केल्हा प्रभृति आलाकं जीर्णोद्धारकं कारायितम्।

(२) सं १३९६ वर्ष आषाढ़ वदी १३ गोरईसा तेड़ालसुत संघपति वासदेवसंघरायेण नागद्रहती श्रीपार्श्वनाथ।

(३) १–नागहृदपुरे राणाश्री कुंभकरण राज्ये।
२–आदिनाथ विम्बस्य परिकरः कारितः
३–प्रतिष्ठितः श्री खरतरगच्छेय श्रीमति वर्द्धनसूरि-
४–भिः उत्कीर्णवम् सूत्रधार धरणाकेण श्रीः

न. २२४२ में–सं. १४८६ वर्षे श्रावण सुदी ९ शनौ राणा श्री मोकलराज्ये श्री पार्श्वनाथ मंदिरमें पोड़वाड़ जैन वनियेने देवकुलिका वनवाई।

(११) पुर–उदयपुरसे उत्तर पूर्व ७२ मील, जिला भिलवाड़ा। भिलवाड़ा स्टेशनसे पश्चिम ७ मील। यह विक्रमादित्यसे

पहलेका वसा हुआ था। यह कहा जाता है कि पोरवाल महाजनोंका नाम इसी स्थानसे प्रसिद्ध हुआ है।

(१२) दिलवाड़ा—दिलवाड़ा स्टेटमें उदयपुर शहरसे उत्तर १४ मील। इस नगरको मेवाड़के प्राचीन राजाओंमेंसे एक भोगादित्यके पुत्र देवादित्यने वसाया था। यहां तीन जैन मंदिर १६ वीं शताब्दीके हैं जिनको "जैनकी वस्ती" कहते हैं। पहला मंदिर एक बहुत बढ़िया इमारत है यह श्री पार्श्वनाथजीका है। मध्यमें बड़ा मंडप है, एक एक मंडप हर दो तरफ है और एक वेदीका कमरा है जिसमें कुछ दूसरे पुराने मकानोंके पाषण लगे हैं और कई बहुत प्राचीन मूर्तियें हैं। उसी हातेमें एक छोटा मंदिर है जिसमें १२६ मूर्तियां हैं जो कुछ वर्ष हुए निकटमें खुदाईसे मिली थीं। दूसरा मंदिर श्री ऋषभदेवजीका है जिसमें एक बड़ा मंडप है। इसमें प्राचीन भाग उत्तरमें वेदीका कमरा है जिसकी खुदाई बहुत सुन्दर है। तीसरा मंदिर भी श्री ऋषभदेवका छोटा है।

(१३) मांडलगढ़—जि० उदयपुर पहाड़ीपर एक मंदिर श्री ऋषभदेवजीका है। वालेश्वर मंदिरके द्वारपर व द्वारके पास दो खंभोंकी चौखटपर १० जिन मूर्ति बैठे आसन हैं। मंडपमें दक्षिण तरफ एक जैन मूर्ति चौखटपर खुदी है।

(१४) करेड़—उदयपुरसे पूर्व ४१ मील। यह उदयपुर लाइनमें फलेरा स्टेशन है। ग्रामके बाहर एक बड़ा संगमरमरका जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथ स्वामीका है इसके चारों तरफ बड़ी दीवाल है। मूर्ति श्री पार्श्व० का सं० १६५६ है, यहां सुदी पौषमें मेला होता है। [illegible] इसी मंदिरके पास एक मसजिद बनवा दी है।

(१५) कैलवाडा—जि० कुम्भलगढ़। किलेके नीचे २ जैन मंदिर हैं, उनमें १ बड़ा है जिसमें २४ देहरी हैं जो कुम्भलगढके क़िलेके समयमें बनी हैं।

(१६) नादलाई—एक पहाड़ी किला जिसको जयकाल कहते हैं। इसको जैन लोग सेत्रुंजय पर्वतके समान पवित्र मानते हैं। यहां सोनिगरोंके पुराने किलेके शेषांश हैं, यहां १६ मंदिर हैं जिसमें वहुतसे जैनोंके हैं। किलेके भीतर एक श्री आदिनाथजीका जैन मंदिर है, इसमें लेख है—सं० १६८८ वैशाख सुदी ८ शनौ महाराज जगतसिंहराज्ये विजयसिंह सूरितपगच्छ—इसमें कथन है कि नदलाईके जैनोंने उस मंदिरका जीर्णोद्धार किया जिसको मूलमें अशोकके पोते राजा सम्प्रतिने वनवाया था। ग्रामके वाहर पर्वतके नीचे वहुतसे जैन मंदिर हैं जिनमें अंतिम मंदिर श्री सुपार्श्वनाथका है। इसके सभामंडपमें श्री मुनिसुव्रतकी मूर्ति है जिसमें लेख है कि नदुलाईके पोड़वाड़ नाथाकने वि० सं० १७२१में जेठ सुदी ३को अभयराजराज्ये विजयसूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराई। ग्रामके दक्षिण पूर्व दूसरी पहाड़ी पर श्री नेमिनाथजीका जैन मंदिर है। स्तंभोंपर दो लेख हैं इसमें प्राचीन लेख सं० १२९५ का आसोज वदी १; उस समय नदुलदगिक (नदलई) में रायपालदेव राज्य करते थे तब गोहिलवंशीय उद्धारणके पुत्र राजदेवने जो रायपालदेवके आधीन था—उसकरका वीसवां भाग नदुलईके मंदिरकी पूजाके लिये दिया, जो उन लदे हुए वैलोंसे वसूल होता था जो नदलाई होकर जाते थे। दूसरा लेख सं० १४४३ कार्तिक

धर्मचंद्रसुरिके शिष्य विनयचंद्रसूरिके समयमें श्री नेमिनाथ मंदिरका ज़ीर्णोद्धार किया गया।

एक आदिनाथके जैन मंदिरमें सं० १५९५का लेख है उसमें लेख है कि एक गुसाईसे एक जैन यतिका झगड़ा हो गया था तब मुलताई खेड़में जो दो जैन मंदिर थे उन दोनोंको मंत्रशक्तिसे यहां लाया गया। तब गुसाई जैन यतिसे हार गया। इसीके गूढ़ मंडपमें पांच शिलालेख हैं। एक लेख सं० ११८७ फागुण सुदी १२ गुरुवारे श्री महावीरकी भक्तिमें पायमारके पुत्र चाहमान विसाराकने दान किया। अन्य चार लेख चाहमान और रायपालके राज्यके सं० ११८९ से १२०२ तकके हैं। इनमेंसे एकमें चाहमानकी स्त्री अन्नलदेवीके पुत्र रुद्रपाल और अद्भुतपालने दान किया था। चौथे लेखमें है कि महाजनोंने सं० १२००में यहांके मंदिरको दान किया। यहां एक लेख सन् १५९७का मिला है जिसमें मेवाड़की राजवंशावली दी है। कुंभकरणका पुत्र रायमल्ल था उसके राज्यका यह लेख है। रायमलके ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराजकी आज्ञासे श्री आदिनाथकी मूर्ति १५९५में प्रतिष्ठित हुई।

(१७) नादाल-नदलाईसे उत्तर पूर्व ७ मील। यह श्री पद्मप्रभुका जैन मंदिर है। गूढ़ मंडपमें श्री नेमिनाथ व शांतिनाथजीकी मूर्ति हैं। लेख है सं० १२१५ वैसाख सुदी १० भौमे बृहद्गच्छीय मुनि चंद्र शिष्य देवसूरि शिष्य पद्मचन्द्र गणि द्वारा राणा जगतसिंहके राज्यमें उनके मंत्री जोधपुरवासी जैसाके पुत्र मनोत्र गोत्रधारी जयमल्लने श्री पद्मप्रभुकी प्रतिमा स्थापित की।

(२) बांसवाड़ा राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें परतापगढ़। पश्चिममें डूंगरपुर व सूंठ। दक्षिणमें झालोद, झाबुआ। पूर्वमें सैलाना, रतलाम, परतापगढ़। यहां १९४६ वर्गमील स्थान है। यहां ९२०२ जैनी हैं जिनमें ८८ सैकड़ा दिग० ४ सैकड़ा श्वे० मंदिरमार्गी व ८ सैकड़ा ढूंढिया हैं।

पुरातत्व—यहां कुशलगढ़में अंदेश्वर और वागलपर प्राचीन जैन [illegible] ध्वंश हैं

(१) अर्थोना—बांसवाड़ा नगरसे पश्चिम २४ मील—यहांका शासक चौहान राजपूत है। यहां ११ व १२ शताब्दीके हिन्दू व जैन मंदिर हैं। यहांके मंदनेसर मंदिरमें सन् १०८०का शिलालेख है जिससे सिद्ध है कि अर्थोना या उथूनक नगर या पाटन किसी समय बहुत बड़ा नगर था। यह वागड़के परमार राजाओंकी राज्यधानी था। कुछ मंदिरोंमें अच्छी खुदाई है। दूसरा शिलालेख सन् ११००का है। इसमें भी प्राचीन नगरका नाम है। सूंठ जो रेवाकांठामें है अभीतक परमार राजाओंके अधिकारमें है। ये परमार राजा उसी वंशके थे जिस वंशके मालवाके परमार थे। इन वागड़के परमारोंकी उत्पत्ति मालवाके वाकपति प्रथम जो वैरीसिंह द्वि०का भाई था उसके छोटे पुत्र दमबरसिंहसे है। दमबरने वागड़में राज्य पाया—इसका पुत्र कनकदेव था जो उस युद्धमें मारा गया जिसको उसके भतीजे मालवाके हर्षदेवने मान्यखेड़के राष्ट्रकूट राजा खत्तिगसे किया था। कनकदेवके पीछे चंदप, सत्यराज, मंदनदेव, चामुंडराज, विजयराज क्रमसे राजा हुए। इस चामुंडरायने

मंदनेश्वरका It showd temple is Jain मंदिर सन् १०८० में अपने पिताकी स्मृतिमें बनवाया विजयराज सन् ११०० में जीवित था ऐसा लेख कहता है।

(२) कालिंजर—बांसवाड़ासे दक्षिण पश्चिम १७ मील। यहां सुन्दर जैन मंदिरके ध्वंश हैं जिनमें बहुतसे शिखर हैं व कई कमरे हैं जिनमें जैन मूर्तियां हैं। इसमें खुदाई बढ़िया है। यहां तीन शिलालेख हैं जो पढ़े नहीं गए। यह जैन व्यापारियोंका मुख्य व्यापारका केन्द्र था। मराठा लुटेरोंने इसे नष्ट किया व व्यापारियोंको भगा दिया।

(See Heber Journey uppr provinces of India Vol. II 1828.)

---

(३) परतावगढ़ राज्य।

चौहद्दी—उत्तर पश्चिममें उदयपुर; पश्चिम, दक्षिण—बांसवाड़ा; दक्षिण रतलाम; पूर्व जावरा, मंदसोर, नीमच। यहां ८८६ वर्गमील स्थान है।

वीरपुर—सुहागपुरके पास। यहां एक जैन मंदिर है जो २००० वर्षका पुराना कहा जाता है।

प्राचीन मंदिर परतापगढ़से दक्षिण २ मील वीरडियापर तथा नीनारमें है। जांच नहीं हुई। परतावगढ़से ७॥ मील पश्चिम देवलिया या देवगढ़में २ जैन मंदिर हैं।

परतावगढ़ शहरमें ११ जैन मंदिर हैं व २७ सैकड़ा जैनी हैं। कुल राज्यमें ९ सैकड़ा जैनी हैं जिनमें ३६ सैकड़ा दिगम्बरी ३७ सैकड़ा श्वे० मंदिर मार्गी व ७ सैकड़ा ढूंढिया हैं।

(४) जोधपुर राज्य (पश्चिम राजपूताना राज्य रेजिडेन्सी।)

इस रेजिडेन्सीकी चौहद्दी–उत्तरमें बीकानेर, बहावलपुर पश्चिममें सिरोही। दक्षिणमें गुजरात। पूर्वमें मेवाड़, अजमेर, मरवाड़ा व जेपुर। यहां ७ शदी जेनी हैं। इसमें जोधपुर, जैसलमेर व सिरोही राज्य शामिल है जो पश्चिम व दक्षिण पश्चिममें है।

जोधपुर राज्य–यह राजपूतानामें सबसे बड़ा राज्य है। यहां ३४९६३ वर्गमील स्थान है। चौहद्दी–उत्तरमें बीकानेर, उत्तर पश्चिममें जैसलमेर, पश्चिममें सिंध, दक्षिणपश्चिम–कच्छकी खाड़ी, दक्षिणमें पालनपुर व सिरोही, दक्षिणपूर्वमें उदयपुर, उत्तरपूर्वमें जयपुर।

इतिहास–यहांके राजा राठौरवंशी हैं और अपनी उत्पत्ति श्री रामचंद्रजीसे बताते हैं। राठौर वंशका मूल नाम राष्ट्रकूटवंश है। इस वंशका नाम अशोकके लेखोंमें आया है कि ये लोग दक्षिणके शासक थे। उनका अतिप्रसिद्ध पहला राजा अभिमन्यु ५ वीं या छठी शताब्दीमें हुआ है। राष्ट्रकूट वंशका १९वां राजा जब दक्षिणमें राज्य करता था तब उसको चालुक्योंने भगा दिया। उसने कन्नौड़ामें शरण ली, जहां इस वंशकी शाखा नौमी शताब्दीके अनुमान बस गई–उनके सात राजा हुए, सातवें राजा जयचंदको मुहम्मदगोरीने सन् ११९४में हरा दिया। वह गंगामें डूब गया। इसका पोता स्याहजी सन् १२१२में राजपूतानामें आकर बसा उसीसे यह राठौरवंशी जोधपुरके राजा हैं।

जोधपुर गजेटियर सन् १९०९ से विशेष इतिहास यह

मालूम हुआ कि दक्षिणमें सन् ९७३के पहले १९ राजा हो चुके थे। आठवीं शताब्दीके मध्यमें १६वें राजा दन्तीदुर्गाने चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वि०को परास्त किया। उसको हटाकर उसके चाचा कृष्ण प्रथमने राज्य किया जिसके राज्यमें एलोराका कैलाश मंदिर वनाया गया था। कृष्णके पीछे तीसरा राजा गोविन्दराज तृ० हुआ। इसने लाड़ देश (मध्य और दक्षिण गुजरात) को जीता और अपने भाईको सुपुर्द कर दिया। मालवा भी उसे दिया और आप पल्लव और कांची राज्यको जीतने गया। गोविन्दराजके पीछे अमोघवर्ष प्रथमने मान्यखेड़ (जि० हैदरावाद) में ६२ वर्ष राज्य किया। यह दिगंबर जैनधर्मका अनुयायी था He patronised Digamber sect of Jains and was follower of that creed. सन् ९७३में ध्रुवराष्ट्र कन्नौजमें आया। वहां गाहड़वाल या गहरवार नामका नया वंश स्थापित किया। इस वंशके सात राजा हुए—(१) यशोविग्रह, (२) महीचंद्र, (३) चंद्रदेव, (४) मदनपाल, (५) गोविन्दचंद्र, (६) विजयचंद्र, (७) जयचंद्र (पृथ्वीराजके समयमें)।

जोधपुरके महाजन—नौ सैकड़ा महाजन हैं जिनमें पांचमें चार भाग जैनी हैं। महाजनोंमें ओसवाल, पोरवाल, अग्रवाल, सरावगी (अर्थात् खंडेलवाल) तथा महेश्वरी हैं। उनमें सबसे अधिक ओसवाल हैं जिनकी संख्या १०७९२६ है इनमें ९८ सैकड़ा जैनी हैं।

ओसवाल जैन— ये ओसवाल लोग भिन्न२ जातिके राजपूतोंकी संतान हैं जो दूसरी शताब्दीमें जैन धर्मी हुए थे। उनका नाम ओसवाल इसलिये प्रसिद्ध है कि वे ओसा या ओसराज नग-

रके वासी थे। इस ओसा नगरके ध्वंश अभीतक जोधपुरसे उत्तर ३९ मीलके अनुमान पाए जाते हैं। (जोधपुर गजटियर पृ० ८६) उनके मुख्य विभाग हैं—मोहनोत, भंडारी, सिंघी, लोढ़ा (इसके भी चार विभाग हैं जिनमेंसे एकको बादशाह अकबरके खजांची टोडरमलके नामसे पुकारा जाता है) और मेहता (जिनमेंसे भंडसाली हैं जो मूलमें भारती राजपूत हैं और ओसवालोंके चौधरी कहलाते हैं)।

यहां महेश्वरी २०२८८ हैं जिनकी उत्पत्ति चौहान, परिहार और सोलंकी राजपूतोंसे है।

पोड़वाल—पाटन (गुजरात)के राजपूत हैं जहां उन्होंने ७०० वर्ष हुए जैनधर्म धारण किया था। कोईका मत है कि इनकी उत्पत्ति पुर नगरसे है जो उदयपुरके भिलवाड़ाके पास एक प्राचीन नगर है।

सरावगी—(८४ भागवाले) इनकी संख्या यहां १३१९९ है, ये ही खंडेलवाल हैं।

अग्रवाल—कुल १०३३ हैं उनकी उत्पत्ति राजा अग्रसे है जिसकी राज्यधानी अग्रोहा (पंजाब)में थी।

कुल जैनी १३७३९३ हैं जिनमें ६० सैकड़ा श्वेताम्बरी २२ सैकड़ा ढूंढ़िया व १८ सैकड़ा दिगम्बरी हैं जो कि प्राचीन हैं (Who are ancient) (सफा ९१ जोधपुर गजेटियर)

पुरातत्त्व—यह जोधपुर पुरातत्त्वमें बहुत बढ़िया है। बहुत ही प्रसिद्ध स्मारक वाली, भिनमाल, डीडवाना, जालोर, मन्दोर नादोल, नागौर, पाली, राणापुर और सादरीमें हैं।

मुख्य स्थान।

(१) वाली—जि० हुकूमत—फालना स्टेशनसे दक्षिणपूर्व ९

मील। यहांसे १० मील दक्षिण वीजापुर ग्रामके बाहर हथुन्डी या हस्तिकुंड़ी नामके एक प्राचीन नगरके अवशेष हैं, यह राठौर राजपूतोंकी सबसे पुरानी जगह थी। एक शिलालेख सन् ९९७का है जिसमें १० वीं शताब्दीके ५ राजाओंके शासनका वर्णन है। वे राजा हैं—हरिवर्मन, विदग्ध (९१६), मन्मथ (९३९) धवल और बालप्रसाद। दांतीवाड़ां, दयालना और खिनवालपर जैन मंदिर हैं।

(२) भिनमाल—जि० जसवन्तपुरा, इसको श्रीमाल या भिल्लमाल भी कहते हैं। यह आबूरोड स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ५० मील व जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम १०५ मील है, यह छठीसे ९ मी शताब्दीके मध्यमें गूजरोंकी प्राचीन राज्यधानी थी। यहां एक सिंहासनपर एक राजाकी पाषाणकी मूर्ति है। पुराने मंदिर हैं। एक संस्कृत लेख है जिसमें परमार और चौहान राजाओंके नाम हैं। यहांसे दक्षिण पूर्व १४ मील सुन्दर पहाड़ी है इस पर चामुन्डदेवीका पुराना मंदिर है। यहां पुराना लेख है जिसमें सोनिगरा (चौहान) राज्यके १९ राजाओंका व घटनाओंका वर्णन है। A. S. R. W. I. of 1908 से विदित हुआ कि यह श्रीमाल जैनियोंका प्राचीन स्थान है। ऐसा श्रीमाल महात्म्यमें है। यहां जाकब तालावके तटपर उत्तरमें गजनीखांकी कब्र है। इसकी पुरानी इमारतके ध्वंशोंमें एक पड़े हुए स्तम्भपर एक लेख अंकित है जिसमें लेख है वि० सं० १३३३ राज्य चाचिगदेव पारापद गच्छके पूर्ण चन्द्रसूरिके समय श्री महावीरजीकी पूजाको आश्विन वदी १४ को १३ दुम्भा व ८ विसोपाक दिये। एक पुरानी मिहराबमें एक जैन मूर्ति कित है। जाकब तलावकी

भीतमें एक लेख है जिसमें प्रारम्भमें है श्री महावीरस्वामी स्वयं श्रीमाल नगरमें पधारे थे।

(३) मांदोर–जोधपुर नगरसे उत्तर ५ मील। यह सन् १३८१ तक परिहार वंशी राजाओंकी राज्यधानी था। यहां १६ वीर पुरुषोंकी बड़ी२ मूर्तियां एक दालानमें हैं। यहां बहुत प्राचीन मंदिरोंके शेष हैं, इनमें बहुत प्रसिद्ध एक दो खनकी जैन मंदिरकी इमारत उत्तरमें है। इसमें बहुत कोठरियां हैं। मंदिरमें जाते हुए द्वारके आलेमें चार जैन तीर्थंकरकी मूर्तियां हैं व आठ भीतर वेदीमें कोरी हैं। यहां एक बड़ा शिलालेख था जो दबा पड़ा है। इसके खंभे १०वीं शताब्दीके पुराने हैं।

(४) नादोल–जि० देसूरी जवाली (Jawali) स्टेशनसे ८ मील यह ऐतिहासिक जगह है। ग्रामके पश्चिम पुराना किला है। इस किलेके भीतर बहुत सुन्दर जैन मंदिर श्री महावीर स्वामीका है। यह मंदिर हलके रंगवाले चुनई पाषाणसे बना है और इसमें बहुत सुन्दर कारीगरी है। यह चौहान राजपूतोंका स्थान है। जैन मंदिरमें तीन लेख १६०९ ई०के हैं व ८ बड़े पाषाण स्तम्भ हैं, जिनको खेतलाका स्थान कहते हैं। (कनिंघम जिल्द २३ पृ० ९१–८)

(५) मंगलोद–नागोरसे पूर्व २० मील। यहां प्राचीन मंदिर है जिसमें संस्कृतमें लेख सन् ६०४ का है। इसमें लिखा है कि इस मंदिरका जीर्णोद्धार धुहलाना महाराजके राज्यमें हुआ था। यह लेख जोधपुरमें सबसे प्राचीन है।

(६) पाकरन नगर–जि० सांकरा–जोधपुर नगरसे उत्तर

पश्चिम ८९ मील। सातलमेर ग्रामके वाहर दो मील तक ध्वंश स्थान है। यहां एक वड़ा जैन मंदिर है और ठाकुरके वंशके मृत प्रातोंके स्मारक हैं।

(७) रानापुर-(रैनपुर) जि० देसूरी-फालना स्टेशनसे पूर्व १४ मील व जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ८८ मील। यहां प्रसिद्ध जैन मंदिर है। जो मेवाडके राणा कुम्भके समयमें १९ शताब्दीमें वना था। यह वहुत पूर्ण है। मंदिरका चवूतरा २००×२२९ फुट है। मध्यमें वड़ा मंदिर है जिसमें ४ वेदी हैं। प्रत्येकमें श्री आदिनाथ विराजमान हैं। दूसरे खनपर चार वेदी हैं। आंगनके चार कोनेपर ४ छोटे मंदिर हैं। सव तरफ २० शिखर हैं जिसको ४२० स्तम्भ आश्रय दिये हुए हैं। संगमर्मरका खुदा हुआ मान-स्तंभ द्वारपर है, उसमें लेख हैं जिनमें मेवाड़के राजाओंके नाम वापा रावलसे राणा कुंभा तक हैं।

(See J. Fergusson history of India 1838 P. 240-2).

इस मंदिरके हरएक शिखरके समुदायमें जो मध्य शिखर है वह तीन खनका ऊँचा है। जो खास द्वारके सामने है वह ३६ फुट व्यासका है उसे १६ खम्भे थांभे हुए हैं। १९०८ की पश्चिम भारतकी रिपोर्टमें है कि इस वड़े मंदिरको-जो चौमुखा मंदिर श्री आदिनाथजीका है-पोड़वाड़ महाजन धरणकने सन् १४४० में वनवाया था। दो और जैन मंदिर हैं उनमें एक श्री पार्श्वनाथजीका १४ वीं शताब्दीका है।

(८) सादरी नगर-जि. देसूरी। प्राचीन नगर जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ८० मील। यहां वहुतसे जैन मंदिर हैं।

(९) कापरदा–जि. हकूमत। यहां एक जैन मंदिर है जो इतना ऊंचा है कि ९ मीलसे दिखता है। यह १६ वीं शताब्दीके अनुमानका है। यह जोधपुरसे दक्षिण पूर्व २२ मील है। विसालपुरसे ८ मील है।

(१०) पीपर जि. वेलारा–जोधपुरसे पूर्व ३२ मील व रेन स्टेशनसे दक्षिण पूर्व ७ मील। इस ग्रामको एक पल्लीवाल ब्राह्मण पीपाने वसाया था। यह कहावत है कि इसने सर्पको दूध पिलाया, उसने सुवर्णको पाषाण बना दिया, तब उसने सर्पकी स्मृतिमें सम्पू नामकी झील वनवाई व अपने नामसे ग्राम वसाया।

(११) वारलई–देसूरीसे उत्तर पश्चिम ४ मील। यहां सुन्दर दो जैन मंदिर हैं–एक श्री नेमिनाथजीका सन् १३८६का व दूसरा श्री आदिनाथजीका सन् १५४१ का।

(१२) दीदवाना नगर–मकराना स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ३० मील व जोधपुर शहरसे १३० मील। यह २००० वर्ष पुराना है। प्राचीन नाम द्रुद्वाणक है। यहां खुदाई करने पर एक पाषाण मूर्ति मिली थी जिस पर सं० २९२ था। वर्तमान सतहसे नीचे २० फुट जाकर मट्टीके वर्तन मिलते हैं। यहांसे दक्षिण पूर्व दौलतपुरामें एक ताम्रपत्र संवत् ९९३का पाया गया है जो कन्नौजके महाराज राजा भोजदेवका है (Epigraphica Indica Vol. V) यहां निमककी झील है ३॥ मील × १॥ मील, जिसमें २ लाख वार्षिक आमदनी है। (सन् १९०९)।

(१३) जसवन्तपुरा–आवूरोड स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ३० मील। पर्वतके नीचे एक नगर है इसके पश्चिममें सुन्दर पहाड़ी है। इसपर पर्वतमें कटा हुआ एक चामुंडदेवीका मंदिर है इसमें

कई शिलालेख हैं जिनमें सबसे पुराना सन् १२६२ का है. इसमें सोनिगरा या चौहान वंशके १९ राजाओंके नाम व घटनाएं हैं। यह पहाड़ी ३२८२ फुट ऊंची है। यहीं रतनपुर ग्राममें श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर सन् ११७१ का है इसमें दो लेख सन् ११९१ और १२९१ सन्के हैं।

(१४) घटियाला–जि० हुकुमत। जोधपुरसे उत्तर पश्चिम १८ मील। यह पुराना ग्राम है। यहां ध्वंश जैन मंदिर है जिसको माताजीकी साल कहते हैं। एक पाषाण पर प्राकृत भाषाका लेख है उससे विदित है कि महोदर (मान्दोर) के परिहार या प्रतिहार वंशके राजा कक्कुकने सन् ८६१ में बनवाया था। इस वंशके राजा कन्नौज या महोदयके प्रतिहार वंशी राजाओंके आधीन माड़वाड़में राज्य करते थे।

(१५) ओसियान या ओसिया या उकेसा–जोधपुरसे उत्तर ३० मील यह ओसवाल महाजनोंका मूल स्थान है। यहां एक जैन मंदिर है जिसमें एक विशाल मूर्ति श्री महावीर स्वामीकी है। यह मंदिर मूलमें सन् ७८३के करीब परिहार राजा वत्सराजके समयमें बनाया गया था। इसके उत्तर पूर्व मानस्तंभ है जिसमें सन् ८९५ है। सन् १९०७ की पश्चिम भारतकी प्राग्रेस रिपोर्टसे विदित है कि यह तेवरीसे उत्तर १४ मील है। इसका पूर्वनाम मेलपुर पट्टन था। ऊपर कहे हुए प्राचीन मंदिरको लेकर यहां १२ मंदिर हैं। हेमाचार्यके शिष्य रत्नप्रभाचार्यने यहांके राजा और प्रजा सबको जैनी बना लिया था ऐसा ही ओसवाल लोग व [illegible] कहते हैं।

श्रीजिनसेनकृत हरिवंशपुराणमें प्रतिहारराजा वत्सराजका कथन है (सन् ७८३-८४)।

(१६) वारमेर-जि० मैलानी-जोधपुर शहरसे दक्षिण पश्चिम १३० मील। यहांसे करीव ४ मील उत्तर पश्चिम जूना वगरमेर नगरके ध्वंश हैं। २ मील दक्षिण जाकर तीन पुराने जैन मंदिर हैं। सवसे वड़े मंदिरजीके एक स्तंभपर एक लेख सन् १२९१ का है जो कहता है कि उस समय वाहड़मेरुमें महाराजकुल सामन्तसिंहदेव राज्य करते थे। एक दूसरा लेख संवत् १३९६का है, श्री आदिनाथ भगवानका नाम है। यह जूना वारमेर हतमासे दक्षिण पूर्व १२ मील है।

(१७) मेरत नगर-मेरतरोड स्टेशनके पास जोधपुरसे उत्तर पूर्व ७३ मील। इसको जोधाके चौथे पुत्र दूदाने १४८८ के करीव वसाया था। इसके उत्तर पूर्व फालोदी ग्राममें सुन्दर और ऊंचा जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथका है। वार्षिक मेला होता है।

(१८) पालीनगर-(माड़वाड़ पाली) जोधपुर रेलवेपर वांदी नदीके तटपर। जोधपुर नगरसे दक्षिण ४९ मील। यहां एक विशाल जैन मंदिर है जिसको नौलखा कहते हैं। यह अपने वड़े आकार, सुन्दर खुदाई काम व क़िलेके समान दृढ़ताके लिये प्रसिद्ध है। इसमें वहुतसा काम चारों तरफ वना है जिसमें भीतरसे ही जाया जासक्ता है, केवल वाहर एक ही द्वार है जो ३ फुट चौड़ा भी नहीं है। भीतर आंगनमें एक मसजिद भी है जो शायद इस लिये वनाई हो कि यहां मुसलमान लोग ध्वंश न कर सकें। किसी समयमें पाली एक वडा नगर था। यहांके ब्राह्मणोंको पल्लीवाल कहते हैं। यहां

१ लाख पल्लीवालके वंशज रहते थे। इस नौलखा जैन मंदिरमें प्राचीन मूर्तियें वि० सं० ११४४ से १२०१ तककी हैं। कुछ प्रतिमाओंके लेख नीचे लिखे भांति हैं।

(१) सं० ११४४ माघ सुदी ११। वृहस्पति व रामप्रादेवीके पुत्र जज्जकने वीरनाथ मंदिरमें वीरनाथ प्रतिमा स्थापित की, ऐंद्रदेव द्वारा जो प्रद्योतनाचार्यसूरिके गच्छमें थे।

(२) सं० ११५१ आषाढ़ सुदी ८ गुरौ लक्ष्मण पुत्र देशने श्री वीरनाथके देवकुलिकमें रिषभदेव प्रतिमा स्थापित की सुद्योतनाचार्यके गच्छके भाड़ा और भादाकके धार्मिकभावके लिये जो पाली निवासी थे।

(३) सं० ज्येष्ट वदी ६ श्री विमलनाथ व महावीरकी मूर्तियोंको पल्लिकामें महामात्य श्री पृथ्वीपालने जो महामात्य श्री आनन्दका पुत्र था स्थापित की।

यह मंदिर मूलमें श्री महावीरस्वामीका है, परन्तु मुसल्मानोंने इसको ध्वंश किया तब श्री पार्श्वनाथकी प्रतिमा स्थापित की गई और पार्श्वनाथ मंदिर कहलाने लगा। इस पार्श्वनाथकी मूर्तिपर लेख है सं० १६८६ वैसाख सुदी ८ शनौ राजा गजसिंह व राजकुमार अमरसिंह राज्ये श्रीमाली जाति पालीवासी डूंगर और भारवरने प्रतिष्ठा की, आचार्य तपगच्छीय विजयदेव सूरिद्वारा उस समय पाली जसवन्तके पुत्र जगन्नाथ चाहमान द्वारा शासित थी।

(१९) सांभर-यह बहुत प्राचीन नगर है जब चौहान राजपूत गंगाजीके तटसे राजपूतानामें ८ वी शताब्दीके मध्यमें आए तब पहले पहल यहीं राज्यधानी स्थापित की। अंतिम हिंदू

राजा पृथ्वीराज चौहान था जो अपनेको सम्भारी राव कहता था यह सन् ११९२ में मरा था। यहां झील २० मील लम्बी व ७ मील चौड़ी है।

(२०) संचोर-नगर-जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम १५० मील। यहां एक पुरानी मसजिद है जो पुराने जैन मंदिरोंको तोड़ कर बनाई गई है। यहां तीन पाषाणके खंभों पर ४ लेख हैं उनमेंसे दो संस्कृतमें हैं, जिनका भाव है (१) संवत १२७७ मंडप बनाया संघपति हरिश्चन्द्रने; (२) सं० १३२२ वैशाख वदी १३ सत्यपुर महास्थानके भीमदेवके राज्यमें श्री महावीर स्वामीके जैन मंदिरमें जीर्णोद्धार किया ओसवाल भंडारी छाधाद्वारा।

(२१) नाना-रेलवे स्टे० नानासे २ मील। यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है उसमें लेख है कि बिलहरा गोत्रके ओसवाल डूडाने सं० १५०६ माघवदी १० श्री शांतिसूरि द्वारा मंदिरके द्वारपर एक लेख सं० १०१७का है। आलेके भीतर एक लेख सं० १६९९का है कि राणा श्री अमरसिंहने मंदिरको दान किया।

(२२) बेलार-नानासे उत्तर पश्चिम ३ मील। यहां एक श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है उसके खंभेपर एक लेख सं० १२६५ का है कि नानाके राजा धांधलदेवके राज्यमें किसी ओसवालने जीर्णोद्धार कराया।

(२३) हथुंडी-बीजापुरसे दक्षिण पूर्व ३ मील। यहां श्री महावीर भगवानका एक जैन मंदिर है। गूढ़ मंडपमें एक लेख सं० १३३५ श्रावण वदी १ सोम २४ द्रम्मा श्री महावीरस्वामीकी पूजाको कर बिना दिये।

द्वारमें दो तीन लेख हैं इसमें चाहमान राजा सामंतसिंहका नाम है। जोधपुरमें मुंशी देवीप्रसादके घरमें एक पाषाणका पहिया है उसमें एक बड़ा लेख है जिसमें हथुंडीका नाम हस्तीकुंडी आता है। इसमें राष्ट्रकूट वंशजोंके नाम हैं, १० वीं शताव्दीमें यह राष्ट्रकूटोंकी राज्यधानी थी। हस्तिकुंडया गच्छके जैनाचार्योंकी नामावली दी है। (J. B. A. S. Vol. LXII P. I. P. 309) इस लेखका पाषाण वीजापुर (वलीगोढ़वाड़में) ग्रामसे दक्षिण ३ मील एक जैन मंदिरके द्वारके पास लगा हुआ था। यह पुराने हस्तिकुंडके खंडहरोंमें पाया गया और वीजापुरकी जैनधर्म-शालामें लाया गया। इसमें ६२ लाइन संस्कृतकी हैं। पहले ४१ श्लोककी प्रशस्ति सूर्याचार्यकृत है जो वि० सं० १०५३ (९९७ ई०) माघ सुदी १३ को रची गई थी। इसमें है कि धवलके राज्यमें हस्तिकुंडिकामें शांतिभट्ट या शांत्याचार्यने श्री ऋषभदेवकी प्रतिष्ठा की और उस मंदिरमें स्थापित की जिसको धवलराजाके बावा विदग्धने यहां बनवाया था। लाईन् ९से ६ में वंशावली दी है। लाइन २२से ३२ तक दूसरे लेखमें उसी मंदिरके, धवलके पिता और बावाद्वारा भूमिदानका वर्णन है। इसमें वंशावली दी है--राजा हरिवर्मनके पुत्र विदग्ध राष्ट्रकूटवंशी उनके पुत्र मम्मट बलभद्र मुनिकी कृपासे सं० ९७३में विदग्ध राजाने दान दिया। सं० ९९६में मम्मटने उसीको बढ़ादिया। धवल मम्मटका पुत्र था। धवल राज्यका वर्णन पहले लेखमें लाइन १० से १२में है कि सं० १०५३में उसका सम्बन्ध राजा मुंजराज, दुर्लभराज, मूलराज और धरणी वराहसे था। यह मुंजराज मालवाका राजा था, इसको वाक्पति मुंज भी

कहते थे। मुंजराजने मेवाड़ या मेड़ापातापर हमला किया था तब मेवाड़के राजाको छवलने मदद दी थी। इस छवलने महेन्द्रराजको भी मदद दी थी जब उसपर दुर्लभराजने हमला किया था जो शायद हर्षके लेखके अलसार चाहमान विग्रहराजका भाई था। इसने धरणीवराहको भी मदद दी थी जब उसपर मूलराजने हमला किया था। यह चालुक्य मूलराज है जिसका सबसे अन्तका लेख वि० सं० १०३१का है।

माड़वाड़ी राठौड़ोंमें हथुंडी बहुत प्रसिद्ध जगह है। यह राठौड़ हस्तिकुंडके राष्ट्रकूटोंके वंशज हो सक्ते हैं।

(२४) सेवादी—बीजापुरसे उत्तर पूर्व ६ मील-यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है, कुछ मूर्तियां जैनाचार्योंकी हैं उनके आसनपर वि० सं० १२४९ संदेरक गच्छ है।

मंदिरके द्वारपर कई लेख हैं—(१)वि० सं० ११६७ चाहमान राजा अश्वराज पुत्र कटुक—धर्मनाथ पूजार्थ।

(२) वि० सं० ११७२ शांतिनाथ पूजार्थ कटुकराज द्वारा ८ द्रम्माका दान।

(३) वि० सं० १२१३—नडुलके दंडनायक वेजाद्वारा।

(२५) घनेरवा—सेवादीसे उत्तर पूर्व ६ मील—पहाड़ीके नीचे श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर ११वीं शताब्दीका है।

(२६) वरकाना—जि० देसूरी—यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर १६वीं शताब्दीका है।

(२७) संदेरवा—यह यशोभद्रसूरि द्वारा स्थापित संद्रक जैन गच्छका मूल स्थान है। यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है

जिसके द्वारपर एक लेख है कि सं० १२२१ माघ वदी २ को केल्हणदेव राजाकी मांता आणलदेवीने राजाकी सम्पत्तिमेंसे श्री महावीरस्वामीकी पूजाके लिये दान किया था। यह राष्ट्रकूट वंशी सहुलाकी पुत्री थी। सभामंडपके खंभे पर ४ लेख हैं—१ है सं० १२३६ कार्तिक वदी २ बुधे कल्हणदेवके राज्यमें थंथाके पुत्र रल्हाका और पल्हाने श्री पार्श्वनाथजीके लिये दान किया।

(२८) कोरता—संदेरवासे दक्षिण पश्चिम १६ मील। यहां तीन जैन मंदिर हैं जो १४ वीं शताब्दीके हैं।

(२९) जालोर—नगर जि० जालोर। जोधपुरसे दक्षिण ८० मील। यहां एक किला है उसमें तोपखाना तथा मसजिद है जो जैन और हिन्दू मंदिरोंके ध्वंशोंसे बनाई गई है। यहां बहुतसे लेख हैं व तीन जैन मंदिर श्री आदिनाथ, महावीर व पार्श्वनाथके हैं जो इनके लेखोंसे प्रगट है। वे लेख हैं—

(१) सं० १२३९ चाहमान वंशी कीर्तिपालके पुत्र समरसिंहके राज्यमें आदिनाथका मंदिर श्रीमाल बनिया यशोवीरने बनवाया। (२) सं० १२२१में श्री पार्श्वनाथके मंदिरमें चालुक्य राजा कुमारपालने जवालीपुर (जालोर) के कंचनगिरिके किलेपर श्री हेमसूरिकी आज्ञासे कुवेरविहार बनवाया। (३) सं० १२४२ चाहमान वंशी समरसिंहदेवकी आज्ञासे यशोवीर भंडारीने मंदिरका जीर्णोद्धार किया। (४) सं० १२५६ श्री पार्श्वनाथ मंदिरके तोरण और ध्वजाकी प्रतिष्ठा पूर्णदेवाचार्यने की। (५) एक लेख सं० ११७४ परमार राजा विशालके समयका है। किला ८०० गजसे ४०० गज है। यहां दो जैन मंदिर और हैं एक सं० १६८२

में जयमल्लने बनवाया, इसमें विशाल आकारकी एक कुन्थुनाथजीकी मूर्ति है इसको विजयदेवसूरिकी आज्ञासे सामीदारक ओसवालने सं० १६८४में प्रतिष्ठा कराई। दूसरे जैन मंदिरमें तीन विशाल मूर्तियें श्री महावीर, चंद्रप्रभु और कुंथुनाथजीकी हैं, इनपर लम्बा लेख है–प्रतिष्ठाकारक मुहनोत्र गोत्रकी वृहद् शाषाके जयमल्ल ओसवाल सं० १६८१ राठोड़ महाराज गजसिंहके राज्यमें।

(३०) केकिंद–मेरतासे दक्षिण पश्चिम १४ मील शिव मंदिरके पास एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथका है। इसके खंभेपर लेख है–सं० १६६९ राठौड़वंशी मल्लदेवके परपोते उदयसिंह। इनके पोते सारसिंहके पुत्र गजसिंहके राज्यमें जोगा ओसवाल और उसके पोते नापीने सकुटुम्ब सं० १६५९में श्री उज्जयंत और सेत्रुञ्जयकी यात्रा की व सं० १६६४में अर्बुदगिरी (आबू), राणापुर (सादोदीसे दक्षिण ६ मील) नारदपुरी (नादोल जि० देसूरी) व शिवपुरी (सिरोही) की यात्रा की व मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा विजयदेवसूरिने कराई। मूल मंदिरके सम्बन्धमें एक छोटा लेख एक मूर्तिके आसनपर है सं० १२३० आषाढ़ सुदी ९ किष्किन्धा (केकिंद) में (सु)विधिकी मूर्त्ति स्थापित की।

(३१) बारलू–बागोदियासे उत्तर ४ मील यहां १३ वीं शताब्दीका एक श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है।

(३२) ऊनोतरा–बारलूसे पश्चिम ४ मील। यहां भी १३ वीं शताब्दीका एक जैन मंदिर है।

(३३) सुरपुरा–बारलूसे उत्तर पूर्व ३ मील। यहां श्री नेमिनाथका जैन मंदिर है। लेख १२३९का है।

(३४) नदसर—सुरपुरासे उत्तरपूर्व ६ मील। यहां एक प्राचीन जैन मंदिर है। १०वीं शताब्दीके आश्चर्यजनक स्तंभ हैं।

(३५) जासोल—जि० मल्लानी। जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ६० मील। यह लूणी नदीपर है। एक जैन मंदिर है। यहां एक हिंदू मंदिर है जो जैन मंदिरके पुराने सामानसे बनाया गया है। एक पाषाण जो सभामण्डपकी भीतपर लगा है वह खेड़के जैन मंदिरसे लाया गया है उसपर लेख सं० १२४६ है। इस जैन मंदिरमें दो मूर्तियें श्री सम्भवनाथकी हैं जिनकी प्रतिष्ठा सहदेवके पुत्र सोनीगरने कराई थी। यह भानुदेवाचार्यके गच्छके श्री महावीरस्वामीके मंदिरकी हैं जो खेतलापर है। इस जैन मंदिरको देवी देहरा कहते हैं। इसमें एक लेख संवत १६९९ रौला विक्रमदेवके राज्यका है।

(३६) नगर—जासोलसे दक्षिण ३ मील। यहां तीन जैन मंदिर हैं (१) नाकोड़ा पार्श्वनाथका (२) लासीबाई ओसवाल कृत श्री रिषभदेवका (३) जेसलमेरके पटवा वंशके सेठ मालासा कृत शांतिनाथका, यह १३वीं शताब्दीका है।

रिषभदेवके मंदिरमें तीन लेख हैं—(१) सं० १५४८ रौला कुम्करणके राज्यमें नजग गच्छके स्वामी भट्टारक प्रभु हेम विमलसूरिके शिष्य पंडित चारित्रसाधगणिकी सम्मतिसे वीरमपुर (नगरका प्राचीन नाम)के संघने श्री विमलनाथके मंदिरमें रङ्ग मण्डप बनवाया (२) सं० १६३१ रौला मेघराज राज्यमें परम भट्टारक श्री हीरविजयसूरि तपगच्छीयके शिष्य विजयसेनसूरि (३) सं० १६६७।

शांतिनाथजीके मंदिरमें लेख है—सं० १६१४ रौला मेघराज

राज्ये जिनचन्दसूरि खरतर गच्छीय। श्री पार्श्वनाथके मंदिरमें दो लेख हैं-(१) सं० १६८१ रौला जगमल राज्ये पल्लिपाल गच्छके यशोदेव सूरिकी आज्ञासे पल्लीगच्छके जयसिंहने निगमचतुष्टिका बनवाई। (२) सं० १६७८ वही नाम है।

(३७) खेड़-नगरसे उत्तर ९ मील। यह मल्लानाकी राज्यधानी थी। यहां रणछोड़जीके मंदिरमें हातेके भीतपर दो जैन मूर्तियां लगी हैं जिनमें एक बैठे व दूसरी खड़े आसन है।

(३८) तिवरी-ओसियासे दक्षिण १३ मील। यहां बहुतसे ध्वंश मंदिर हैं उनमें एक बड़ा जैन मंदिर श्री महावीरस्वामीका है। मंदिरके सामने मानस्तम्भ है। उसके मध्यमें ८ जैन तीर्थंकरकी मूर्तियां पद्मासन हैं। नीचे चार खड़े आसन मूर्तियां हैं। उसके नीचे ४ बैठे आसन हैं। इस स्तम्भपर लेख है उसमें वि० सं० १०७५ आषाढ़ सुदी १० है-यह २८ लाइनका है। यह मंदिर उस समय मौजूद था जब प्रतिहारवंशी राजा वत्सराज सन् ७७०-८०० के करीब यहां राज्य करता था। इसका नाल मंडप वि० सं० १०१३में बनाया गया था।

(३९) फालोदी-यहां प्राचीन श्री पार्श्वनाथका मंदिर है। यहांकी मूर्ति एक वृक्षके नीचे मिली थी जहां एक जैनकी गाय नित्य दूधकी धार डाला करती थी।

---

(५) जसलमेर राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है। उत्तरमें बहावलपुर, उत्तरपूर्वमें बीकानेर, पश्चिममें सिंध, दक्षिण व पूर्व जोधपुर। यहां

१६०६२ वर्गमील जगह है जिसमें एक बड़ा भारतीय रेतीला जंगल है। इसका राजा कृष्णवंशी यदुवंशी है, सालिवाहनका पोता भाटी जादों बहुत वीर था व प्रसिद्ध हुआ है। जेसवाल रावलने जैसलमेर सन् ११५६में वसाया था।

यहां विरसिलपुरका किला दूसरी शताब्दीका व तनातका किला ८वीं शताब्दीका है।

(१) जैसलमेर नगर—वार्मेर स्टेशनसे ९० मील है। यहां २३२ जैनी हैं। पहाड़ीपर किला है, किलेके भीतर ८ जैन मंदिर हैं, जो बहुत सुन्दर हैं व इनमें अच्छी खुदाई है, इनमें कई मंदिर १४०० वर्षके पुराने हैं। श्री पार्श्वनाथजीका मंदिर बहुत ही बढ़िया है जिसको जैसिंह चोलाशाहने सन १३३२में बनवाया था। यहां प्राचीन जैन शास्त्रोंके भंडार हैं जिनकी अच्छी तरह खोज नहीं की गई है।

(२) लोडरवा—जैसलमेरसे १० मील। यहां एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका १००० वर्षके करीब प्राचीन है।

---

(६) सिरोही राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तर पश्चिम जोधपुर; दक्षिणमें पालनपुर, दांता, ईडर; पूर्वमें उदयपुर, आबू पहाड़ व चंद्रावतीका प्राचीन नगर। यहां १९६४ वर्गमील स्थान है। पिंडवाराके पास वसन्तगढ नामका पुराना किला है इसमें राजा चर्मलाटका लेख सन् ६२५ का है। इस राज्यमें ११ सैकड़ा जेनी हैं कुल संख्या १७२२६ (१९०१ के अनुसार) है।

(१) नांदिया–पिंडवारासे पश्चिम ५ मील। यहां एक बहुत सुरक्षित जैन मंदिर श्री महावीर स्वामीका ९०० वर्षका पुराना है। बाहरकी भीतमें लेख सन् १०७३का है।

(२) झारोली–ग्राम सिरोहीसे पूर्व १४ मील व पिंडवारासे २ मील। यहां श्री शांतिनाथका जैन मंदिर है जिसके स्तम्भ व मिहराब आबूके विमलशाहके मंदिरसे मुकाबला करते हैं। एक श्री रिषभदेवकी मूर्तिपर सन् ११७९का लेख है प्रतिष्ठाकारक देवचन्द्रसूरि हैं। इस मंदिरमें एक शिलालेख है जिसमें परमार राजा धारावर्ष सं० १२५५ है। यह मूलमें श्री महावीर मंदिर था। धारावर्षकी राना श्रृंगार देवीने कुछ भूमि दान की थी। यह श्रृंगारदेवी नाडोलके चौहान राजा केल्हणदेवकी पुत्री थी।

(३) मीरपुर–सिरोहीसे दक्षिण पश्चिम ९ मील। यहां गोडीनाथके नामसे एक जैन मंदिर १४वीं शताब्दीका है। इसके पास तीन नए जैन मंदिर हैं जिनमें कुछ मूर्तियां पुरानी हैं उनमें तीनपर सं० ११९९ व दोपर १२८९ है। ये दूसरे मंदिरसे लाई गई हैं।

(४) मुंगथल–खराड़ीसे दक्षिण पश्चिम ५ मील। यहां १५ वीं शताब्दीका जैन मंदिर है। जो श्री महावीर स्वामीका है, खंभोंपर लेख है। सबसे पुराना है सं० १२१६ वैसाख वदी ९ सोमे, यह कहता है कि वीसलने जासाबाहुदेवीकी स्मृतिमें एक स्तंभ बनवाया। दो और लेख हैं–१ सं० १४२६ वैसाख सुदी ८ रवौ श्रीपाल पोड़वाड़ने कुछ जीर्णोद्धार किया। दूसरा कहता है कि नन्नाचार्यकी संतानमें कक्कसूरिके पट्टमें सत्यदेवसूरिने मूर्ति

स्थापित की । आबूके मंदिरके लेख नं० २ में इस स्थानको मंद-स्थल लिखा हैं ।

(५) पतनारायण–मुंगथलसे उत्तर पश्चिम ६ मील । यहां पतनारायणका गिरवार मंदिर है जिसमें द्वार पुराना है जो जैन मंदिरसे लाया गया है ।

(६) ओर–कीवरली प्टे० से ४ मील दक्षिण व खराड़ीसे उत्तर पूर्व ३ मील । इसका प्राचीन नाम ओद ग्राम है । यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है । लेख संवत् १२४२ है उसीमें नाम ओद ग्राम है व महावीर स्वामी मंदिर लिखा है। यहां बिड-लाजीके मंदिरके द्वारपर जैन मूर्ति है । यह द्वार जैन मंदिरका है जो चंद्रावतीसे लाया गया ।

(७) नीतोरा–राहड़े प्टे० से उत्तर पश्चिम ४ मील है । यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है । एक प्रतिमा संगमर्मरकी हैं जिसके आसनपर चक्रका चिह्न है। इस प्रतिमाको बाबाजी कहते हैं । यहां क्षेत्रपालकी मूर्तिके ऊपर एक बैठे आसन मूर्ति है इसपर लेख है सं० १४९१ वैसाख सुदी २ गुरु दिने यक्ष बाबा मूर्ति ।

(८) कोजरा–नीतोरासे उत्तरपूर्व १० मील । यहां १२वीं शताब्दीका संभवनाथजीका जैन मंदिर है । खंभेपर लेख है । सं० १२२४ श्रावण वदी ४ सोमे श्री पार्श्वनाथदेव चैत राणाराव । यह मूलमें श्री पार्श्वनाथ मंदिर था ।

(९) वामनवारजी–कोजरासे १० मील व पिंडवारा प्टे०से ४ मील । यहां मुख्य मंदिर श्री महावीरजीका १४वीं या १५वीं शताब्दीका है जिसको वामनवारजी कहते हैं। एक छोटे मंदिरपर

लेख है सं० १५१९ प्राग्वाट (पोड़वाड) वनिया वीरवातकका (वीरवाड़ा यहांसे १ मील) ।

(१०) वलदा-वामनवारजीसे ६ मील। यहां १४वीं वा १५वीं शताब्दीका जैन मंदिर है। मुख्य वेदीमें श्री महावीरस्वामीकी मूर्ति है सं० १६९७ है। मंदिर मूर्तिसे प्राचीन है। द्वारके आलेपर एक लेख है सं० १४८३ जेठ सुदी ७ गुणभद्रने अपने बुजुर्ग वलदेवने बनाए हुए मंदिरका जीर्णोद्धार किया ।

(११) कलार-सिरोहीसे उत्तरपूर्व ९ मील। यहां आदिनाथका मंदिर १५वीं शताब्दीका है १४ स्वप्न बने हैं। महाराणी सोई हुई हैं। लिखा है-महाराणी उसालादेवी चतुर्दशस्वप्नानि पश्यति।'

(१२) पालदी-सिरोहीसे उत्तरपूर्व १० मील । यहां सात स्तम्भोंपर लेख हैं सं० १२४८ आषाढ़ वदी १ शुक्र व दीवालके बाहर एक पाषाणपर है सं० १२४९ माघ सुदी १० गुरु महाराज श्री केल्हणदेव और उसके पुत्र जयलसिंहदेव ।

(१३) वागिन-पालोदीसे १ मील। २ जैन मंदिर श्री आदिनाथजीके हैं। एक बड़ा १२ या १३ शताब्दीका है। दो खंभोंपर लेख सं० १२६४के हैं। मुख्य मंदिरके द्वारपर है सं० १३५९ सामंतसिंहदेवके राज्यमें वाघसेनका दान हुआ।

(१४) उथमन-पालोदीके उत्तरपूर्व १॥ मील। यहां जैन मंदिर है, जिसमें १ सुन्दर संगमर्मरकी मूर्ति है। यहां आलेमें एक लेख सं० १२५१का है कि धनासवके पुत्र देवधरने अपनी स्त्री धारामतीके द्वारा श्री पार्श्वनाथके मंदिरको दान कराया।

(१५) लास-पालोदीसे उत्तर पश्चिम १० मील यहां २ जैन मंदिर हैं एक श्री आदिनाथजीका है ।

(१६) जावल-यहां १४वीं शताब्दीका श्री महावीरजीका जैन मंदिर है ।

(१७) कातन्द्री-मुख्य मंदिरमें एक लेख है कि वि० सं० १३८९ फागुण सुदी ८ सोमे सर्व संघने समाधिमरण किया । नाम दिये हुए हैं ।

(१८) उदरत-धन्धापुरसे २ मील । यहां एक जैन मंदिर है ।

(१९) जीरावल-रेवाधरसे उत्तर पश्चिम ९ मील । पर्वतके नीचे जैन मंदिर है जो नेमिनाथका प्रसिद्ध है । यह मूलमें पार्श्वनाथ मंदिर था । पुराना लेख सं० १४२१का व पिछला सं० १४८३ का ओसवाल बनिया विशालनगर व कल्वनगर ।

(२०) वरमन-देवधर और मनधारके मध्य सुकली नदीके पश्चिम एक प्राचीन नगर था । ग्रामके दक्षिण श्रीमहावीरस्वामीका जैन मंदिर सं० १२४२ का है ।

(२१) सिरोही या सिरणवा-पिंडवाड़ा स्टे० से १६ मील महाराव सैसमलने सन् १४२५ में वसाया । जैन मंदिर देरासरीके नामसे प्रसिद्ध है । चौमुखजीका मंदिर मुख्य है । जो वि० सं० १६३४में बना था ।

(२२) पिंडवाड़ा-यहां श्री महावीर स्वामीका जैन मंदिर सं० १४६९ का है ।

(२३) अजारी-पिंडवाड़ासे ३ मील दक्षिण । श्री महावीर स्वामीका जैन मंदिर । एक सरस्वतीकी मूर्तिके नीचे सं० १२६९ है ।

(२४) वसंतगढ़–अजारीसे ३ मील दक्षिण। यहां टूटे हुए जैन मंदिर हैं–एक तहखानेमें मूर्तियां मिलीं। एकपर लेख है सं० १५०७ राणा श्री कुंभकरण राज्ये वसंतपुर चैत्ये। यहां कुछ धातुकी मूर्तियां निकली थीं जो पिंडवाड़ाके जैन मंदिरमें हैं, एकपर सं० ७४४ है।

(२५) वासा–रोहड़ा ष्टे०से १॥ मील उत्तरपूर्व। यहां जगदीश नामका शिवालय है इसपर एक जैन मूर्ति है। यह पहले जैन मंदिर था।

(२६) कालागरा–वासासे २ मील। यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर था, अब पता नहीं है। एक लेख सं० १३००का मिला है। उस समय चंद्रावतीका राजा आल्हणदेव था।

(२७) कायद्रा–कीवरली स्टे०से ४ मील उत्तर। आबूके निकट। यहां प्राचीन जैन मंदिर है, चौतरफ जिनालय हैं। एकके ऊपर सं० १०९१ का लेख है। एक और प्राचीन जैन मंदिर था जिसके पत्थर रोहेड़ाके जैन मंदिरमें लगे हैं।

(२८) चंद्रावती-आबूरोड स्टे०से ४ मील दक्षिण। यह प्राचीन नगर था, दूर२ तक खंडहर हैं। यह परमार राजाओंकी राज्यधानी था। आबूके दिलवाड़ेके प्रसिद्ध नेमनाथ मंदिरके बनानेवाले मंत्री वस्तुपालकी स्त्री अनुपम देवी यहांके पोड़वाड़ महाजन गागाके पुत्र धरणिगकी पुत्री थी।

(२९) गिरवर–मधुसूदनसे करीब ४ मील पश्चिम। मूंगथलीसे १ मील मधुसूदन है। यहां टूटा हुआ जैन मंदिर है। विष्णु मंदिरका द्वार चन्द्रावतीसे लाया गया है, ऊपर जैन मूर्ति है।

(३०) दताणी–गिरवरसे ६ मील उत्तरपश्चिम। यहां १ जैन मंदिर है।

(३१) हणाद्री–आबूके पश्चिम पर्वतसे ११ मील। वस्तु-पालके मंदिरके शिलालेखोंमें सं० १२८७में इस गांवका नाम हंडा-उद्रा आया है। यहां १ जैन मंदिर है।

(३२) सणापुर–हणाद्रेसे १२ मील उत्तरपूर्व, यहां जैन मंदिर १२वीं शताब्दीका है।

(३३) पालड़ीगांव–सिरोहीसे १२ मील उत्तरपूर्व। जैन मंदिर है उसमें चौहान राजा केल्हणदेवके कुंवर जैतसिंहका लेख सं० १२३९का है।

(३४) वागीण–पालड़ीसे २ मील। जैन मंदिरमें लेख चौहान रा० सामंतसिंह सं० १३५९।

(३५) सीवरा–सिरोहीसे १२ मील पूर्व झालोहीसे ३मील उत्तर। श्री शांतिनाथका जैन मंदिर, लेख सं० १२८९ देवड़ा विजयसिंह।

(३६) आबू पर्वत–आरावला (अर्वली) सिरोहीसे दक्षिण पूर्व। ऊंचाई ५६५० फुट व समान भूमिसे ४००० फुट ऊंचा, ऊपर लम्बा १२ मील, चौड़ा करीब ३ मील। आबूरोड़ स्टेशनसे १८ मील सड़क ऊपर है। यहां दिलवाड़ामें श्री जैन प्रसिद्ध मंदिर श्री आदिनाथ और नेमनाथके हैं। इनमें पुराना व सुन्दर विमलशाह पोड़वाड़का बनवाया विमलवसही नामका श्री आदि-नाथ मंदिर है जो वि० सं० १०८८में समाप्त हुआ था। उस समय आबूपर परमार वंशका राजा धंधुक राज्य करता था। यह

गुजरातके सोलंकी राजा भीमदेवका सामंत था। कुछ अनवन होनेसे धंधुक रूठकर मालवाके राजा भोजके पास चला गया तब भीमदेवने विमलशाह जैनको दंडनायक (सेनापति) नियत कर आबू भेजा, इसने धंधुकको बुलाकर उसका मेल भीमदेवसे करा दिया। तब धंधुकसे दिलवाड़ाकी भूमि लेकर विमलशाहने यह जिन मंदिर बनवाया। इसमें मुख्य मूर्ति श्री रिषभदेवकी है जिसके दोनों तरफ कायोत्सर्ग मूर्तियें हैं। सामने हस्तिशाला है, वहीं विमलशाहकी पाषाण मूर्ति अश्वारूढ़ विराजमान है। हस्तिशालामें दस हाथी हैं–जिनमें ६ हाथियोंको सं० १२०९में फागुण वदी १०को नेढ़क, आनंदक, पृथ्वीपाल, धीरक, लहरक, मीनकने बनवाया था जो महामात्य थे। एक हाथीको परमार ठाकुर जगदेवने, 'एकको महामात्य धनपालने वि० सं० १२३७ आषाढ़ सुदी ८को बनवाया। १को महमात्त्य धवलकने बनवाया। (नोट–इसमें ९ हाथीके बननेका वर्णन है।) हस्तिशालाके बाहर परमारोंसे आबूका राज्य छीननेवाले चौहान महाराव लुंढा (लुंभा) के दो लेख वि० सं० १३७२ और १३७३के हैं।

इस मंदिरके १ भागको मुसल्मानोंने तोड़ा था तब लल्ल और बीडाड साहुकारोंने सं० १३७८ चौहान महाराणा तेजसिंहके राज्यमें जीर्णोद्धार कराया था और तब एक ऋषभदेवकी मूर्ति स्थापित की। दीवारमें एक लेख सं० १३५० माघ सुदी १ बघेल (सोलंकी) राजा सारंगदेवके समयका है।

(२) लूणवसही–यह नेमनाथका मंदिर है। इसको वस्तुपालका और तेजपाल मंदिर भी कहते हैं। ये दोनों वस्तुपाल

तेजपाल अनहिलवाड़ पाटनके पोड़वाड़ महाजन अश्वराज (आस-राज) के पुत्र थे। धोलकाके सोलंकी राणा (विघेलवंशी) वीर-धवलके मंत्री थे। तेजपालने अपने पुत्र लूणसिंह व स्त्री अनुपम देवीके हितार्थ करोड़ों रुपये लगाकर वि० सं० १२८७ में यह मंदिर वनवाया। इन मंदिरोंकी छतोंमें जैन कथाओंके भी चित्र हैं। इस नेमनाथ मंदिरोंमें दो वड़े शिलालेख हैं। एक ७४ श्लोकोंका काव्य धोलकाके राणा वीरधवलके पुरोहित तथा कीर्ति-कौमदी, सुखोत्सव आदि काव्योंके कर्ता कवि सोमेश्वर रचित है। इसमें वस्तुपाल तेजपालके देशका वर्णन, अर्णो राजासे वीरधवल तक वघेल राजाओंकी नामावली, आवूके परमार राजाओंका हाल व मंदिरकी प्रशंसा है।

दूसरा लेख गद्यमें मंदिरके वार्षिकोत्सव आदिके वर्णनमें है। इसमें अनेक ग्रामोंके महाजनोंके नाम हैं जो प्रतिवर्ष उत्सव करते थे। ५२ जिनालय और हैं। यहां शिल्पके नमूने दो सुन्दर आले हैं इनको देवराणी जिठाणीके आले कहते हैं। उनको तेजपालने अपनी दूसरी स्त्री सुहड़ादेवीके श्रेयके लिये बनवाया था। यह सुहड़ादेवी पाटनके मोड़ महाजन ठाकुर (ठक्कुर) जाल्हणके पुत्र ठाकुर आसाकी पुत्री थी। ऐसा उनपर खुदे हुए लेखोंसे प्रगट है—उस समय गुजरातमें पोड़वाड़ और मोढ़ जातिके महाजनोंमें परस्पर विवाह होता था। दोनों आलोंपर सदृश नकल है। एककी नकल इस भांति है:—

“ ॐ संवत १२९७ वर्षे वैशाख सुदी १४ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय चंडपचंड प्रसाद महं (महंत) श्री सोमान्वये महं श्री असराज

सुतमहं श्री तेजःपालेन श्रीमत्पत्तन वास्तव्य मोढ़ जातीय ठ० जाल्हण सुत ठ० आससुतायाः ठक्कुराज्ञी संतोषाकुक्षि संभूताया महं श्री तेजःपाल द्वितीय भार्या मह श्री सुहड़ादेव्याः श्रेयोर्थं.... (आगेका भाग टूट गया है)।

इस मंदिरकी हस्तिशालामें संगमर्मरकी १० हथनियां हैं जिनपर १० सवारोंकी मूर्तियां थीं, अब नहीं रही हैं। इस संबंधी वंशवृक्ष नीचे प्रकार है—
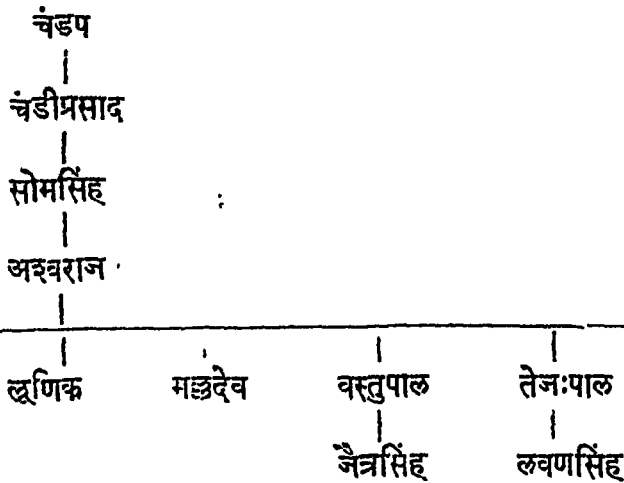
इन हथनियोंके पीछेकी पूर्व भीतिमें १० आले हैं उनमें इन १० पुरुषोंकी स्त्रियोंकी मूर्तियें पत्थरकी खड़ी हैं, हाथोंमें पुष्पमाला हैं। वस्तुपालके सिरपर पाषाणका छत्र है। मूर्तिके नीचे प्रत्येक पुरुष व स्त्रीका नाम है। पहले आलेमें चार मूर्तियां खड़ी हैं वे आचार्य उदयसेन, विजयसेन हैं व तीसरी मूर्ति चंडप व चौथी चंडपकी स्त्री चामलदेवीकी है। उदयसेन विजयसेनके शिष्य थे। यह नागेन्द्रगच्छके साधु व वस्तुपालके कुल गुरु थे। मंदिरजीकी

प्रतिष्ठा विजयसेन हीने कराई थी। इस अपूर्व मंदिरको शोभन नाम शिल्पीने बनवाया था। मुसल्मानोंने इसको भी तोड़ा तब पेथड़ संघपतिने जीर्णोद्धार कराया। लेख स्तम्भपर है संवत नहीं है।

वस्तुपालके मंदिरसे थोड़े अंतरपर भीमासाह (या भैंसासाह) का बनवाया हुआ मंदिर है। इसमें १०८ मन तौलकी सर्व धातुकी श्री आदिनाथकी मूर्ति है जो वि०सं० १५२५ फागुण सुदी १को गुर्जल श्रीमाल जातिके मंत्री मंडनके-पुत्र पुत्री सुन्दर तथा गंदाने स्थापित की। इसके सिवाय दो मंदिर श्वे० व दो मंदिर दिगंबरी हैं। आबूके मंदिर संगमर्मरकी अपूर्व खुदाईके हैं, करोड़ों रुपयोंकी लागतके हैं। जगतभरमें प्रसिद्ध हैं।

(३७) अचलगढ़—दिलवाड़ासे ५ मील उत्तरपूर्व। यहां सोलंकी राजा कुमारपाल कृत शांतिनाथका जैन मंदिर है उसमें तीन मूर्तियां हैं। एक पर वि० सं० १३०२ है। पर्वतपर चढ़के कुंथुनाथका जैन मंदिर है। इसमें पीतलधातुकी मूर्ति सं० १५२७की है और ऊपर जाके पार्श्वनाथ, नेमनाथ व आदिनाथके मंदिर हैं। आदिनाथका मंदिर चौमुखा है व प्रसिद्ध है नीचे व ऊपर चार२ पीतलकी बड़ी मूर्तियां हैं। कुल १४ मूर्तियां हैं तौल १४४४ मन है। इनमें सबसे पुरानी मूर्ति मेवाड़ राजा कुंभकर्ण (कुंभ) के समय वि० सं० १५१८की प्रतिष्ठित है।

(३८) ओरिया—अचलगढ़से २ मील उत्तर। इसे कनखल तीर्थ कहते हैं। यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है। एक ओर पार्श्वनाथ व दूसरी ओर श्री शांतिनाथ हैं।

---

(७) जैपुर राज्य--(जैपुर रेजिडेन्सी)।

इसमें राज्य जैपुर, किशनगढ़ व लावां शामिल हैं। इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें बीकानेर, पंजाब; पश्चिममें जोधपुर, अजमेर; दक्षिणमें शाहपुर, उदयपुर, बुन्दी, ग्वालियर; पूर्वमें करौली, भरत-पुर, अलवर। यहां १६४५६ वर्गमील स्थान है।

जैपुर राज्य—यहां १५५७९ वर्गमील जगह है। यहां राम-चंद्रके वंशज कछवाहा राजपूत राज्य करते हैं। पहला राजा ग्वालियरका वज्रदामन था। इसने जैपुर राज्यको कन्नौज राज्यसे ले लिया, आप स्वतंत्र हो गया। ऐसा ग्वालियरके लेख सन् ९७७से प्रगट है। पहले आंवेरमें राज्यधानी थी, सवाई जैसिंह द्वि० आंवे-रमें सन् १६९९में हुआ। इसका मरण सन् १७४३में हुआ। इसने राज्यधानी आंवेरसे जैपुरमें सन् १७२८में बदली। यह राजा वैज्ञानिक ज्ञान और कलाके लिये प्रसिद्ध था। इसने बहुतसे गणितके ग्रंथ संस्कृतमें उल्था कराए और ज्योतिषचक्रके दृश्यके मकान जैपुर, दिहली, बनारस, मथुरा, उज्जैनमें बनवाए जिसमें इसने डी० ला हाइर अंग्रेजके ज्योतिषके हिसाबको शुद्ध कर दिया। यह राजा एक अपूर्व विद्वान् था।

पुरातत्व—आंबेर, बैराट, चाटसू, दौसा, व रणथंभोरके किलेमें हैं।

यहां ७ फीसदी जैनी हैं। १९०१ में ४४६३० थे।

यहांके मुख्य स्थान

(१) आम्बेर—जैपुरसे उत्तरपूर्व ७ मील। यह बहुत प्राचीन जगह है। यहां सन् ९५४का लेख मिला है। कई जैन मंदिर हैं।

(२) वैराट—ता० वैराट—जैपुरसे उत्तरपूर्व ४२ मील। बहुत प्राचीन स्थान है। यहां महाराज अशोक (सन् ई०से २५० वर्ष पूर्व) के दो शिलालेख हैं। नगरके १ मीलकी हद्दमें बहुतसे तांबेके सिक्के मिले हैं। यहां पांच पांडव अपने परदेश भ्रमणके समय ठहरे थे। यह प्राचीन मत्स्य प्रान्तकी राज्यधानी थी। चीनी यात्री हुइनसांग यहां सन् ६१४ में आया था। यहां एक पार्श्वनाथका दि० जैन मंदिर है। यहां एक मूर्तिपर शाका १५०९ हीरविजय लिखा है।

(३) चाटसू या चाकसू—चादसू ष्टे० से २ मील प्राचीन नगर है। सन् ई० से ५७ वर्ष पहले प्रसिद्ध विक्रमादित्यका स्थान था। यहां तांबेकी भीत थी। इससे इसको ताम्वा नगरी कहते हैं। यहां सेसोदिया जातिके राजा राज्य करते थे।

(४) झूंझनू—शेखावाटीमें, जैपुरसे उत्तर पश्चिम ९० मील। यहां १०.०० वर्षका प्राचीन जैन मंदिर है।

(५) खंडेला—निजामत तोरावाटीमें जयपुरसे उत्तर पश्चिम ५५ मील। स० नोट—यह खंडेलवाल जातिकी उत्पत्तिका स्थान है।

(६) नरैना—निजामत सांभर। यहां दादूपन्थका स्थापक दादू अकबर बादशाहके समयमें रहता था। यह सन् १६०३में मरा है। इसका मरण स्थान यहां एक झीलके पास है। इसकी पुस्तकका नाम वाणी है।

(७) सांगानेर—जैपुरसे ७ मील। यहां संगमर्मरके जैनियोंके बढ़िया मंदिर हैं।

(८) जैपुर शहर—वर्तमानमें जैपुरमें अनुमान १५० के दि० जैन मंदिर व चैत्यालय हैं।

(९) आरसपहाड़ व ग्राम—सीकर राज्यसे ६ मील जाकर २ मील ऊंची पहाड़ी है। सड़क पक्की गई है। नीचे ग्राम है, दि० जैन मंदिर है, ५–६ घर हैं। हम ता० १७ दिस० को पर्वतपर गए थे। ऊपर चढ़कर २ मील और जानेपर मनोहर पाषाणके खुदे हुए खंडहर मिलते हैं जिनमें बहुत देवी देवताओंके चित्र हैं। कहते हैं यहां ८४ मंदिर थे। देखनेसे मालूम होता है कि इनमें कई जैनों के भी होंगे। यद्यपि पर्वतपर हमें कोई जैन मूर्तिका चिह्न नहीं मिला परन्तु पूछनेसे मालूम हुआ कि यहांपर जैन मूर्तियां थीं जिनमेंसे कई इंग्रेज लोग लेगए, दो मूर्तियां यहींकी गई हुई १ चौवीसी व १ और दि० जैन अखंडित सीकरके बड़े जिन मंदिरजीमें स्थापित हैं तथा आरसग्राममें एक भैरोंका स्थान है वहांपर दो हाथ ऊंची पद्मासन मूर्ति तीन छत्र इन्द्र आदि सहित विराजित है। मुखको आगे लगाकर व सेंदुर चिपकाकर भैरोंजीके सदृश कर लिया गया है। ३०० वर्षका एक शिव मंदिर है व एक भैरोंका है। ये मंदिर जो टूटे हुए हैं वे अवश्य बहुत प्राचीन होंगे। एक संस्कृत शिला लेख है जिसमें संवत ग्यारहवीं शताब्दीका प्रारम्भ है।

(८) किशनगढ़ राज्य।

इस राज्यको महाराज किशनसिंहने सन् १६६८में स्थापित किया।

(१) रूपनगर–सलेमाबादसे उत्तरपूर्व ६ मील। इस नगरके दक्षिण १॥ मील ३ मानस्तम्भ जैनियोंके स्मारक हैं। सबमें लेख है, मध्यमें जैन तीर्थंकरकी मूर्ति है। इस मूर्तिके नीचे लेख है–सं० १०१८ जेठसुदी २ मेघसेनाचार्यकी निषेधिका उनके मरणके पीछे उनके शिष्य विमनसेन पंडितने बनाई (लेख नं० २५४०)। तीसरे स्तम्भका लेख है कि पद्मसेनाचार्य सं० १०७६ पौष सुदी १२को स्वर्ग प्राप्त हुए। इस स्तम्भको किसी चित्रनन्दनने स्थापित किया (नं० २५४२)।

(२) अराई–किशनगढ़से दक्षिणपूर्व १४ मील। यहां दिगंबर जैनियोंकी मूर्तियां १२वीं शताब्दीकी भी मिली हैं।

---

(९) बूंदी (हाड़ौती या टोंक एजन्सी)

हाड़ौती एजन्सीमें बून्दी टोंक शाहपुरा शामिल हैं। यहां स्थान ९१७८ वर्गमील है।

बूंदी–की चौहद्दी है–उत्तरमें जैपुर, टोंक; पश्चिममें उदयपुर, दक्षिणपूर्व कोटा। यहां २२२० वर्गमील स्थान है।

केशरिया पाटन–चम्बलसे उत्तर कोटासे १२ मील। यह प्राचीन स्थान है। यहां सबसे पुराना शिलालेख एक सतीके मंदिरमें है जो नदी तटपर है। इसपर सन् ३९ और ९३ है (नोट–यहां जैन मंदिर भी है)।

(१०) टोंक।

इसकी चौहद्दी है—उत्तरमें इन्दौर, पश्चिममें झालावाड़, दक्षिण व पूर्व ग्वालियर। यहां स्थान २५५३ वर्गमील—यहां १९ सैकड़ा जैनी हैं। खास टोंकके जैन मंदिरमें ११ वीं शताब्दीका लेख है।

सिरोंजनगर—टोंकनगरसे दक्षिण पूर्व २०० मील। कुथोरा स्टेशनसे जाया जासक्ता है। पुराने कालमें यह बड़ा नगर था। दक्षिणसे आगरा जाते हुए मार्गमें पड़ता था—व्वंश प्राप्त सुन्दर मकान हैं। टेवरनियर इंग्रेज यात्री यहां १७वीं शताब्दीमें आया था वह यहांका हाल लिखता है कि यह नगर व्यापारी और कारीगरोंसे भरा हुआ है। तनजेब और छींटके लिये प्रसिद्ध है। यहांकी तनजेबें इतनी महीन बनती थीं कि पहननेसे सर्व बदन दिखता था। ये सब तनजेबें खास बादशाह और उसके दरबारियोंके लिये दिहली भेजी जाती थीं। अब यह कारीगरी नष्ट हो गई है।

---

(११) भरतपुर राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें गुड़गांव, पश्चिममें अलवर, दक्षिण पश्चिम जैपुर, दक्षिणमें जैपुर और धौलपुर, पूर्वमें आगरा। यहां १९८२ वर्गमील स्थान है।

यहां पुरातत्व बयाना, कामा और रूपवासमें है।

(१) वयाना—प्राचीन नाम श्रीपथ है। दो पुराने हिन्दू मंदिर हैं जिनको मुसल्मानोंने मसजिद बना लिया है। हरएकमें संस्कृतमें शिलालेख हैं—एकमें है सन् १०४३ जादोवंशी राजा विजयपालने यहां दक्षिण पश्चिम २ मीलपर विजयगढ़का किला बनवाया जिसको विदलगढ़ किला कहते हैं। किलेमें पुराना मंदिर है उसके लाल खंभेपर एक लेख राजा विष्णुवर्द्धनका है जो सन् ३७२में समुद्रगुप्तके आधीन था। राजा विजयपाल जिसकी संतान करौलीमें राज्य करती है ११वीं शताब्दीमें महमूद गजनीके भतीजे मसूद सालारसे मारा गया। यहां जैन मंदिर हैं जिसमें नरोलीसे निकली हुई १० दिगम्बर जैन मूर्तियां विराजित हैं, ये कूप खोदते निकली थीं। वि० सं० ११९३ है। जो चिन्ह स्पष्ट हैं उनसे झलकता है कि वे ऋषभदेव, संभवनाथ, पुष्पदंत, विमलनाथ, कुंथनाथ, अरहनाथ, नेमिनाथकी मूर्तियां हैं।

(२) कामा—भरतपुरसे ३६ मील उत्तर। यहां पुराना किला है। हिंदू मूर्तियोंके बहुतसे खण्ड एक मसजिदमें हैं जिसे चौरासी खंभा कहते हैं। हरएक खंभेपर कारीगरी है। एकपर संस्कृतमें लेख है। इसमें सूरसेनोंका वर्णन है। ता० नहीं है। शायद ८वीं शताब्दीका हो। एक विष्णुके मंदिर बनानेका वर्णन है। सं० नोट—यहां जैन मंदिर है व संस्कृतका प्राचीन शास्त्र भंडार है।

[१२] कोटा (कोटा झालावाड एजन्सी)

कोटा-इसकी चौहद्दी है। उत्तरमें जैपुर, पश्चिममें बूंदी, उदयपुर, दक्षिण-पश्चिम रामपुर भानपुर, इंदौरका झालावाडा, दक्षिणपूर्व खिलचीपुर, राजगढ़। यहां ५६८४ वर्गमील स्थान है।

पुरातत्त्व-सबसे प्राचीन चौरी और मुकुन्द द्वारापर हैं जो ५वीं शताब्दीके हैं।

(१) कंसवा ग्राम-प्राचीन नाम कनवाश्रम। कोटासे दक्षिण पूर्व ४ मील। सन् ७४० का लेख मौर्यवंशका है जिसमें धवल और शिवगन राजाओंका वर्णन है।

(२) रामगढ़-मंगरोलसे पूर्व ६ मील। यहां बहुतसे पुराने जैन मंदिर हैं।

(३) वारां-यहां श्री कुन्दकुन्दाचार्य जैनाचार्यकी पादुका हैं।

(४) मऊ-प्राचीन नगर। झालरापाटन शहरसे दक्षिणपूर्व ११ मील। यह चन्द्रवती नगरसे दूसरे नं० पर था। पाव मील तक सब तरफ प्राचीन मकान हैं।

(५) मुकंद्वारा-कोटासे दक्षिण पूर्व ३२ मील। १५०० फुट ऊंची मुकुंद्वारा पहाड़ीपर ग्राम। यहां प्राचीन बड़े२ मकान हैं जो सन् ई० ४५० के करीबके होंगे। १० फुट ऊंचे खुदे हुए खंभे हैं।

(१३) झालावाड़ा राज्य ।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तर पूर्व कोटा, पश्चिम रामपुर । भानपुर, आगरा; दक्षिण पश्चिम सीतामऊ, जावरा; दक्षिण देवास, पूर्वमें घिरावा । यहां ८१० वर्गमील स्थान है ।

चंद्रावती—झालरापाटन नगरके निकट अति प्राचीन नगर चन्द्रावती है। वर्तमान नगरके दक्षिण ओर है । कहते हैं इस नगरको मालवाके राजा चन्द्रसेनने वसाया था जो अवुलफजलके कथनानुसार प्रसिद्ध विक्रमादित्य राजाके पीछे राजा हुआ था। कनिंघम साहव कहते हैं कि यहां सन् ई०से ५००से १००० वर्ष पूर्वके प्राचीन ताम्बेके सिक्के मिले हैं । चन्द्रभागा नदीके तटपर जो ध्वंश हैं उनमें सीतलेश्वर महादेवका वहुत वड़ा मंदिर सन् ६००का है। इन ध्वंसोंके उत्तर सन् १७९६में नया नगर वसाया गया। इसमें एक जैन मंदिर है जो पहले पुराने नगरमें सामिल था। सं० नोट—झालरापाटण नगरमें कई जैन मंदिर हैं व श्रीशांतिनाथकी दर्शनीय मूर्ति व कई दि० जैन मुनियोंके समाधिस्थान हैं ।

---

[१४] बीकानेर राज्य ।

चौहद्दी है—उत्तर पश्चिम वहावलपुर; दक्षिण पश्चिम जैसलमेर, दक्षिण—माड़वाड़, दक्षिण पूर्व जैपुर शेखावाटी, पूर्वमें लाहोर-हिसार।

यहां २३८११ वर्गमील स्थान है । इसको सन् १४६५में माड़वाड़के राजा बीकाने वसाया था। यहां चार शदी जैनी हैं। कुल संख्या १९०१ में २३,४०३ थी ।

(१) वीकानेर शहर–यहां जैनियोंके कई उपासरे व १९९ मंदिर हैं जिनमें बहुतसे संस्कृतके लेख हैं।

(२) रेणी–वीकानेरसे उत्तरपूर्व १२० मील। यहां बहुतसे सुन्दर जैन मंदिर हैं जिनमें एक मंदिर बहुत मजबूत कारीगरीका सन् ९४२ का है।

(१५) अलवर राज्य।

इसकी चौहद्दी है–उत्तरमें गुड़गांव, उत्तर पश्चिममें नारनौल, पश्चिम दक्षिणमें जैपुर। पूर्वमें भरतपुर। उत्तरपूर्व गुड़गांव। यहां ३१४१ वर्गमील स्थान है।

(१) राजगढ़ नगर–अलवरसे २२ मील दक्षिण। रेलवे टेशनसे १ मील। यहांसे पूर्व आधमील पर एक पुराने नगरके अवशेष हैं जो दूसरी शताब्दीमें राजपूतोंकी वरगूजर जातिके राजा वाघसिंह द्वारा वसाया गया था। बघेला सरोवर अभीतक प्रसिद्ध है। इस सरोवरके तटपर तीन पुरुषाकार बड़ी जैन मूर्तियें नग्न खड़े आसन हैं। एक मंदिरके खुदे हुए द्वारके दो भाग पड़े हैं व कुछ खंडित जैन मूर्तियां हैं। जब नया राजगढ़ बनाया था तब ये मूर्तियां खुदाईमें निकली थीं।

(२) पारनगर–अलवरसे ८ मील पश्चिम। यह वरगूजर राजपूतोंकी पुरानी राज्यधानी है। यहां नीलकंठ महादेवका मंदिर है जिसको अजयपालने सन् ९५३ में बनाया था। एक ध्वंश मंदिरमें एक विशाल जैन मूर्ति १३ फुट ऊंची है जिसके ऊपर २॥ फुटका छत्र है, दो हाथी रक्षा कर रहे हैं।

(१६) अजमेर (अजमेर–मरवाड़ा)।

अजमेरकी चौहद्दी है–उत्तर पश्चिममें जोधपुर, दक्षिणमें उदयपुर, पूर्वमें जयपुर। मड़वाड़ाकी चौहद्दी है–उत्तर पश्चिम जोधपुर, अजमेर, दक्षिणमें उदयपुर, पूर्वमें अजमेर।

२७११ वर्गमील स्थान है।

अजमेरको चौहान राजा अजने बसाया था। अजयपालके बनाए मंदिर सन् ११००के हैं। चौहान लोग सन् ७५०के अनुमान अहिछत्रपुरसे राजपूतानामें आए। पहली राज्यधानी सांभर थी। यहां वघेरा और सकराइनमें पुरानी इमारतें हैं। यहां १८९१ में २६९३९ जैनी थे जो १९०१ में १९९२२ रह गए। सं० नोट–अजमेरमें सेठ मूलचन्द सोनीकी बनाई नसियां दर्शनीय है व और भी जैन मंदिर हैं। सन् १९०१ में यहां जैनी २४८३ थे।

राजपूतानामें सन् १९०१ में ३२ सैकड़ा दिगम्बरी ४५ सैकड़ा श्वे० मूर्तिपूजक शेष स्थानकवासी जैन थे।

नं० १६का अवशेष ।

राजपूताना म्यूजियम, अजमेर ।

इसकी रिपोर्टें सन् १९०८ से १९२४ तक जो देखनेमें आई उनसे नीचे लिखे समाचार विदित हुए—

सन १९०८–९ कटरा–जि० भरतपुरसे एक दि० जैन मूर्ति श्री महावीरस्वामी सं० १०८१ मस्तकरहित, एक आसन सं० १०११ व दूसरा आसन प्राप्त हुए।

मुंगथला–जि० टोंकसे एक छोटी पीतलकी जैन मूर्ति सं० १५७२ मिली।

नीचे लिखे लेख नकल किये गए—

शिरोही राज्य-(१) पिंडवारा श्री महावीर मंदिरमें–श्री वर्द्धमानस्वामीकी मूर्ति सं० १४६५ राजा सोहन (देवरसोभा) सिरोहीके राज्यमें।

(२) झरोली–श्री शांतिनाथ मंदिर–राजा केल्हनकी कन्या व राजा धारावर्षकी रानी श्री रंगदेवीने सं० १२५५में मंदिरको भूमि दान दी तथा देवर विजयसिंहके समयमें अन्न दिये।

(३) मुंगथला–जैन मंदिरमें एक स्तम्भपर राजा वीरदेव कृत सं० १२१६ व राजा करणदेवके पुत्र राजा विशालदेवने दान किया सं० १४४२।

(४) कपदरन–जैन मंदिरकी मूर्तिपर लेख, अज्जाके पुत्र गुणाढ्य द्वारा सं० १०९१।

(५) पालरी–एक मूर्तिपर केल्हणदेवके पुत्र राजा जैतसिंह

सं० १२३९ (?) अन्यपर नड्लके राजा सावंतसिंह सं० १२५९ व एकपर सं० १२५१ ।

सन् १९१०-११-सिरोही राज्य-(१) दम्मानी-यह ग्राम आबूजीके नेमिनाथ मंदिर या लूणवसहीके आधीन है। यहां एक पाषाण पर लेख है। तेजपालकी स्त्री अनूपमदेवीके कुशलार्थ महनसीह व अन्योंने दान किया सं० १२९६ ।

(२) कालागरा-चन्द्रावतीके महाराजाधिराज आल्हनसिंहके राज्यमें सं० १३०० खेता आदिने श्रीपार्श्वनाथ मंदिरको दान किया।

सन् १९११-१२ बारली-(अजमेर) के भुलतामाताके मंदिरमेंसे एक स्तंभका भाग पाषाण मिला जिसके अक्षर सन् ई०से पूर्वके हैं। पहली लाइनमें है "वीराय भगवते", दूसरीमें है "चउरासीवसे"। चौथीमें है "रामनीविट्ठा माज्झमिके"। इससे प्रगट है कि यह किसी जैन मंदिरका है। श्री महावीर संवत ८४ है। माज्झमिकसे मतलब माध्यमिकसे है जो अब नगरी कहलाती है व जो चित्तौरसे उत्तर ८ मील है। यह लेख अजमेर जिलेमें सबसे प्राचीन मिला है।

भरतपुर राज्य गोवर्द्धन-से एक जैन मूर्तिका आसन मिला है जिसपर जैनाचार्य सुरत्नसेन और यशःकीर्ति लिखित है।

टांटोटी-राज्य (अजमेर) टांटोटीसे श्री शांतिनाथकी पद्मासन मूर्ति २॥ फुट ऊंची मिली है, नव्यमें आदिनाथजी भी हैं।

बघेरा राज्य-बघेरासे करीब २ फुट ऊंची कायोत्सर्ग श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति मस्तकरहित मिली है व एक पाषाण मिला है जिस पर ८ तीर्थंकर अंकित हैं और एक जैन मूर्तिका आसन मिला है।

शिलालेख ।

सिहोर राज्य-(१) गटयाली-एक जैन मंदिरके स्तम्भमें-घनियाविहार नामके जैन मंदिरको मामावती नामका खेत नोनाने सं० १०८९में दान किया ।

(२) नांदिया-जैन मंदिरके स्तम्भपर इस स्तम्भको सं० १२९८में भीमने अपने पिता रौरकमणके हितार्थ स्थापित किया जो रौर पुनसिंहके पुत्र थे ।

सन् १९१२-१३ ।

झालरापाटन शहर-सात सलाकी पहाड़ीपर स्तम्भ हैं (१) समाधि स्थान सं० १०६६ नेमिदेवाचार्य और बलदेवाचार्य । (२) सं० ११६६ समाधि श्रेष्ठी पापा। (३) सं० ११७० समाधि श्रेष्ठी सांधला, (४) सं० १२९९ मुलसंघ देवसंघ (लेख अस्पष्ट)।

राज्य गंगधार-जैन मूर्तियोंपर नीचेके लेख हैं ।

(१) सं० १३३० कुम्भके पुत्र सा कादुआ द्वारा ।

(२) सं० १३९२ सा आह्दके पुत्र देदा द्वारा ।

(३) सं० १५१२-श्री अभिनंदन मूर्ति भंडारी गजा द्वारा।

(४) सं० १५२४ श्रीश्रेयांसमूर्ति जयताके पुत्र श्रावक मंडन,,

सन १९१४ भरतपुर बयाना-यादव राजा विजयपाल करौलीका एक स्तंभ मिला है । इसपर काम्पकगच्छके जैन श्वेतांबर आचार्य विष्णुसूरि और माहेश्वरसूरीके नाम हैं । सं० ११०० में माहेश्वरसूरीकी समाधि हुई ।

मेवाड-अहार-जैन मंदिरके आलेमें-जिसको नावन नेवरान कहते हैं-गुहिलराज नरवाहाके समयका अनुमा· · १० और १०३४ का लेख है ।

सन् १९१५। नीचे प्रकार जैन मूर्तियें मिलीं—

डूंगरपुर राज्य वरोड़ासे—

(१) जैन मूर्ति १। फुट ऊंची मस्तक रहित सं० १२ (XX)

(२) ,, १। फुट ऊंची सं० १२६४

(३) ,, मस्तक रहित १ फुट सं० १७१३

(४) ,, १ फुट सं० १७३० मस्तक रहित

(५) ,, ||| फुट सं० १६३२ ,,

(६) ,, ||| फुट सं० १६५४ ,,

(७) ,, १। फुट सुमतिनाथ सं० १६५४

(८) ,, १ फुट सं० १६(XX)

(९) ,, १। फुट सं० १६५०

(१०) ,, ,, पार्श्वनाथ मस्तक रहित संवत १५७३

(११) दि० जैन मूर्तिका भाग १। फुट।

वांसवाड़ा राज्य—कलिंजरासे—

(१) दि०जैन मूर्तिका निम्न भाग सं० १६४०

(२) ,, ,, चंद्रप्रभुका ,, सं० १६२५

(३) ,, ,, सुमतिनाथ मस्तकरहित सं० १६४८

(४) ,, ,, श्रेयांसनाथ ,, सं० १६४८

तलवाड़ासे—(१) दि०जैन मूर्ति कायोत्सर्ग १। फुट सं० ११३०

(२) ,, ,, २||| ,, सं० ११३७

(३) ,, ,, ३ ,,

डूंगरपुर राज्य वरोड़ासे—मूर्ति पार्श्वनाथ सं० १६६५।

शिलालेख नीचे प्रमाण लिखे गए।

वांसवाड़ा—अरथूणाके जैन मंदिरमें लेख सं० ११५९ परमार राजा चामुंडराजके राज्यमें।

डूंगरपुर आंत्री—के जैन मंदिरकी भीतमें सं० १५२५ डूंगरपुरके रावल सोमदासके समयमें।

सन् १९१६—

डूंगरपुर राज्य ऊपरगांव—जैन मंदिरकी भीतमें लेख, मंदिर बनवाया प्रल्हादने जो डूंगरपुरके रावल प्रतापसिंहका मंत्री था सं० १४६१।

सन् १९१७—

वांसवाड़ा राज्य—नोगमा—(१) श्रीशांतिनाथजीके जैन मंदिरकी भीतपर १ लेख सं० १५७१ महाराजाधिराज उदयसिंह डूंगरपुरके समयमें—श्री शांतिनाथजीके मंदिरको हूमड़ श्रीपाल और उसके भाई राया, मांका, रुड़ा, भन्ना, लाड़का और वीर दासने बनवाया।

(२) एक स्मारक स्तम्भपर अंकित—सन् १५३७ समाधि जैन गुरु डूंगरपुरके राजाधिराज सोमदासके समयमें।

सन् १९१८—नीचे लिखे लेख जाने गए।

उदयपुर केलवा—सीतलनाथजीके मंदिरमें सं० १०२३।

वांसवाड़ा अरथूणा—(१) गोदीजीके जैन मंदिरके आलेमें श्री मुनिसुव्रतनाथ मूर्ति सं० ११५५।

(२) जगाजी तलेसराके जैन मंदिरमें पार्श्वनाथजीकी मूर्तिपर सं० १६९९ उकेश जातीय साहजीता तलेसराके।

वांसवाड़ा—राजनगर—राजसमुद्र झीलके ऊपर पहाड़ीपर

चतुर्मुख जैन मंदिरमें श्री रिषभदेवकी मूर्तिपर सं० १७३२, जगतसिंहके पुत्र महाराणा राजसिंहके राज्यमें सूरपुरिया ओसवाल साह दयालसाहने मंदिर बनवाया।

सन् १९१९–

अजमेरके अढ़ाई दिनके झोपड़ेसे एक जैन मूर्तिका मस्तक प्राप्त हुआ। नीचे लिखे लेख जाने गए–

अलवरराज्य–अजवगढ़–(१) दि० जैन मंदिरकी मूर्तिके आसनपर सं० ११७० श्रावक अनंतपाल।

(२) श्री चंद्रप्रभुकी पीतलकी मूर्तिपर उसी मंदिरमें सं० १४९३, मूर्ति स्थापित श्रीमाल जातीय साह करण भा० कामलदेके पुत्र साहनवेंदा भा० अमकू इनके पुत्र भीमासिंह और खेतानी तपगच्छीय रत्नप्रभसूरिके उपदेशसे।

अलवर–धर्मशाला–पश्चिम द्वारपर संभवनाथजीकी जैन मूर्ति सं० १५१०, गोपाचल (ग्वालियर)के राजाधिराज डूंगरसिंहदेवके राज्यमें उकेश जातीय पंचालौत गोत्र भंडारी देवराज भा० देल्हानादेके पुत्र गंजरीनाथ और उसकी स्त्री रूपाईने खरतरगच्छीय जिनचंद्रसूरिके शिष्य जिनसागरसूरि द्वारा।

अलवर–अजवगढ़–दि० जैन मंदिरमें–(१) पीतलकी मूर्ति श्री धर्मनाथ सं० १५१९ श्रीमाल जाति ब्राह्मण गच्छके व्यवहारी पुन्ना भा० देड़ाके पुत्र दाहक भा० लखा, उसके पुत्र नरसिंह और सीहाने विमलसूरिके उपदेशसे। (२) पीतलकी मूर्ति श्री पार्श्वनाथ सं० १५५९ श्रष्ठी गोविन्द स्त्री हिरदेने मूलसंघ जिनप्रभसूरि भ०के शिष्य विजयकीर्ति गुरुके उपदेशसे। (३) एक पाषाणमूर्तिपर सं०

१८२६ संगही नंदलाल द्वारा जैपुरके सवाई पृथ्वीसिंहके राज्यमें सवाई माधोपुरके भ० सुरेन्द्रकीर्तिके उपदेशसे।

सन् १९२०—

अजमेर पुष्करसे—एक दि० जैन मूर्ति मस्तकरहित मिली सं० ११९९ प्रतिष्ठित आचार्य गोतानंदीके शिष्य गुणचंद्र पंडित द्वारा। नीचेके लेख जाने गए—

अलवरराज्यमें—(१) नौगमा—तहसील रामगढ़—दि० जैन मंदिरमें कायोत्सर्ग अनंतनाथके आसनपर सं० ११७९ आचार्य विजयकीर्तिके शिष्य नरेन्द्रकीर्ति द्वारा।

(२) सुन्दाना—जैन मंदिरमें एक पाषाण मूर्तिपर सं० १३४८ मूलसंघ लम्बलम्बकान्वय (लमेचू) मंतराज भा० अंजड़के पुत्र लाखन द्वारा।

(३) खेड़ा—जैन मंदिरमें पीतलकी मूर्ति २४ तीर्थंकरकी सं० १४७९ वाघोरी ग्राममें साह देहल्ह (भा० कोहला और पीरी) पुत्र जिनदासने सहसकीर्तिदेव और पंडित लक्ष्मीधर द्वारा।

(४) नौगमा—दि० जैन मंदिरमें एक पाषाण मूर्तिपर सं० १५०९ भ० काष्ठासंघी माथुरान्वय पुष्करगण क्षेमकीर्ति हेमकीर्ति और कमलकीर्ति।

(५) मौजीपुर—श्वे० जैन मंदिरमें पीतलकी मूर्ति सुमतिनाथ सं० १५२९। ओसवाल जाति स्वयंभ गोत्र साहसाला भा० गांगी, साह मोहता भा० गली सा० गोल्हा भा० खेतू और उनके पुत्र धानाने बड़ागच्छके गुणचंद्रसूरिके शिष्य विनयप्रभसूरि द्वारा।

(६) खेड़ा—जैन मंदिरकी एक पाषाण मूर्तिपर सं० १९३१. मूलसंघ सरस्वतीगच्छ महाराज कीर्तिसिंहदेव।

(७) नौगमा—श्री अनंतनाथके दि० जैन मंदिरमें सं. १९४९ साहिलवाल जातिके साहवलिय, मूलसंघ कुंद० भ० पद्मनंदिदेवके शिष्य भ० शुभचंद्रदेवके शिष्य मंडलाचार्य धर्मकीर्ति द्वारा।

(८) नौगमा—वहीं एक पाषाण मूर्तिपर सं० १९४८ भ० जिनचंद्र मूलसंघ, जीवराज पापड़ीवाल।

(९) लक्ष्मणगढ़—जैन मंदिरमें पीतलकी मूर्ति पार्श्वनाथ सं० १९९९ साहसंग्राम भा० कनकारदे पुत्र साह लहुआ स्त्री पूंगीने, मूलसंघ भ० शुभचंद्रदेव द्वारा।

(१०) अलवर शहर—एक पाषाण जो अब एक ठाकुरके घरमें है पहले जैन मंदिरकी भीतपर था। यह लिखता है कि अलवरमें श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर योगिनीपुर (दिहली)के हीरानंदने जो सं० १६८९में अंगलपुर (आगरा) में रहते थे, ओसवालवंशीय बृहत् खरतरगच्छके जिनचंद्रसूरिके शिष्य वस्वकरंगकलश द्वारा बनवाया।

(११) मौजीपुर—श्वे० जैन मंदिरमें सीतलनाथकी पाषाण मूर्तिपर—सं० १६९४ हाड़ोयावासी हूमड़ जाति उत्तरेश्वर गोत्र मिहता साधारणके पुत्र लाला और गलाने, मूलसंघ कुंद० सर० गच्छ बलात्कारगण भट्टारक चांदिभूषण गुरुद्वारा।

(१२) लक्ष्मणगढ़—दि० जैन मंदिर—पाषाण मूर्ति सं० १६६० खंडेलवाल साह गोत्र छाजूके पुत्र सारणमलके पुत्र गूजरने मूलसंघ नंद्याम्नाय भ० चंद्रकीर्ति द्वारा।

(१३) लक्ष्मणगढ़–रिषभनाथके दि० जैन मंदिरमें श्री कुन्थनाथकी पीतलकी मूर्तिपर सं० १७००, जोधपुरके बृहत् उकेसा जातीय शाह लक्ष्मणक और जिनदास, अक्षयराज, तपागच्छीय, भ० विजयसिंहसूरि और विजयदेवसूरिकी आज्ञासे उपाध्याय धर्मचंद्रने।

सिरोहीराज्य–सिरोही–(१) चौमुखजीके जैन मंदिरकी भीत-पर–आदिनाथजीकी मूर्ति सं० १६३४ सीपा भा० सरूपदे और पुत्र असपाल आदिने तपागच्छके हीरविजयसूरि और विजयसेनसूरि।

(२) उसी मंदिरमें जैन मूर्ति सं० १७२१ सिरोहीके महा-राज श्री अक्षयराज राज्ये प्राग्वाद जातिकी वृद्ध शाषाके गुणराजके पुत्र वीरपाल द्वारा।

सन् १९२१ नीचे प्रमाण मूर्तियें आदि मिलीं–

(१) अजमेर–चार जैन मूर्तियोंका एक स्तम्भ, हर्स्वैंड मेमो-रियल हाईस्कूलके निकट एक कूएमेंसे चिन्ह पद्मका है सं. ११३७।

(२) धारके वधनोर–ग्राममें जैन मूर्तिका आसन सं० १२१६ लाड़ बागड़ संघके आचार्य कुमारसेन।

(३) जैपुर–में शहरसे ३ मील पूरणघाटपर बालाजी हनू-मान मंदिरके पास–शिवमंदिरके आलेपर एक विनामितीका लेख। यह वास्तवमें जैन मंदिरका है उसको तोड़कर यह मंडप बनाया गया है। इसपर लेख है जिन नाभि श्रावक पुष्कर जाति, पंडित निष्कलंकसेन् यह १२ वीं शताब्दीका मालूम होता है।

सन् १९२२—

नीचेके लेख जाने गए।

सिरोही राज्य–सिरोही–(१) शांतिनाथस्वामीके मंदिरमें पीतलकी मूर्ति पार्श्वनाथ सं० ११३५ सेजहाके पुत्र साहऊका।

(२) उसी मंदिरमें पीतल मूर्ति नेमिनाथ २४ जिनसहित सं० १५२२ साधु केल्हा उकेसाजाति बापना गोत्र, कक्कसूरिद्वारा।

(३) वहीं धर्मनाथकी पीतल मूर्ति सं० १५२४ वर्षे माघ वदी ६ भौमे उकेशवंशे बलाही गोत्रे सा० जेसा भार्या नीरू वि० देयू पुत्र साहजीवड़श्रावके सा० भा० जइतलदे परिवार युतेन श्री धर्मनाथ विवका० प्र० श्री खरतर गच्छेश श्री जिनचन्द्रसूरिभिः।

नोट—इस लेखके ऊपर रायबहादुर पंडित गौरीशंकर ओझाजीका नोट है कि ओसवाल जातिमें बलाही गोत्र प्रगट करता है कि आजकल भी मिलनेवाली अस्पृश्य बलाही जातिको जैनी बनाकर बलाही गोत्र स्थापित किया गया होगा। उनका अनुमान है कि ओसानगरके सब निवासियोंको जैनी बनाकर ओसवाल वंश स्थापित किया गया।

परतापगढ़ राज्य—गुमानजीका जैन मंदिर—(१) पीतल मूर्ति श्री रिषभदेव सं० १३६३ रत्नपुरावासी रानी भा० रत्नादेवी पुत्र तेजाक और उसके पुत्र विजयसिंहने अपनी माता जयतलदेवीके हितार्थ बृहद् गच्छीयसूरि द्वारा।

(२) वहीं पीतल मूर्ति सं० १४६२ धर्मनाथ, हूमड़ जेसाने हुमड़ गच्छके सर्वानन्दसूरिके शिष्य सिंहदत्तसूरि द्वारा।

(३) वहीं शांतिनाथकी पीतलकी मूर्ति सं० १४६४ पारीक्षक बजेसी भा० रानीके पुत्र हूमड़ लिम्बाकने मूलसंघीसूरि द्वारा।

(४) परतापगढ़ नया जैन मंदिर—पीतल मूर्ति सं. १३७३ गांधीकड़ा भा० तेझी।

(५) वहीं—पद्मप्रभुकी पीतलमूर्ति सं० १५११, संघपति महिपाल श्रीमालिकी भार्या श्राविका अमीने सुरेश्वरसूरि द्वारा।

(६) परतापगढ़ देवलिया-श्वे० जैन मंदिरमें पार्श्वनाथकी पीतलकी मूर्ति सं० १३७३ ढंढलेश्वरावटकू नगरके श्रीमाल ठाकुर खेताकने अजितदेवसूरि द्वारा

(७) वहीं-शांतिनाथकी पीतलकी मूर्ति सं० १३९३ प्राग्वाट (पोडवाड़) ज्ञातिके व्यवहारी आल्हा भा० सुमलदेवीने।

(८) वहीं—शांतिनाथ मूर्ति सं० १३९४ वदालम्बी नगरके श्रीमाल प्रभाकने।

(९) वहीं—मूर्ति पार्श्वनाथ सं० १४९२ श्रेष्ठी करमसिंहे पंचतीर्थके पुत्र जैताकने साधु पूज्य पसचन्द्रसूरि।

(१०) वहीं—पीतलमूर्ति पार्श्व० सं० १४७९ हूमड़ श्रेष्ठी गोइन्दा भा० गौरादेवी तपागच्छ सोमसुन्दर सूरि।

(११) वहीं—पीतल मूर्ति विमलनाथ सं० १४८३श्रीमाल ठाकुर सादाके पुत्र वेला, वरिया, मेड़ाने नागेंद्रगच्छके पदमसुरिद्वारा।

(१२) वहीं—सीतलनाथकी पीतलमूर्ति सं० १५०९ हूमड़ ठाकुर तेजाने मूलसंघ भ० सकलकीर्तिद्वारा।

(१३) वहीं—पीतल मूर्ति पद्मप्रभु सं० १५१८ श्रेष्ठी साभाके पुत्र गड़कने प्राग्वाद जाति, तपागच्छ पंथौली ग्रामके लक्ष्मीसागर सुरिद्वारा।

(१४) वहीं-पीतल मूर्ति आदिनाथ पंचकल्याणी सं०१५२१ हूमड़ श्रेष्ठी नासल मूलसंघी भ० सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति।

(१५) परतापगढ़-साधवारा मंदिर-पीतल मूर्ति २४ जिन सं० १४४६ व्यवहारी गंगाने पीपलगच्छके गुणरत्नसूरि द्वारा।

(१६) परतापढ़-झांसदी-रिषभदेवका दि० जैन मंदिर,

आदिनाथकी मूर्ति सं० १५२१ हूमड़ ऊंटी पात्रा मूलसंघ भुव-नकीर्तिदेव—

सन् १९२३—

नीचे लिखे लेख जाने गए।

चित्तोड़—(१) गंभीरी नदीके पास एक पुलकी मिहराबमें पत्थर लगा है—यह लिखता है कि चित्रकूट महादुर्गकी पहाड़ीके नीचे तलहटिकामें श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर बनाया गया सं० १३२४में मेवाड़के महाराज तेजसिंहदेवके राज्यमें—चैत्रगच्छी हेमचंद्रसूरि द्वारा।

(२) वहीं पर है—उसी जैन मंदिरके सम्बन्धमें गुहिलराना समरसिंहके समयमें जयतल्लदेवीने भूमिदान की। भर्तृपुरिय गच्छ साध्वी सुमला द्वारा।

(३) चित्तौरगढ़का एक शिलालेख उदयपुरके म्यूजियममें है। यह जैन मंदिरमें था—सं० १३३५—स्थान पार्श्वनाथजीका मंदिर चित्रकूटपर मेड़पाठ (मेवाड़) के राजा तेजसिंहकी रानी जयतल्लादे-वीने बनवाया व महाराजकुल समरसिंहदेव (गुहिलपुत्र) ने प्रद्यु-म्नसूरिको मठके लिये मंदिरके पश्चिम भूमि दान की।

(४) चित्तौरगढ़—चौगुखाके पास जैन मंदिर—जैन मूर्तिका आसन सं० १५४३ चित्रकूट राज्य श्री राजमल्ल राजेन्द्रके समयमें संघने स्थापित खरतरगच्छके जिनचंद्रसूरि द्वारा।

(५) महरौली—दिहलीके पास कुतुबमीनारके पास एक पाषाणपर सं० १५२३ सुल्तान बहलोल लोदी राज्ये, सिवालस जाति जालगढ़ वंशके श्रावक योगिनीपुर (दिहली) वासी इन्द्रारणमल

भा० सती। यह चौधरी पिथौराके पोते थे जो चौधरी वनवीरके पोते व चौधरी रूपचन्दके पुत्र थे।

सन् १९२४–

नीचे लिखे लेख जाने गए।

(१) सिरोहीराज्य नांदिया–एक वापीपर सं० ११३० जिसको नंदयक चैत्यके द्वारके निकट शिवगणने बनाई।

(२) वहीं–एक जैन मंदिरका स्तम्भ सं० १२९८ इसे राठोड़ पूर्णसिंहके पुत्र कमनके पुत्र भीमने बनाया।

(३) सिरोही–वसंतगढ़–जैन मंदिरकी एक जैन मूर्तिपर सं० १५०७ राणा कुम्भकरण राज्ये, वसंतपुर चैत्य मंदिर बनाया शांतिके पुत्र भादाकने--मुनि सुन्दरसूरि द्वारा।

(४) उदयपुर दिलवाड़ा–एक जैन मठमें खुला पाषाण सं० १४९१में राणा कुम्भकरण मेवाड़ने धर्मचिंतामणि मंदिरको दान किया।

अजमेर मड़वाड़ा गजटियर सन् १९०४ व अजमेर इतिहास सन् १९११से विशेष यह विदित हुआ कि अजयपालका पुत्र अणा था। इसका लेख सन् ११५० का मिला है। इसने अजमेरमें अनासागर सरोवर बनवाया। इसपर संगमर्मरका चबूतरा बादशाह शाहजहांने बनवाया था। अणाका पुत्र विग्रहराज तृ०या विशालदेव था, यह बहुत प्रसिद्ध हुआ है। इसने तूआर लोगोंसे दिहली लेलिया व सन् ११६३ में विशाल सागर बनवाया। इसीका भतीजा प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराज था।

अढाई दिनके झोपड़ेके सम्बन्धमें कर्नेल टॉडने लिखा है कि यह जैन मंदिर था। (नोट—यहां जैन मंदिर हो सक्ता है क्योंकि सन् १९१९के राजपूताना म्यूज़ियम अजमेरकी रिपोर्टमें यहां एक जैन मूर्तिका मस्तक मिला था ऐसा लेख है) जो ढाई दिनमें बनवाया गया था। यहां २२९ वर्गफुटमें एक कालेज था, इसे विशाल्देवने सन् ११५३में बनवाया था। यहां संस्कृतके शिलालेख मिले हैं।

एकमें है "श्रीविग्रहराजदेवेन कारितमायतनमिदं" चार लेखोंमें संस्कृत और प्राकृतके दो प्राचीन नाटकोंके अंश हैं।

(१) ललितविग्रहराज नाटक सोमदेव महाकविकृत।

(२) हरकेली नाटक विग्रहराज कृत।

एक लेखमें चौहान वंशकी प्रशस्ति है।

अजमेरसे ७ मील पुष्कर बहुत प्राचीन स्थान है। यहां ग्रीक, क्षत्रप व गुप्तोंके सिक्के सन् ई०से चौथी शताब्दी पूर्वके मिले हैं। नासिकके पांडु लेना लेखके अनुसार उषभदत्त यहां आया था। उसने बानस नदीपर घाट बनवाया। दूसरी या तीसरी शताब्दीमें पुष्करमें जो पुराना लेख मिला है वह सन् ९२५ का राजा दुर्गराजका है।

दिगम्बर जैन डायरेक्टरी (मुद्रित सन् १९१४) से

अवशेष वर्णन–

मध्यप्रदेश, मध्यभारत, राजपूताना।

आहार–ओरछा रियासत, टीकमगढ़से पूर्व १९ मील तीन दि० जैन मंदिर हैं। मुख्यमूर्ति श्री शांतिनाथजीकी २१ फुट खड्गासन है। लेख सं० १२३७ राजा देवपाल रत्नपाल, आचार्य श्रुतसागर, पद्मभास्कर शुद्धकीर्ति आदि।

कुंडलपुर–जि० दमोह–मुख्य मंदिरमें पर्वतपर श्री महावीर-स्वामीकी मूर्ति है। यह ४॥ गज ऊंची पद्मासन बहुत प्राचीन है। इस मंदिरके द्वारपर एक पत्थरमें इस मंदिरके जीर्णोद्धारका लेख है, संस्कृत भाषामें है जो पूरा सार्थ डायरेक्टरीमें दिया हुआ है। भाव यह है सं० १७५७ में मूलसंघ ब० गणे सरस्वती गच्छे कुंद० यशकीर्ति महामुनि, फिर ललितादिकीर्ति, फिर धर्मकीर्ति रामपुराणके कर्ता फिर भानुकीर्ति फिर पद्मकीर्ति फिर सुरेन्द्रकीर्ति उसके शिष्य ब्र० नेमिसागरके उपदेशसे जिनधर्म महिमामें रतदेव-गुरुशास्त्र पूजनमें तत्पर महाराजा श्री छत्रसालके राज्यमें।

क्षेत्र कुंडनपुर–जि० अमरावती–आर्वीसे ६ मील धामण-गांव स्टेशनसे १२ मील। यह प्राचीन कौंडिरायपुर है, यह विदर्भ (वरार)के राजा भीष्मकी राज्यधानी थी। यहांपर तीन मंदिर हैं। मध्यमें दि० जैनोंका है उसमें प्रतिमा पार्श्वनाथकी बहुत प्राचीन है। विठोवाका जो अब वैष्णव मंदिर है वह प्राचीन जैन मंदिर था जो विठोवाकी मूर्ति है वह खड्गासन नेमनाथस्वामीकी प्रतिमा है।

प्यावला–राज्य दतिया–दि० जैन मंदिरमें १२ फुट खड्-

गासन श्री शांतिनाथ व आदिनाथजीकी मूर्तिये हैं। मोंहरेमें श्री पार्श्वनाथजीकी ४॥ फुट पद्मासन प्राचीन मूर्ति है।

गंदावल ग्वालियर राज्य–सोनकच्छसे ३ कोस, प्राचीन वस्ती। दि०जैन मंदिर जीर्ण है उसमें ३०–४० खंडित प्रतिमाएं हैं। कोई कोई १९ फुट ऊंची पद्मासन हैं। प्राचीन नाम चंपावती है, यहांसे २ मील एक पर्वतपर जैन मंदिरोंके खंडहर हैं।

तालनपुर–रियासत इन्दौर कुक्सीसे ३ मील। एक दि० जैन मंदिर है, मूलनायक श्री मल्लिनाथजी ३॥ फुट पद्मासन सं० १३३९–शेष ४ प्रतिमाएं लेखरहित हैं, ये भूमिसे निकली थीं।

वैनेड़ा–इन्दोर त० देपालपुर अतिशयक्षेत्र एक दि० जैन मंदिर है। चैत्र सुदीमें मेला भरता है।

चांदखेड़ी–कोटा निजामत खानपुर–यहांसे २ मील। यहां प्राचीन मंदिर श्री आदिनाथ स्वामीका है। प्रतिमा ९ हाथ पद्मासन है। बगलमें शांतिनाथजीकी दो प्रतिमाएं ७ हाथ ऊंची हैं। मंदिरके द्वारपर मानस्तंभ १० फुट ऊंचा है उसपर लेख है–सं० १७४९ मूलसंघे भ० सुरेन्द्रकीर्तिके उपदेशसे बघेलवार टोडरमल आदि।

चौंबलेश्वर–उदयपुर रियासत पर्वतपर मंदिर श्री पार्श्वनाथ।

मक्सी पार्श्वनाथ–ग्वालियर राज्य–प्राचीन मंदिर मूलनायक पार्श्वनाथजी ढाई फुट पद्मासन। चतुर्थकालके हैं, यह अतिशयक्षेत्र है।

महोवा–यहां पठान मुहल्लेमें कुआं खोदते समय २४ दि० जैन प्रतिमाएं निकली थीं जो बांदा व ललितपुरमें विराजमान हैं उनमें श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन सं० ८२१, व पद्मप्रभु सं० ८२२ व महावीरस्वामी सं० १११४ आदि हैं।

श्रीमान् जैनधर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्र० शीतलप्रसादजीकृत—

प्राचीन जैन स्मारक ग्रन्थ।

पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजी, सरकारी गजेटियरों आदिसे खोज करके सारे भारतके प्राचीन जैन मंदिर, स्तम्भ, खंडहर, मूर्तियें व शिलालेख, ताम्रपत्र आदिका संग्रह अतीव परिश्रमसे करते रहते हैं जिससे निम्नलिखित प्राचीन जैन स्मारक ग्रन्थ तैयार होकर लागत मात्र मूल्यमें बिकते हैं जिनकी एक २ प्रति हरएक मंदिर व गृहमें मंगाकर अवश्य २ संग्रह करने योग्य है।

(१) बंगाल, बिहार, उड़ीसाके प्राचीन जैन स्मारक।
(पृ० १६० मूल्य मात्र आठ आने)

(२. संयुक्त प्रान्तके प्राचीन जैन स्मारक।
(पृ० १६० मू० मात्र छह आने)

(३) बम्बई प्रान्तके प्राचीन जैन स्मारक।
(पृ० २९२ व मूल्य मात्र बारह आने)

(४) मध्यप्रान्त, मध्यभारत व राजपूतानाके प्रा० जैनस्मारक
(पृ० २५० व मूल्य मात्र दस आने)

(५) मद्रास प्रान्तके प्राचीन जैन स्मारक। (तैयार हो रहा है)

मिलनेका पता—

मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चंदावाड़ी—सूरत।